फाँसी के तख्ते से

अनुवादक
अमृतराय

हंस प्रकाशन
इलाहाबाद

प्रकाशक

हंस प्रकाशन, इलाहाबाद

मुद्रक

पियरलेस प्रिन्टर्स इलाहाबाद

नवीन संस्करण, मई १९८५

मूल्य : पन्द्रह रुपये

प्रस्तावना

जूलियस फूचिक ने यह पुस्तक नात्सी जल्लाद के फन्दे की छाया मे लिखी थी। इसकी पाडुलिपि के रूप से ही इसके लेखक के अदम्य साहस और अनोखी सूझबूझ का प्रमाण मिल जाता है। इसकी पाडुलिपि है कागज की स्लिपें जिन पर पेन्सिल से लिखा हुआ है। बाद मे यही स्लिपें एक हमदर्द चेक सन्तरी की मदद से पाक्राट्स, प्राग, के गेस्टापो जेल से एक-एक करके चोरी-चोरी बाहर लायी गयी। फूचिक, जिसे अपने आप से छल करना कतई मंजूर नही था, जानता था कि वह इस खतरोभरी किताब को समाप्त नही कर सकेगा। लेकिन तब भी उसका यह विश्वास अपनी जगह पर बिलकुल दृढ था कि उसके अपने देश के लाखो-करोडो लोग और दूसरे देशो के फासिस्त-विरोधी जन जल्द ही उसकी इस पुस्तक का उसके ही शब्दो मे 'सुखद अत' लिखेगे।

जनता और उसके भविष्य मे यह विश्वास ही इस पुस्तक की मूल विषय-वस्तु है। यह सच है कि इसमें भी, जैसे कि और बहुत से युद्धकालीन जेल-साहित्य में, फासिस्त क्रूरताओ की अमिट तस्वीर दिखलायी पडती है। मगर यह तस्वीर एक ऐसे आदमी की दी हुई है जो फासिज्म का केवल शिकार ही नही है बल्कि जो उसे इतिहास के सामने मुजरिम के कठघरे मे खडा करता है, उस पर अपना फैसला देता है और नैतिक रूप मे उस पर विजय भी प्राप्त करता है। आवेश मे आकर वह कहता है ' ओह, एक दिन कैसी फसल तैयार होगी इन भयानक बीजो से ! और फूचिक के बारे मे वे शब्द इस्तेमाल किये बिना हमारा जी नही मानता जो उसने एक दूसरे साथी के लिए इस्तेमाल किये थे : वह सदा दूसरो को भविष्य की ओर इशारा करता रहा जब स्वयं उसका भविष्य सीधे मौत की ओर इशारा कर रहा था।

फूचिक को गेस्टापो ने मार डाला, लेकिन वह भविष्य जिसकी ओर वह इस पुस्तक मे इशारा करता है आज उसकी मातृभूमि चेकोस्लोवाकिया का जीवित यथार्थ है। इसमें कोई शक नही कि यह पुस्तक उस देश में युद्ध सम्बन्धी

अन्य सभी कृतियो से ज्यादा पढ़ी जाती है और फूचिक देश के महान् वीरों में गिना जाने लगा है। इस पुस्तक का अनुवाद लगभग उन सभी देशों की भाषाओ मे हो चुका है जिन्होने हिटलर को हराने मे योग दिया था, जिनमें सोवियत यूनियन, युगोस्लाविया और फ्रांस भी है। सोवियत यूनियन के बारे मे फूचिक ने बहुत प्रशंसा करते हुए एक पुस्तक कभी लिखी थी जिसका नाम था 'वह देश जहाँ आने वाला कल बीता हुआ कल हो चुका है'। वह भविष्य जिसके बारे मे वह इस पुस्तक में लिखता है, चेकोस्लोवाकिया और योरप के दूसरे जनवादी देशो मे रूप ले चुका है।

पत्रकार, साहित्य-आलोचक और कम्युनिस्ट नेता जूलियस फूचिक का जन्म २३ फरवरी १६०३ को प्राग-स्मिचोव मे हुआ था। उसका पिता लोहे के कारखाने का मजदूर और शौकिया गायक अभिनेता था। पन्द्रह-सोलह साल की उम्र से ही फूचिक ने मजदूर आन्दोलन और चेकोस्लोवाकिया के सास्कृतिक जगत मे काम करना शुरू किया। प्राग विश्वविद्यालय मे पढते समय उसने साहित्य, संगीत और कला का अध्ययन किया। मजदूर की हैसियत से अपनी रोजी कमाते हुए वह कम्युनिस्ट पार्टी मे दाखिल हुआ, समाजवादी पत्रों मे लिखना शुरू किया और जल्दी ही कम्युनिस्ट छात्र संघ के नेताओ मे गिना जाने लगा। सन् '२६ मे वह 'त्वोरबा' (रचना) का प्रधान संपादक हुआ, जो उसके नेतृत्व में एक प्रभावशाली सांस्कृतिक और राजनीतिक पत्र बन गया। कुछ ही समय बाद वह चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी के मुखपत्र 'रूद प्रावो' का संपादक हो गया।

सोवियत यूनियन की दो यात्राओ के बाद, जिसकी रिपोर्ट उसने अपने देश-वासियों को संवाददाता, वक्ता और सम्पादक की हैसियत से अलग-अलग दी, चेक प्रतिक्रियाशील शक्तियो ने फूचिक को परीशान किया और बार-बार जेल मे डाला। म्यूनिख समझौते के समय कम्युनिस्ट पत्र गैरकानूनी करार दिये गये और पार्टी को अंडरग्राउंड जाना पडा। चेकोस्लोवाकिया पर नात्सी अधिकार कायम होने के बाद फूचिक भी अंडरग्राउंड चला गया। उसने मार्क्सवादी साहित्यिक-ऐतिहासिक अध्ययन में अपने को लगा दिया और उसके साथ ही पार्टी का गैर-कानूनी हेडक्वार्टर कायम करने मे भी आगे बढकर योग दिया। अपने अन्य साथियों के सग मिलकर उसने गैरकानूनी पार्टी का केन्द्रीय मुखपत्र रूद प्रावो (वही इसका सम्पादक था) और दूसरी चीजें प्रकाशित की जिनमें हास्य और व्यंग का पत्र 'द टाइनी व्हिस्ल' (छोटी-सी सीटी) भी था।

इस पुस्तक मे फूचिक ने चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी के बारे मे, जो आज उस देश की सबसे बडी पार्टी है, गर्व और श्रद्धा के साथ लिखा

है। हिंस्र दमन के बावजूद यह पार्टी समूचे देश और चेक मजदूर श्रेणी की शक्ति का अजेय अंग सिद्ध हुई। इस पुस्तक मे हम कम्युनिस्टों को उनके असली रूप में, यानी जनता के हितों के सब से दृढ-संकल्प रक्षकों के रूप मे देखते है। इसमें हम देखते है कि समाजवाद के देश सोवियत यूनियन के संग सच्ची मैत्री किसी भी राष्ट्र को प्रतिक्रिया और फासिज्म से बचाने की पहली शर्त है। एक महान् चेक देशभक्त, और चेक मजदूर श्रेणी के एक वफादार और साहसी बेटे के रूप मे ही फूचिक सोवियत यूनियन का उल्लेख इतने प्यार और आदर के साथ करता है।

गेस्टापो ने उसे गिरफ्तार किया, यातनाएँ दी और चालीस साल की उम्र मे मार डाला। लेकिन इन पृष्ठों के रूप मे, जिनमें किसी भी तरह की कोई बनावट या अस्वाभाविकता नही है, जिनका पर्यवेक्षण इतना गहरा और पैना है, और जीवन से घनिष्ठतम प्रेम जिनकी पंक्ति-पंक्ति में बोल रहा है, फूचिक एक अमर साहित्यिक कृति छोड गया है। और एक अमर सन्देश — हमें उसका अन्तिम शब्द याद रखना चाहिए : होशियार ! उसने लिखा कि 'असली जिन्दगी मे तमाशा देखनेवाले नही होते : सब जिन्दगी मे हिस्सा लेते है।' क्या यह बात सच्चे साहित्य के बारे मे भी उतनी ही ठीक नही है जितनी की जिन्दगी के बारे में ? यह पुस्तक उस लडाई मे जो कि फ़ासिज़्म की बर्बरताओ के खिलाफ आज हर देश में लडी जा रही है, एक श्रेष्ठ योगदान है।

सैमुएल सिनेल

दो शब्द

मैने रावेन्सब्रुक के कन्सेन्ट्रेशन कैंप मे एक कैदी साथी से सुना कि मेरे पति जूलियस फूचिक को बर्लिन की एक नात्सी अदालत ने २५ अगस्त १६४३ को मौत की सजा सुना दी।

उसके बाद उनका क्या हुआ इसके बारे मे मैंने बहुत पूछताछ की लेकिन वह सब कैंप की ऊँची-ऊँची चहारदीवारियो से टकराकर गूँजकर लौट आयी।

मई १६४५ मे हिटलर जर्मनी की हार के बाद वे कैदी छूटे जिन्हे सता-सताकर एकदम मार डालने का समय फासिज्म को नही मिल पाया था। मै भी उन्ही बचे हुए लोगो में से थी।

अपने आजाद मुल्क मे लौटकर मैंने अपने पति को खोजना शुरू किया— उसी तरह जैसे हजारो लोग अपने पतियों, पत्नियो, बच्चो, माँओ और बापो को ढूँढ रहे थे जिन्हे जर्मन आक्रमणकारी यातनाएँ देने के लिए अनगिनत नरकों मे घसीट ले गये थे।

मुझे पता चला कि उन्हे ८ सितम्बर १६४३ को, सजा सुनाने के चौदहवें दिन, बर्लिन मे गोली मार दी गयी।

मुझे यह भी पता चला कि जूलियस फूचिक ने पांक्राट्स जेल, प्राग, में अपने ये नोट लिखे। वह एक चेक संतरी था, ए.कोलिस्की, जिसने उन्हे कागज और पेंसिल कोठरी मे लाकर दी और फिर लिखे हुए पन्नों को एक-एक करके, चोरी से, बाहर लाया। मैंने उस संतरी से मुलाकात की और उन नोटो को इकट्ठा किया जो मेरे पति ने पांक्राट्स जेल मे लिखे थे। नम्बर किये हुए ये पन्ने कई सच्चे और वफादार लोगो के हाथों से होकर उस जगह से आये जहाँ वे छिपाकर रखे गये थे, और अब पाठक के सामने रखे जाते है— जूलियस फूचिक के जीवन-कार्य का अन्तिम अध्याय।

—ऑगस्टिना फूचिक

अनुक्रम

□

भूमिका ... १५
चौबीस घंटे ... १६
मर रहा हूँ ... २४
कोठरी नम्बर २६७ ... ३१
नम्बर ४०० ... ३६
चित्र और रेखाएँ-१ ... ५४
मार्शल लॉ १६४२ ... ७५
चित्र और रेखाएँ-२ ... ८२
इतिहास का एक टुकड़ा ... १०५

□

फाँसी के तख्ते से

भूमिका

जब तुम अटेंशन की हालत मे बैठे हो, तुम्हारा शरीर अपना सारा लचीलापन खोकर एकदम सख्त और सीधा हो रहा हो, तुम्हारे हाथ कडाई से घुटनो को पकड़े, तुम्हारी आँखें पुराने पेचेक बैंक की इमारत के एक कमरे की पीली पडती हुई दीवार पर जमी हो—इस हालत में निश्चय ही कुछ बहुत गहरा सोच-विचार संभव नही है। मगर तुम्हारे विचारो को कौन हुक्म दे सकता है कि अटेंशन की हालत मे बैठे रहो, हिलो-डुलो मत !

यह तो कभी पता न चल सकेगा कि किसने और कब लेकिन किसी ने किसी समय पेचेक इमारत के इस हॉल को 'सिनेमा' नाम दिया था। जर्मन इसे 'घर की कैद' कहते थे लेकिन जिसने उसे 'सिनेमा' नाम दिया उसने तो कमाल ही कर दिया। इस लम्बे-चौडे हॉल मे बेंचो की छ कतारें बिछी हुई थी जिन पर उन लोगों के शरीर बिना हिले-डुले पड़े थे जिनके मामले की अभी छानबीन चल रही थी। उस वक्त जब कि वे उस हॉल में अपना धडकता हुआ दिल लिये बैठे होते थे कि अब उन्हे फिर मे बुलाया जायगा, नये सिरे से पूछताछ करने के लिए या नयी यातनाएँ पहुँचाने के लिए या सीधे मौत के घाट उतार दिये जाने के लिए, उस वक्त उनकी घूरती हुई आँखो के सामने की वह निचाट सूनी दीवार सिनेमा के पर्दे के समान हो जाती थी जिस पर वे न जाने कहाँ-कहाँ के इतने दृश्य फेंकते थे, जितने कि आज तक उतारे भी न गये होगे। किसी के पूरे जीवन का या उसके छोटे से किसी खास क्षण का छायाचित्र; किसी की माँ, पत्नी या बच्चो का छायाचित्र; किसी के टूटे-फूटे मकान या तहस-नहस जीवन का छायाचित्र। छायाचित्र बहादुर साथियो के या गद्दारी के। उस आदमी का छायाचित्र जिसे मैंने वह नात्सी-विरोधी पर्चा दिया था, उस खून का जो फिर से दौड़ने लगा है, उस हाथ का जिसने मजबूती से मेरा हाथ पकड़कर मानो कहा है कि मैं तुम्हारा दोस्त हूँ। छायाचित्र, डरावनी-डरावनी चीजो के या साहस और संकल्प के, घृणा के या प्रेम के, डर के और उम्मीद के। जिन्दगी की तरफ से पीठ फेरे हुए

हम सभी रोज अपने आपको मरते देखते थे लेकिन नयी जिन्दगी सबको नही मिली।

मैं अपनी जिन्दगी का फिल्म सौ बार देख चुका हूँ, उसकी हजारों बारीक से बारीक बातें। अब मैं उसी को कागज पर उतारने की कोशिश करूँगा। अगर मेरी कहानी खतम होने के पहले ही फाँसी का फंदा मेरा गला घोंट देता है, तब भी लाखों-करोडों लोग बच जाते हैं जो उसका 'सुखद अंत' लिखेंगे।

—जूलियस फूचिक

पहला अध्याय

चौबिस घंटे

अभी पाँच मिनट में घडी दस बजायेगी। खूबसूरत, गर्माहट लिये हुए बसंत की शाम, अप्रैल २४, १९४२।

एक अधेड़ और कुछ-कुछ लँगडाते हुए आदमी की हुलिया बनाये मैं जितना तेज चल सकता हूँ चल रहा हूँ — मैं जेलिनेक के घर पहुँचने की जल्दी मे हूँ जिसमे दस बजने के यानी कर्फ्यू के वक्त घर बंद होने के पहले ही पहुँच जाऊँ। वहाँ मेरा सहायक मिरेक मेरी बाट जोह रहा है। मैं जानता हूँ कि इस बार उसे मुझसे कोई जरूरी बात नही कहनी है, न मुझे ही उससे कोई खास बात कहनी है। लेकिन किसी से मिलना अगर तय हो चुका हो तो फिर उसमें चूक न होनी चाहिए क्योंकि उससे नाहक घबराहट फैलती है, और मुझे यह बात बिलकुल मंजूर न होगी कि मेरी वजह से मेरे शरीफ़ मेजवानों को व्यर्थ परीशान होना पड़े।

वे एक प्याली चाय से मेरा स्वागत करते है। मिरेक है — और फ्रीड दंपती भी। इसी को खतरा मोल लेना कहते है। 'कामरेड्स, मैं तुम लोगों से मिलना चाहता हूँ, लेकिन यों सब साथ नही। इतने आदमियों का इस तरह एक साथ कमरे मे होना जेल का, मौत का, सीधा रास्ता है। छिपकर काम करने के जो नियम है तुम लोगों को या तो उनका पालन करना होगा, या हम लोगों का साथ छोड़ देना होगा क्योंकि इस तरह तुम खुद अपने को और अपने साथ दूसरो को खतरे में डाल रहे हो। समझे ?'

'हाँ।'

'और तुम मेरे लिए क्या लाये हो ?'

'रेड राइट्स के पहली मई वाले अङ्क के लिए सामग्री।'

'वाह। और तुम मर्को ?'

'कोई नयी बात नही। काम ठीक से चल रहा है ... '

'अच्छा तो ठीक है। अब मैं पहली मई के बाद तुम लोगों से मिलूंगा। पहले खबर भेजूंगा। अच्छा, तो फिर विदा।'

'एक प्याली चाय और ?'

'नही-नही, मिसेज़ जेलिनेक। इस वक्त इस कमरे मे बहुत ज्यादा लोग हैं।'

'अरे एक प्याली तो ले ही लीजिए।'

प्याली में अभी जो चाय ढाली गयी उससे भाप निकल रही है।

दरवाज़े की घंटी वजती है।

इस वक्त, रात के इस पहर में? कौन हो सकता है?

आगंतुक अधीर हो रहे है। वे दरवाजा पीटते हैं।

'जल्दी खोलो! पुलिस!'

झट खिड़की में से निकल भागो। मेरे पास पिस्तौल है, मैं उन्हें रोक रक्खूंगा। मगर अब तो बहुत देर हो गयी, वक्त निकल गया। गेस्टापो के आदमी खिडकियों के नीचे खड़े है और उनकी पिस्तौलों का मुंह कमरे की तरफ है। खुफिया के लोगों ने दरवाज़ा तोड दिया है और रसोई में होते हुए घुसते चले आ रहे हैं। एक, दो, तीन ... नौ। वे मुझे देख नहीं पाते क्योंकि मैं उस दरवाज़े के पीछे हूँ जिससे वे कमरे मे दाखिल हुए। मैं आसानी से उनकी पीठ में गोली मार सकता था। मगर उनकी नौ पिस्तौलों का मुंह दो औरतों और तीन निहत्थे आदमियों की तरफ है। अगर मैं गोली चलाता हूँ तो मेरे पांच दोस्त मुझसे पहले ज़मीन पर लोटते नजर आयेंगे। अगर मैं अपने को गोली मारता हूँ तो भी पिस्तौलें चल जायेंगी और वे पांचो मारे जायेंगे। अगर मैं गोली नहीं चलाता तो वे लोग छ. महीना साल भर जेल मे बंद रहेंगे, फिर इंकलाब उन्हें छुड़ा लेगा और उनकी जान बच जायेगी। सिर्फ मिरेक और मैं *जिन्दा नही बचूंगा; वे हमें यातनाएँ देकर मार डालेंगे। मुझसे तो वह एक भी* बात नही निकाल पायेंगे, मगर मिरेक से? वह आदमी जो स्पेन मे लडा, जो दो साल तक फ्रांस के एक कंसेन्ट्रेशन कैंम्प मे रहा, जो लडाई के दौरान छुपकर फ्रास से भाग आया — नही, वह कभी कुछ नही वतावेगा। फ़ैसला करने को मेरे पास दो सेकंड है — या तीन?

अगर मैं गोली चलाता हूँ तो मैं किसी को नही बचा सकता, सिवाय अपने *आप को, यातनाओं से — लेकिन पाँच साथियो की जानें चली जायेगी।*

क्या यह बात ठीक है? हाँ।

अच्छा तो फैसला हो गया। मैं कोने से निकलकर बाहर आ जाता हूँ।

'आह! एक और!'

मेरे चेहरे पर पहला वार। किसी की जान लेने के लिए काफी था वह।

'हथियार डाल दो।'

दूसरा घूंसा, और फिर तीसरा घूंसा।

बिलकुल वही हो रहा है जिसकी मैंने कल्पना की थी।

करीने से सजा हुआ घर अब फर्नीचर और टूटी-फूटी चीजों का एक ढेर हो रहा है।

और भी लात और घूंसे ।

'मार्च ।'

वे मुझे घसीटकर एक मोटर में ले जाते हैं । पूरे वक्त पिस्तौलों का मुंह मेरी तरफ है । मोटर में ही वह मुझसे सवाल करना शुरू करते हैं ।

'तुम कौन हो ?'

'प्रोफेसर होराक ।'

'तुम झूठ बोलते हो ।'

जवाब में मैं अपने कंधे उचकाता हूँ ।

'हिलो-डुलो मत वर्ना हम गोली मार देंगे ।'

'मारो भी !'

गोली न मारकर वे मुझे घूंसा मारते हैं ।

हमारे पास से एक गाड़ी गुजरती है । मुझे ऐसा लगता है मानो उसे सफेद चादर ओढ़ा दी गयी हो । शादी की गाडी — रात को ? मुझे जरूर बुखार होगा ।

पेचेक बिल्डिग, गेस्टापो का हेडक्वार्टर । मैंने कभी न सोचा था कि मैं इसमें ज़िन्दा दाखिल हूँगा । वे मुझे उसकी चौथी मंजिल तक दौड़ाकर ले जाते हैं । अहा, यही वह मशहूर २ – अ विभाग है — कम्युनिस्ट-विरोधी जाँच-पड़ताल का सदर दफ्तर । मुझे बड़ा कुतूहल होता है ।

एक लंबा-सा, दुबला-पतला कमीसार, जो मुझे गिरफ्तार करनेवाली टुकड़ी का नायक था, रिवाल्वर अपनी जेब मे रखता है और मुझे अपने दफ्तर में ले जाता है । वह मेरी सिगरेट को माचिस दिखाता है ।

'तुम कौन हो ?'

'प्रोफेसर होराक ।'

'तुम झूठ बोलते हो ।'

उसकी कलाई पर जो घड़ी बँधी है उसमें ग्यारह बजा है ।

'इसकी तलाशी लो ।'

वे मुझे नंगा करते हैं और मेरी तलाशी लेते हैं

'इसके पास शिनाख़्त का एक कार्ड है

'नाम ?'

'प्रोफेसर होराक ।'

'इसका झूठ-सच पता लगाओ ।'

वे टेलीफोन करते हैं ।

'हम ठीक ही कहते थे, यह नाम दर्ज नहीं है । कार्ड जाली है ।'

'किसने तुमको यह कार्ड दिया ?'

'पुलिस हेडक्वार्टर ने।'

डंडे की पहली चोट। फिर दूसरी फिर तीसरी — गिनना जरूरी है क्या? हाँ भाई, इन आंकडों की रिपोर्ट लिखाने की कोई जगह नही है।

'तुम्हारा नाम? बोलो। तुम्हारा पता? बोलो। किन-किन लोगों से तुम्हारा सपर्क था, उनके पते? बोलो। बोलो। बोलो, वर्ना हम तुम्हारी कुटम्मस करेंगे।'

आखिर कोई कितनी मार सह सकता है?

रेडियो के सिगनल से पता चलता है कि आधी रात हो गयी। अब कैफे बंद हो रहे होगे और आखिरी लोग अपने घर जा रहे होगे। प्रेमी-प्रेमिका दरवाजे के सामने खडे है, एक दूसरे मे बिदा लेना उनके लिए कठिन हो रहा है। लम्बा-सा, दुबला-पतला कमीसार चेखुश, मुस्कराता हुआ कमरे में आता है।

'सब कुछ ठीकठाक है, जनाब सम्पादक जी?'

यह इसको किसने बतलाया? जेलिनेक दंपती ने? फ्रीड दंपती ने? क्यों, उन्हे तो मेरा नाम भी नही मालूम।

'देखो, हमें सारी बातें मालूम हो गयी है। हमसे कुछ छिपाओ मत। पागल न बनो। अकल से काम लो।'

उनके खास कोश में अकल से काम लेने का मतलब गद्दारी करना होता है।

मैं अकल से काम नही लूंगा।

'इसे बांधकर जरा और लगाओ।'

एक बजा। सडक पर की आखिरी गाड़ियां गराजो मे बंद हो रही हैं, सडकें खाली हैं, रेडियो अपने आखिरी रसिक सुननेवालो को रात का अभिवादन जनाता है।

'केन्द्रीय समिति का सदस्य और कौन है? तुम्हारे ट्रांसमिटर[1] कहां है? तुम्हारा प्रेस कहां है? बोलो! बोलो! बोलो!'

अब मैं फिर अपने ऊपर पडनेवाले घूंसे गिन सकता हूँ। मुझे अब अगर कहीं दर्द महसूस होता है तो होंठो में जिन्हे मैं चबाता रहा हूँ।

'इसके जूते निकालो।'

यह सच है मेरे पैरो को अभी मार-मारकर बेजान नही बनाया गया है। मुझे ऐसा लगता है। पांच छ सात, जैसे वह डण्डा हर बार मेरे दिमाग तक दौड जाता हो।

दो बजा। प्राग सो रहा है। कही एक बच्चा हलके से रोयेगा, एक आदमी अपनी बीबी के कूल्हे थपथपायेगा।

---

१. बेतार से खबर भेजने का यन्त्र।

'बोलो ! बोलो !'

मेरी जीभ लहूलुहान होंठो पर दौड जाती है और गिनने की कोशिश करती है कि कितने दाँत गिर गये । मैं नही गिन पाता । बारह, पंद्रह, सत्रह ? नही वह तो उन कमीसारो की संख्या है जिनके सामने मेरी 'पेशी' हो रही है। कुछ के चेहरों पर तो थकान लिखी हुई । लेकिन फिर भी मौत क्यो नही आती।

तीन बजा । चौगिर्द की बस्तियो से सुबह शहर में दाखिल हो रही है । तरकारी-भाजीवाले अपनी गाडियाँ चलाते बाजार की तरफ जा रहे है, सडक की सफाई करनेवाले अपने काम में लग गये है । शायद एक दिन और मैं पौ फटते देख सकूँगा ।

वह मेरी पत्नी को अन्दर लाते है ।

'तुम इसको जानती हो ?'

मैं अपने मुँह के आस-पास का खून घोंट जाता हूँ, जिससे वह उसे देख न सके ... लेकिन मैं भी कैसा गधा हूँ, उससे क्या होगा, खून तो मेरे चेहरे के रेशे-रेशे से और मेरी उँगलियो से बह रहा है ।

'तुम इसको जानती हो ?'

'नही, मैं नही जानती ।'

उसने इस तरह से यह बात कही कि उसकी निगाह तक न चूकी कि कोई भाँप जाता कि उसके दिल पर क्या गुजर रही है। खरा सोना है वह। उसने हम लोगो की यह शपथ पूरी की कि वह मुझको किसी हालत में पहचानेगी नही, गो अब उससे होता क्या है । इन लोगों को मेरा नाम किसने बतलाया ?

वे उसे ले गये । मैंने बहुत खुश-खुश निगाहो से (जितना कि मुमकिन था) उसको विदा किया। शायद मेरी निगाहे खुश न थी । मैं नही जानता ।

चार बजा। सुबह हो रही है या नही ? अँधेरी खिड़कियाँ मुझे कोई जवाब नही देती । और मौत के आने में देर हो रही है। क्या मैं खुद आगे बढ़कर उससे मिलूँ ? कैसे ?

मैं पलटकर किसी को मारता हूँ और फर्श पर गिर पड़ता हूँ । वे मुझे ठोकर मारते है। बूटों से मुझे रौदते है। यह ठीक है, अब जल्दी ही अंत हो जायेगा । काला-काला कमीसार खड़ा-खड़ा मेरी दाढ़ी खीचकर मुझे उठाता है और जो मुट्ठी भर बाल उसके हाथ में आ जाते है उन्हें मुझको दिखलाकर शैतान की हँसी हँसता है । मुझे सचमुच अब इस पर हँसी-सी आती है, अब मुझे दर्द का एहसास नही होता ।

पाँच बजा । छ...सात...दस। फिर दोपहर हुई, कारीगर अब अपनी बेचों पर होगे, बच्चे स्कूल मे । दूकानो में चीजों की खरीद-फरोख्त चल रही है घर पर लोगो को दोपहर का खाना मिल रहा है । मेरी माँ शायद इस

मेरे ही बारे में सोच रही है। मेरे साथी शायद जान गये हैं कि मैं पकड़ा गया और अब इस बात के इन्तजाम में लगे हैं कि खुद भी न पकड़ जायें ... अगर मैं सब बातें उगल दूँ तो क्या हो ... नही, ऐसा नही होगा, तुम मुझपर भरोसा रक्खो। खैर जो भी हो, अब अन्त दूर नही है। यह सब रात का एक बुरा सपना है, बुखार की हालत में देखा गया एक भयानक खराब सपना। हर तरफ से मुझ पर लात-घूँसे बरसते है फिर वे मुझ पर पानी डालते हैं मुझे होश में लाने के लिए। फिर मार और चीखें 'बोलो! बोलो! बोलो!' मगर इतने पर भी मेरी मौत नहीं आती। माँ, बाबू, तुमने मुझे इतना मजबूत क्यों बनाया कि मैं यह सब भी सह सकूँ?

तीसरा पहर। पांच बजा। वे सब बुरी तरह थक गये हैं। अब उनके वार धीरे-धीरे हो रहे हैं, काफी रुक-रुक कर, मगर फिर भी वे अपना सिलसिला टूटने नही देते क्योकि वे बुरी तरह थक गये है और उनकी समझ में नही आता कि और क्या करें। अचानक दूर से, न जाने कितनी दूर से एक शांत गंभीर आवाज आती है जो मुझे थपकी की तरह भली जान पड़ती है:

'उसकी काफी मरम्मत हो चुकी।'

उसके कुछ देर बाद मैं एक मेज से टिककर बैठा हुआ था जो बार-बार मुझसे अलग हो जाती थी और फिर-फिर मेरे पास लौट आती थी। कोई अंदर आया और उसने मुझे पानी दिया। किसी ने मुझे एक सिगरेट दिया, जिसे मैं नही उठा सका। फिर किसी ने मुझको मेरी जूतियाँ पहनाने की कोशिश की मगर फिर कहा, मुझसे नही बनता। फिर उन्होने मुझे कुछ चलाकर और कुछ उठाकर सीढ़ी से नीचे उतारा और मोटर में बिठाला। मोटर चली तो एक आदमी ने अपनी पिस्तौल का निशाना मेरी तरफ कर दिया। यह मुझे हँसी की बात मालूम हुई, मेरी उस हालत में। हम एक टैक्सी के पास से गुजरे, जो सफेद फूलों से ढँकी हुई थी, शादी की गाड़ी थी वह — मगर हो सकता है यह सिर्फ एक सपना हो। या सपना या बुखार या मरना या खुद मौत। मगर मरना मुशकिल है और यह आसान — मुशकिल न आसान। यह सेमर के फूल की तरह हल्का है — जरा सा फूँक दो तो सब उड़ जायेगा।

सब? नही, अभी नही। अब मैं फिर खड़ा हूँ, सचमुच खड़ा हूँ, अकेला, बिना किसी सहारे के। अभी-अभी मेरा चेहरा एक गन्दी पीली दीवार के समान हो जायगा जिस पर छीटे हैं ... काहे के? खून के, ऐसा लगता है। हाँ, यह खून है। मैं उँगली उठाकर उसे खून में डुबोता हूँ ... हाँ यह ताजा खून है ... मेरा खून ...

पीछे से कोई मेरे सिर पर मारता है और मुझे हाथ ऊपर करने और घुटने मोड़कर बैठने का हुक्म देता है। नीचे — ऊपर — नीचे।

तीसरी बार मैं गिर पड़ता हूँ ...

एक लम्बा-सा नात्सी सिपाही जो वहीं मेरे सिर पर खड़ा है मुझे उठाने के लिए मुझको ठोकर मारता है। अब मुझे ठोकर मारना बिलकुल बेकार है। कोई और आदमी मेरा मुंह धुला देता है। मैं मेज से लगा बैठा हूँ। एक औरत मुझे कोई दवा देती है और पूछती है कि मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ कहाँ होती है। मैं कहता हूँ कि सारा दर्द मेरे दिल में है।

'दिल तुम्हारे है भी?' वह लम्बा नात्सी सिपाही कहता है।

'क्यों नहीं, जरूर,' मैं कहता हूँ और मुझे अपने ऊपर गर्व होता है कि अभी मुझमें इतनी ताकत है कि अपने दिल की इज्जत बचाने के लिए लड सकूं।

फिर सब कुछ गायब हो जाता है — दीवार, दवा लिये औरत और वह लम्बा नात्सी सिपाही।

मैं फिर जब होश में आता हूँ तब एक कोठरी का दरवाजा मेरे सामने खुलता है। एक मोटा-सा नात्सी सिपाही मुझे अन्दर खीच लेता है, मेरी तार-तार हो रही कमीज को जल्दी से उतारता है, मुझे एक पुआल के गद्दे पर लिटाता है। वह मेरी सूजी हुई देह पर हाथ फेरता है और पट्टियाँ मँगाता है।

सिर हिलाते हुए वह पास ही खड़े एक दूसरे आदमी को लक्ष्य करके कहता है, 'जरा देखो, कैसा पक्का काम करते हैं सब!'

फिर कहीं दूर, बहुत दूर से वह शान्त गम्भीर आवाज सुनायी देती है जो मुझे एक थपकी की तरह सहानुभूतिशील जान पड़ती है।

'अब सुबह तक इसका बचना मुश्किल है।'

पाँच मिनट मे दस का घंटा बजेगा। वसन्त की एक प्यारी-प्यारी सुहावनी गर्म शाम। अप्रैल २५, १९४२।

□

दूसरा अध्याय

मर रहा हूँ

जब कि सूरज की गर्मी और तारों की रोशनी
हमारे लिए
नहीं रह जाती ... नहीं रह जाती ।

गिरजाघर के नीचे के एक तहखाने में जो कब्रों के लिए है और जिसके चारो ओर सफेद दीवार है, दो आदमी, जिनके हाथ नीचे को प्रार्थना की मुद्रा मे जुड़े हुए है, एक के पीछे एक, गोल-गोल चक्कर काट रहे हैं । उनके नौसिखुए गलों से दफन के वक्त का गाना लँगड़ाता-घिसटता निकल रहा है ।

कैसे मजे में रूह परवाज़ करती है
वहाँ जन्नत को जन्नत को ......

कोई मर गया है । कौन ? मैं ताबूत की ओर लाश को एक नजर देखने के लिए अपना सिर घुमाने की कोशिश करता हूँ — दो मोमबत्तियाँ उसके सिर के पास से ऊपर को उठी हुई हैं ।

मैं आँखें उठाकर इधर-उधर घुमाता हूँ । यहाँ और कोई नही है । इन दो आदमियों और अपने आप को छोड़कर यहाँ मैं और किसी को नही देखता । यह लोग किसका मातम कर रहे हैं ?

जहाँ वह सितारये अबदी चमकता रहता है
ईसा मसीह, ईसा मसीह ।

किसी को दफन किया जा रहा है । बिलकुल वही चीज मालूम होती है, मगर किसको ? देखें यहाँ पर कौन-कौन है — सिर्फ वो दो आदमी और मैं । और मैं ! तो क्या यह मुझे दफनाया जा रहा है ? लेकिन सुनो, भाई, जरूर कही कोई गलती है । मैं मरा नहीं हूँ । मैं अभी जिन्दा हूँ । तुमको दिखायी नही देता कि मैं तुम्हे देख रहा हूँ, तुमसे बात कर रहा हूँ ? ठहरो, मुझे अभी से मत कब्र मे गाड दो ।

...जब कोई हमसे आखिरी अलविदा कहता है,
आखिरी अलविदा...

वे मेरी बात नही सुनते । क्या वे बहरे हैं ? मैं क्या काफी जोर से नही बोल

रहा हूँ ? या कही मैं सचमुच मर तो नही गया और इसीलिए वे एक अशरीरी स्वर न सुन पाते हों ? क्या मेरा शरीर यहाँ इसी तरह मुँह के बल पडा रहेगा और मैं अपने को ही दफन होते देखूँगा ? कैसी मजाक की बात है।

वह अपनी उम्मीद से भरी आँखें लगाता है
जन्नत पर जन्नत पर...

अब मुझे याद आया। किसी ने मुझे उठाने और कपड़े पहनाने के लिए जोर लगाया। फिर वह मुझे जनाज़े की चादर पर ले चले, उनके कीलदार बूटों की आवाज से दालान गूँज रहा था और फिर ... बस। मुझे और कुछ याद नही।

जहाँ की रोशनी कभी बुझती नही।

मगर यह कैसी पागलपन की बात है। मैं अभी जिन्दा हूँ। मुझे कही दर्द मालूम होता है, दूर कहीं, और प्यास। मुर्दों को प्यास नही लगती। मैं अपना सारा जोर लगा कर हाथ हिलाने की कोशिश करता हूँ और एक अजब अप्राकृतिक-सी आवाज मेरे मुँह से निकल जाती है :

'पानी !'

आखिरकार ! उन दोनों आदमियो ने मेरे गिर्द चक्कर लगाना बन्द किया। अब वे मुझ पर झुके, उनमे से एक ने मेरा सिर उठाया और पानी की सुराही मेरे मुँह से लगा दी। 'भाई, तुमको कुछ खाना भी चाहिए। दो दिन से तुम सिर्फ पानी पर हो।'

वह मुझसे यह क्या कह रहा है ? दो दिन हो गये, अभी से ? आज कौन दिन है ?

'सोमवार।'

सोमवार ! और शुक्र को मैं पकड़ा गया था। ओह, मेरा सिर कितना भारी हो रहा है। और पानी इतना ठंडा है। नीद। सो न जाऊँ। एक बूँद ने सोते की सतह पर थरथरी ला दी है। उन पहाड़ों के बीच उस चरागाह का वह सोता। मैं उस जगह को खूब अच्छी तरह जानता हूँ, रोकलान पहाड़ के नीचे, जंगलात के अफसर के मकान के पास, वही एक हलकी-सी मगर कभी खत्म न होने वाली फुहार चीड़ की सुईनुमा पत्तियो मे गाना-सा गाती है। ... सोने मे कैसा मजा आता है। ... और फिर जब मेरी आँख खुली तो वह मंगल की शाम थी और मुझ पर एक कुत्ता झुका हुआ था। एक भेड़िया-नुमा कुत्ता। वह अपनी प्यारी-प्यारी समझदार आँखो से मुझे बहुत गौर से देखता है और पूछता है :

'तुम कहाँ रहे ?'

अरे नही, यह कुत्ता नही है। यह तो किसी और की आवाज है। हाँ वहाँ और कोई खड़ा हुआ है। मुझे फौजी बूट नजर आते है, एक जोड़ा फौ-

बूट और एक जोड़ा और, फिर एक सिपाही का पतलून। उससे ऊपर की चीज मैं नही देख सकता, सिर उठाने की कोशिश करते ही मेरा सिर चक्कर खाने लगता है। अरे जाने भी दो, आओ सोयें ...

बुधवार।

वे दो आदमी जो 'साम'[1] गा रहे थे अब बैठे मेज पर एक मट्टी के बर्तन मे खाना खा रहे थे। अब मैं बता सकता हूँ कि उनमे कौन-कौन हैं। उनमे एक उम्र मे छोटा है और ऐसा लगता है कि वे लोग पादरी नही है। यह किसी गिरजे की नही, जेल की कोठरी है। मैं देखता हूँ फर्श पर के लकड़ी के पटरे बडी दूर तक चले गये है और जहाँ वह खत्म होते है, वहीं पर एक वडा भारी, डरावना-सा दरवाजा है ...

उधर ताले में चाभी के घूमने की आवाज होती है और इधर दोनों आदमी डर कर अटेंशन की हालत में खड़े हो जाते है। एस० एस० की वर्दियों में दो और आदमी अन्दर आते हैं और उन्हें हुक्म देते हैं कि वे मुझे कपड़े पहनायें। मैं नही जानता था कि हर मोजे और हर बाँह में कितना दर्द छिपा हुआ है। वे मुझे एक स्ट्रेचर पर लिटाते हैं और सीढ़ियों से नीचे ले जाते हैं, उनके भारी बूट उस लंबे सायबान में गूँजते हैं ...... अच्छा तो यही वह रास्ता है जिधर से वे मुझे एक बार और ले गये थे जब मैं बिलकुल बेहोश हो गया था। यह रास्ता कहाँ जाता है? किस नरक में जाकर यह खत्म होता है?

पाक्राट्स के पुलिस कैदखाने की उस परछाइयों की दुनिया में जहाँ दुश्मनी वरतने के लिए कैदियों का सब से पहले स्वागत किया जाता है। वे मुझे फर्श पर रख देते हैं और दोस्ती का अभिनय करती हुई एक चेक आवाज एक जर्मन आवाज के क्रुद्ध प्रश्न का अनुवाद करती है:

'तुम इस लड़की को जानते हो?'

मैं हाथ से अपनी ठुड्डी ऊपर उठाता हूँ। स्ट्रेचर के सामने चौड़े-से चेहरे की एक नौजवान लड़की खड़ी है। वह गर्व के साथ तनकर खड़ी है, उसका सिर उठा हुआ है, लेकिन ओछे घमंड से नही, उदात्त भाव से। उसकी आँखें भर नीची है, इतनी कि मुझे देख सकती हैं और आँखों ही आँखों में अपना अभिनंदन जता सकती है।

'मैं नही जानता।'

मुझे याद आता है कि मैंने सिर्फ एक बार उसे देखा था, शायद एक सेकेंड के लिए, पेचेक बिल्डिंगवाली उस भयानक रात को। यह दूसरी बार है। और शायद तीसरी बार देखने का मौका नही मिलेगा। आह, काश कि मैं उसका

---

१. भजन के ढंग का ईसाई धार्मिक गाना।

उनका समर्थन करता है कि अपनी उस भयानक तकलीफ में भी मुझे लगता है कि वे दोनो सफेद झूठ बोल रहे हैं। दोनों बड़े अच्छे हैं। मुझे दुःख है कि मैं उनकी बात पर विश्वास नही कर सकता।

तीसरा पहर।

कोठरी का दरवाजा खुलता है, और कुत्ता चुपचाप पञ्जों के बल अन्दर आता है। वह मेरे सिर के पास आकर खडा हो जाता है और एक बार फिर कुछ खोजती हुई आँखो से मुझे देखता है। फिर दो जोड़ा भारी बूटों की आवाज। मैंने अभी उन्हें देखा नही है लेकिन मैं जानता हूँ कि एक जोडा कुत्ते के मालिक पाक्राट्स जेल के सुपरिनटेनडेंट का है और दूसरा गेस्टापो के कम्युनिस्ट-विरोधी विभाग के अध्यक्ष का, जिसकी निगरानी मे उस पहली रात को मेरा इम्तहान हुआ था। कुछ शहरियो के पतलून भी दिखलायी देते है। मेरी आँखें उन पर उठती है — हाँ, मै जानता हूँ, यही वह लम्बा दुबला कमीसार है जिसने पुलिस के छापे का नेतृत्व किया था। वह बैठ जाता है और सवाल करना शुरू करता है।

'तुम बाजी हार गये। अब कम से कम अपनी जान तो बचा लो। बोलो!' वह मुझे सिगरेट पेश करता है। मुझे उसकी जरूरत नही है। मैं उसे बर्दाश्त नही कर सकूंगा।

'बाक्सस परिवार के संग तुम कितने रोज थे?' बाक्सस परिवार के संग! यह तो हद हो गयी। उन्हें किसने बतलाया सब?

जब तुम सब कुछ खुद ही जानते हो, तो मैं और क्यों बतलाऊँ? मैंने अपनी जिन्दगी व्यर्थ नही गँवायी है और उसका अन्त भी मैं अपने हाथ से न बिगाड़ूँगा।

मामले की छानबीन एक घंटे तक चली। वह आदमी जोर-जोर से चिल्लाता नही, बहुत धीरज के साथ वह अपने सवालो को दोहराता है और जब उनका भी कोई जवाब नही मिलता, तो फिर वह दूसरा सवाल पूछता है, फिर तीसरा, फिर न जाने कितने, सवालों की एक झड़ी जो कभी खतम नही होती।

'मेरी बात तुम्हारी समझ में नहीं आती? यही अन्त है, समझे। बाजी तुम हार गये।'

'अभी सिर्फ मैं हारा हूँ।'

'तुम्हे अब भी कम्यून के जीतने का भरोसा है?'

'बेशक।'

'इसे अब भी इस बात का भरोसा है?' अध्यक्ष जर्मन मे पूछता है और कमीसार अनुवाद करता है — 'इसे अब भी रूस की जीत का विश्वास है?'

'पूरी तरह। और दूसरा हो भी क्या सकता है।'

मैं थक गया हूँ। मैंने अपने बचाव के लिए अपनी सारी शक्ति एकत्र कर

ली थी, अब एक गहरे घाव से बहनेवाले रक्त के साथ-साथ मेरी चेतना भी तेजी के साथ खोती जा रही है। मैं उनको अपनी ओर हाथ बढाते हुए महसूस करता हूँ — शायद वे मेरे माथे पर मौत का निशान पढ रहे हैं। कुछ देशों मे यह रवाज भी है कि जल्लाद कैदी को मारने के पहले उसे चूमता है।

शाम।

दो आदमी हाथ जोडे गोल-गोल घूम रहे है, एक के पीछे एक और रोती हुई ऊबडखाबड़ आवाज में यह मातमी गाना गा रहे हैं :

जब सूरज की गर्मी और तारों की रोशनी हमारे लिए
नहीं रह जाती, नहीं रह जाती .....

भलेमानुसो, इसे बन्द करो ! शायद यह बहुत अच्छा गाना है, लेकिन आज, आज पहली मई की शाम है, कल पहली मई है, पहली मई, इन्सान का सबसे सुन्दर सबसे ज्यादा खुशी का त्यौहार। मैं खुशी की कोई चीज गाने की कोशिश करता हूँ लेकिन शायद वह बहुत उदास सुन पडती है क्योंकि नौजवान कारेक मुँह फेर लेता है और 'पापा' अपनी आँखें पोछने लगते हैं। कोई परवाह नही, मैं गाता रहता हूँ और धीरे-धीरे वे भी मेरा साथ देने लग जाते है। मैं खुश-खुश सो जाता हूँ।

पहली मई की भोर।

जेल के घंटाघर ने तीन बजाये। पहली बार वह आवाज मुझे साफ-साफ सुनायी दी। मेरी चेतना पूरी तरह लौट आयी है। मै महसूस करता हूँ कि ताजी हवा खुली हुई खिडकी मे से बहती हुई अन्दर आ रही है और फर्श पर बिछे हुए मेरे पुआल के गद्दे पर फैल रही है। यकायक मुझे भूसे की डंटियाँ चुभती महसूस होती है। साँस लेना भी मुश्किल है, क्योंकि मेरे शरीर के एक-एक अंग मे हजार-हजार दर्द है। यकायक जैसे कोई खिडकी खोल दे, और मैं देखता हूँ कि मेरा अन्त अब आ गया। मैं मर रहा हूँ।

मौत, तुम्हें आने में बडी देर हुई। कभी मुझे आशा थी कि तुमसे मुलाकात करने मे मुझे अभी बहुत-बहुत वरसों की देर है। मैंने आशा की थी कि आजाद आदमी की तरह रहूँगा, खूब काम करूँगा, खूब प्यार करूँगा, गाऊँगा और दुनिया भर घूमूंगा। अब कही मुझमे प्रौढता आयी थी और अभी मुझमें सचमुच बडी ताकत थी। अब मुझमे ताकत नही है। अब मेरी ताकत गायब हो रही है।

मुझे जिन्दगी से प्यार था और उसकी खूबसूरती के लिए मैं लडने गया। लोगो, मुझे तुमसे प्यार था और तुमने जब बदले मे मुझे प्यार दिया तो मुझे सुख हुआ। मुझे तकलीफ हुई जब तुमने मुझे गलत समझा। तुम लोग जिन्हें मैंने कोई नुकसान पहुँचाया हो, मुझे माफ़ कर देना और तुम लोग जिन्हे मैंने कोई खुशी पहुँचायी हो, मुझे भूल जाना। खबरदार, उदासी मेरे नाम के

संग कभी न जुडे । यही मेरी आखिरी वसीयत है, पापा, अम्माँ, बहन, तुम्हारे लिए, मेरी गुस्टा तुम्हारे लिए, मेरे साथियो, तुम सब जिनसे मुझे प्यार था, तुम्हारे लिए । अगर तुमको लगे कि आँसुओं से तुम्हारे दर्द की उदास धूल धुल जायेगी तो थोडी देर रो लेना । लेकिन अफसोस मत करना । मैं आनन्द के लिए जिया, और अब आनन्द के लिए ही मर रहा हूँ और मेरी क़ब्र पर गम के फरिश्ते को बिठालना मेरे संग बेइंसाफी होगी ।

पहली मई । शहर के आस-पास के इलाको मे हम लोग भोर की इस बेला मे उठते और अपने झंडे तैयार करते थे । इसी वक्त मास्को की सड़कों पर सैनिकों की कतारें मई दिवस की परेड के लिए खड़ी हो जाती थीं । इस वक्त लाखों आदमी इंसान की आजादी की आखिरी लडाई लड़ रहे हैं और उसमे हजारो मर रहे है । मैं भी उनमे से एक हूँ । इसमें कितना सुख है । इस आखिरी लडाई का एक सिपाही होना कितना सुन्दर है ।

लेकिन मरना सुन्दर नही है । मेरा दम घुट रहा है । मैं साँस नही ले पाता । मुझे अपने गले में मौत की खरखराहट सुनायी पड़ती है, अच्छा हो कि मैं अपने साथियों को जगा लूं । शायद अगर मैं थोडा पानी पी लूं — लेकिन झज्झर मे पानी नही है, गो मुझसे सिर्फ छः कदम दूर, कोठरी के एक कोने मे बहुत-सा पानी है, गुस्ल का पानी । क्या उस तक पहुँचने की ताकत मुझमे है ?

मैं पेट के बल घिसटता हूँ । खामोशी से, ओह कितना खामोशी से—गोया मेरी मौत की सारी शान इस बात मे हो कि मेरे कारण कोई जागे नही । आखिर मैं उसके पास पहुँचा और बहुत-सा पानी पी गया, हबोककर ।

पता नही इसमे मुझे कितनी देर लगी और फिर पता नही घिसटकर वापस आने मे कितनी देर लगी । चेतना फिर लुप्त हो रही है । मैं अपनी नब्ज टटोलता हूँ, पर मुझे कुछ पता नही चलता । मेरा दिल उछलकर जैसे मेरे गले में आ जाता है और फिर वैसे ही झटके के साथ वापस अपनी जगह पर पहुँच जाता है । मैं भी उसके संग गिरता हूँ, बडी देर तक गिरता चला जाता हूँ । बीच मे ही मुझे कारेक की आवाज सुनायी पड़ती है ।

'पापा पापा, सुनते हो ? बेचारा दम तोड रहा है ।'

सवेरे डाक्टर आया ।

लेकिन उसके बारे मे तो मुझे बहुत बाद में पता चला ।

वह आया । उसने मुझे देखा, सुना और सिर हिलाया । फिर वह अस्पताल लौटकर गया और वह मौतवाली रिपोर्ट फाड़ी जिसमें कल शाम को ही उसने मेरा नाम दर्ज कर दिया था, और एक पक्के विशेषज्ञ के-से आत्मविश्वास के साथ कहा —

इस आदमी के शरीर मे घोड़े जैसी ताकत है । □

तीसरा अध्याय

कोठरी नम्बर २६७

दरवाजे से खिडकी तक सात कदम, खिडकी से दरवाजे तक सात कदम। मैं खूब अच्छी तरह जानता हूँ।

पांक्राट्स की इस कोठरी के चीड के तख्तो पर मैंने कितनी बार इस फासले को तय न किया होगा! इस कोठरी में मैं शायद इसीलिए बैठा हूँ कि मेरी आँखो के सामने यह बात बहुत साफ थी कि हमारी शहरी जनता की घातक नीति का परिणाम चेक राष्ट्र के लिए कितना भयंकर होगा। मेरा राष्ट्र आज सलीब पर टँगा है; मेरी कोठरी के आगे जर्मन संतरी गश्त लगा रहे है और वहाँ बाहर कही राजनीतिक भाग्य की देवियाँ देशद्रोह का ताना-बाना बुन रही है। आँखें खुलने के लिए इंसान को कितनी सदियाँ लगेगी? अपनी प्रगति की राह मे उसने कितनी हजार कैदखाने की कोठरियाँ पार की होगी? अभी और कितनी करेगा? ओह, नेरूदा[1] के बाल यीसु, आदमी की मुक्ति की राह का कोई अन्त नही है। लेकिन आखिरकार आदमी जागा है।

सात कदम वह, सात कदम लौटते। एक दीवार से मिला हुआ लकड़ी का एक ओठा[2] जिसे तोड़ा भी जा सकता है, और दूसरी दीवार मे लगकर एक मनहूस भूरे रंग की आलमारी जिस पर मट्टी का कटोरा रखा है। हाँ, मै वह सब जानता हूँ। अब कैदखाने मे बिजली से काम होता है, सारी जेल की कोठरियाँ एक जगह से गरम की जाती है। पुरानी बाल्टी की जगह अब फ्लश की टट्टी है। लोग भी मशीन की तरह के हो गये है। खासकर लोग — बिलकुल चाभी से चलनेवाले पुतलो की तरह। एक बटन दबाइए और एक चाभी ताले में आवाज के संग घूमने लगती है या कोठरी के भीतर झाँकने के लिए बना हुआ चोर सुराख खुलता है — और कैदी (वह कुछ भी कर रहे हो) कूद कर अटेंशन की हालत में खड़े हो जाते है, एक के पीछे एक। दरवाज़ा खुलते ही कोठरी के सबसे वयस्क आदमी को एक साँस मे चिल्लाना पडता है, 'अटेंशन!

---

१. जान नेरूदा, चेकोस्लोवाकिया का कवि।

२. कैदी के सोने के लिए।

कोठरी नम्बर दो सौ सड़सठ में तीन कैदी — सब ठीक है।'

नम्बर दो सौ सड़सठ हमारी कोठरी है, लेकिन पुतले आज ठीक से उठ-गिर नहीं रहे हैं। सिर्फ दो उछल पाते हैं। मैं खिड़की के नीचे अपने पुआल के गद्दे पर बिना हिले-डुले पड़ा रहता हूँ — मैं एक हफ्ता, दो हफ्ते, एक महीना, छ हफ्ते से मुँह के बल लेटा हूँ। मेरा पुनर्जन्म हो रहा है। अब मैं सिर घुमा सकता हूँ, हाथ उठा सकता हूँ। मैंने कुहनी के सहारे अपने शरीर को उठा लिया है; पीठ के बल लेट जाने की कोशिश भी की है। इतना जरूर है कि अब मैं पहले से तेज लिख सकता हूँ।

कोठरी में परिवर्तन हुए हैं। दरवाजे पर तीन नामों की जगह अब सिर्फ दो नाम हैं क्योंकि कारेक गायब हो गया है, उन दोनों में से वह कम उम्रवाला जो मेरी मौत पर सर्द गाने गाता था। अपने पीछे वह अपने रहम खानेवाले दिल की याद भर छोड़ गया है। मैं उसे सिर्फ अधनींदी-सी हालत में धुँधला-धुँधला देख पाता हूँ और मुझे उसके संग के सिर्फ आखिरी दो दिन याद हैं। वह बार-बार अपने मुकदमे की तफसील दोहराता और मैं हर बार उसकी कहानी के बीच में ही सो जाता।

उसका नाम कारेक मलेत्स है; वह हुडलित्ज़ के पास कहीं किसी लोहे की खान में गाड़ियों के चढ़ाने-उतारने के खटोले में कारीगर का काम करता था। वह इंकलाबी लड़ाई को गोला-बारूद पहुँचाया करता था। उसे करीब दो साल हुए पकड़ा गया था और अब शायद बर्लिन में उस पर मुकदमा चल रहा है। दल का दल जा रहा है। और पता नहीं उन्हें क्या सजा मिलेगी। उसके बीवी है और दो बच्चे, जिन्हें वह प्यार करता है, बहुत प्यार करता है — लेकिन...... आप ही सोचिए न, यह तो मेरा फर्ज था, मैं और कुछ कर भी तो नहीं सकता था!

वह अकसर मेरे ओठे पर बैठता और मुझे खाना खिलाने की कोशिश करता। मैं खा न पाता। सनीचर को — क्या मुझे यहाँ आये आठ दिन हो गये ?— वह अपनी आखिरी चाल चलता है और पुलिस-मास्टर से मेरी रिपोर्ट करता है कि जबसे मैं यहाँ आया हूँ मैंने कुछ नहीं खाया है। पुलिस-मास्टर, नात्सी सिपाही की वर्दी पहने हरदम परेशान रहनेवाला वह पाक्राट्स का अर्दली जिसके हुक्म के बिना चेक डाक्टर किसी मरीज को ऐस्पिरिन भी नहीं दे सकता — एक मग्गे में अस्पतालवाला शोरबा लाता है और मेरे सिर पर खड़ा रहता है जब तक कि मैं उसे गले के नीचे उतार नहीं लेता। कारेक अपनी ज़ोर-जबर्दस्ती की इस सफलता पर बहुत खुश है और दूसरे दिन वह खुद एक मग्गा इतवारी शोरबा मेरे गले के नीचे उतार देता है।

लेकिन उससे ज्यादा मैं नहीं ले सकता। हमको इतवार के रोज जो गूलाश

मिलता है उसके जरूरत से ज्यादा उबले हुए आलू भी मेरे छिले हुए मसूढ़ों से नहीं चाबे जाते; मेरा सूजा हुआ गला छोटी-सी चीज निगलने में भी असमर्थ है।

'गूलाश भी नहीं, इन्हें गूलाश भी नहीं चाहिए,' कारेक शिकायत के लहजे में कहता है और मुझ पर अफसोस जाहिर करते हुए अपना सिर हिलाता है।

फिर 'पापा' के संग बराबर का हिस्सा लगाकर वह मेरा आधा खाना चट कर जाता है।

ओह, तुम लोग जो सन् ४२ में पांक्राट्स मे नहीं रहे, क्या जानो कि गूलाश का स्वाद कैसा होता है। कभी जान भी नहीं सकते ! उन बदतरीन दिनों मे, जब हमारे पेट भूख के मारे गुडगुड़ाते थे, जब कि हफ्ते मे एक दिन स्नान के रोज फव्वारे के नीचे बैठी हुई शक्लें ठठरियों के समान लगती जिन पर आदमी की खाल मढ दी गयी हो, जब कि तुम्हारा गहरा-सा-गहरा दोस्त कम-से-कम अपनी निगाहों से तो तुम्हारा खाना चुराता ही था—उन बदतरीन दिनों मे सुखायी हुई तरकारियों और पानी मिली हुई टमाटर की चटनी से तैयार शोरवा भी हमारे नजदीक एक पकवान था। उन बदतरीन दिनो में जेल का अफसर हफ्ते में दो रोज, वृहस्पत और इतवार को, हमारे कटोरे में एक बड़ा चम्मच भरआलू निकालकर डाल देता और उस पर एक चम्मच गूलाश का शोरवा टपका देता और गोश्त के दो-एक टुकड़े। हमें उसका स्वाद अद्भुत लगता — मगर स्वाद से ज्यादा उसका मूल्य हमारे नजदीक इसलिए था कि वह इंसान की जिन्दगी की याद दिलानेवाली एक चीज थी, एक ऐसी चीज जिसमें सभ्यता है, जो गेस्टापो के कैदखाने की जिन्दगी की क्रूरताओं के बीच आदमी की मामूली औसत जिन्दगी की एक चीज थी। हम उसके बारे मे बात करते वक्त अपने को जैसे भूल-सा जाते। ओह, कौन समझ सकता है कि आदमी की निगाह मे एक चम्मच अच्छे शोरवे की कीमत कितनी ऽऽ ज्यादा हो सकती है — जब रोज मरने का खौफ उसमें गरम मसाले का काम करता हो।

दो महीना गुजर जाने पर मेरी समझ मे भी आया कि मैं जब गूलाश खाने से इनकार कर देता था तो कारेक इतना घबड़ा क्यों जाता था। मेरी आसन्न मृत्यु का इस बात से अधिक अच्छा प्रमाण क्या हो सकता था कि अब मुझे गूलाश खाने की इच्छा भी नहीं होती थी।

उसके दूसरे दिन की रात को दो बजे उन्होंने कारेक को जगाया। उसे पाँच मिनट में तैयार हो जाना था चल देने के लिए, मानों वह सिर्फ जरा सी देर के लिए कहीं घूमने जा रहा हो, न कि जीवन के अन्त तक के सफर पर, दूसरे जेल, कंसेंट्रेशन कैंप, फाँसी, कौन जाने कहाँ ? उसे मेरे ओठे के पास आकर झुकने, मेरा सिर अपनी बाँहो में समेटने और चूमने मे वक्त लगा। तभी सायबान मे,

वर्दी पहने हुए सिपाही की घाव करनेवाली आवाज सुनायी दी कि पाक्राट्स में भावुकता के लिए कोई जगह नहीं है। कारेक दौड़कर दरवाजे मे बाहर हो गया, ताला फिर झटपट भर दिया गया ... और कोठरी मे हमलोग दो ही रह गये।

क्या हम फिर कभी मिलेगे, दोस्त ? अब किसकी बारी है ? हम दोनों में से कौन पहले जायेगा ? कहाँ ? उसे लेने कौन आयेगा ? एस० एस० की वर्दी पहने सिपाही — या मौत, जो कोई वर्दी नही पहनती ?

इस वक्त जब मैं लिख रहा हूँ मेरे दिमाग मे वे विचार गूँज रहे हैं जो जेल मे पहली विदा के संग मुझ पर बुरी तरह छा गये थे। तब से एक साल गुजर गया है और वे विचार जो हमारे उस साथी को दरवाजे तक छोड़ने गये थे, कम या ज्यादा तेजी के साथ कई बार दोहराये जा चुके हैं। हमारी कोठरी के दरवाजे पर दो की जगह तीन नाम हुए और फिर दो ही रह गये — फिर तीन दो, तीन दो — जैसे-जैसे नये कैदी आते और हमें छोड़कर चले जाते। सिर्फ हम दो जो कोठरी नम्बर २६७ में रह गये, अब भी पूरी ईमानदारी के संग उसमें बैठे हुए हैं . 'पापा' और मैं।

'पापा' कहीं पढ़ाते थे, उनकी साठ साल की उम्र है और उनका नाम जोजेफ पेशेक है — गिरफ्तार मास्टरो में वे ही सबसे बड़े हैं। वह मुझसे पचासी रोज पहले पकड़े गये थे क्योंकि वह 'जर्मन राइख के खिलाफ षड्यन्त्र' रच रहे थे और वह षड्यन्त्र क्या था ? यही कि वह एक योजना तैयार कर रहे थे कि चेकोस्लोवाकिया के फिर आजाद होने पर चेक स्कूलो को कैसे और उन्नत बनाया जायगा।

'पापा' ...

लेकिन सब तुम कैसे लिख सकते हो, मेरे दोस्त ? एक कोठरी में साल भर तक साथ रहनेवाले दो आदमियो के बारे मे लिखना हँसी-खेल नही है। इस बीच उनके नाम 'पापा' के कोटेशन-चिह्न उड गये, और दो अलग-अलग उम्रों के कैदी सचमुच बाप-बेटे हो गये। इस दौरान में हम दोनो ने एक दूसरे की बातचीत से वह फिकरे अपना लिये जो हमें अच्छे लगे, चेहरे के वह खास इशारे और यहाँ तक कि आवाज का लहजा। अब यह बताना मुश्किल है कि उस कोठरी मे क्या चीज उनकी है क्या मेरी, अपने साथ वह क्या लाये थे और अपने साथ मैं क्या लाया था।

वह रात की रात मेरे पास बैठे रहते और अपनी सफेद गीली पट्टियो से मौत को, जब भी वह पास आती, मार भगाते। वह मेरे घाव की पीप साफ करते लेकिन उन्होंने कभी यह जाहिर नही होने दिया कि उसकी भयानक बदबू का, जिससे मेरा ओठा भारी रहता, उन पर कोई असर है। वह मेरी चीथड़ानुमा कमीज धोते, सुधारते और जब वह ऐसी तार-तार हो जाती कि उसे और सुधारना मुमकिन न होता तो अपनी कमीज मुझे पहना देते। वह मेरे लिए एक

छोटा-सा डेजी का फूल और घास का वद दूब लाय जिनका-वन्हान एक सुबह कसरतवाले आध घण्टे में जेल के आँगन से अपनी जान पर खेलकर तोडा था। हर बार वे लोग मुझे 'पेशी' के लिए ले जाते तो 'पापा' की सहानुभूतिशील आँखें कोठरी के बाहर तक मुझे पहुँचाने आती और जब मै लौटता तो वे बडी नरमी से गीली पट्टियाँ मेरे नये घावो पर लगाते। कभी रात को जब वे लोग मुझे ले जाते तो पापा तब तक न सोते जब तक कि मैं वापस न आ जाता और वे मुझे मेरे ओठे पर लिटाकर कंबल ठीक से मेरे नीचे दबा न देते।

उस पहली रात की यातनाओं के बाद इस तरह हमारा सम्बन्ध शुरू हुआ और उसमें कभी कोई खोट नही आयी यहाँ तक कि मै अपने पैरो पर खडा होने लगा और अपने पैतृक ऋण को चुकाने लगा।

लेकिन दोस्त, तुम एक बैठक मे वे तमाम बाते नही लिख सकते। उस साल कोठरी नम्बर २६७ की जिन्दगी बहुत मालामाल रही और पापा अपने ढंग पर उसके जर्रे-जर्रे में समाये रहे। लेकिन वह कहानी अभी खत्म नही हुई है — और इसी में आशा की किरण है।

कोठरी नम्बर २६७ की जिन्दगी सचमुच बहुत मालामाल थी। कभी-कभी दरवाजा खुलता और घंटे-घंटे पर हम लोगो का मुआयना होता। इसकी वजह यह थी कि उन्हें हुक्म मिला था कि अपने कम्युनिस्ट कैदी पर और कड़ी निगरानी रखखो, लेकिन इतना ही नही, इसके पीछे सामान्य कुतूहल का भाव भी थोडा बहुत था। यहाँ पर लोग अकसर मर जाते जब कि किसी को उनके मरने का गुमान भी न होता, लेकिन ऐसा कम ही होता था कि वह आदमी, जिसके मरने की सब लोग राह देख रहे हो, जिये जा रहा हो। दूसरे गलियारो से संतरी आते और जोर-जोर से आपस मे बाते करते हुए या खामोशी से मेरा कंबल उठाते, विशेषज्ञो की तरह मेरे घावो को समझते और फिर अपनी प्रकृति के अनुसार या तो कोई तकलीफदेह मजाक करते या जरा दोस्ताने का लहजा अख्तियार करते। उनमें से एक जिसे हम लोग स्मार्टी कहते है, औरो से ज्यादा आता है और बहुत मुसकराकर पूछता है कि 'उस कम्युनिस्ट शैतान' को कुछ चाहिए तो नही। जी नही, शुक्रिया। कुछ दिनों बाद स्मार्टी को पता चलता है कि कम्युनिस्ट शैतान को अब सचमुच कुछ चाहिए—एक शेव। लिहाजा वह हज्जाम को बुला लाता है।

हज्जाम ही हमारी कोठरी के बाहर का वह पहला कैदी है जिससे हमारी मुलाकात हुई — कामरेड बोशेक। मगर स्मार्टी की भलमंसी बहुत बेरहम साबित हुई। पापा मेरा सिर पकडते हैं और बोशेक मेरे ओठे पर झुक कर एक बहुत कुन्द उस्तरे से उस घनी दाढ़ी को काट चलता है, जैसे जंगल साफ कर रहे हो। उसके हाथ काँपते है और आँखें भर आती हैं, क्योंकि उसे इस बात का

पूरा यकीन है कि वह एक लाश की दाढी बना रहा है। मैं उसे ढाढस बँधाता हूँ।

'हिम्मत से काम लो दोस्त। जब मैं पेचेक बिल्डिंग की उन यातनाओं को सह ले गया तो तुम्हारा दाढी बनाना भी सह ही लूंगा।'

लेकिन हम दोनो इतने कमज़ोर हैं कि हमें रुककर सुस्ताना पडता है, उसे और मुझे। दो दिन बाद और दो कैदियो से मेरी मुलाकात हुई। पेचेक बिल्डिंग के कमीसार लोग अधीर हो गये है। हर रोज़ जब वह मुझे बुला भेजते, पुलिस मास्टर पुर्जे पर लिख देता 'बाहर नही भेजा जा सकता।' तब उन्होने हुक्म दिया कि कुछ भी हो, उसे भेजो। ट्रस्टियों की पोशाक पहने दो कैदी स्ट्रेचर लिये हमारी कोठरी के सामने आकर खडे हुए। पापा ने बड़ी-बडी मुशकिलो से मुझे कुछ कपड़े पहनाये, ट्रस्टियो ने मुझे स्ट्रेचर पर लिटाया और ले चले। उनमें से एक कामरेड स्कोरेपा है, सारी बारक का खूब खयाल रखनेवाला। दूसरा है, जिसने उस वक्त जब कि मैं जीने पर स्ट्रेचर के ढलवाँ होने से फिसलने लगा था, मुझ पर झुक कर कहा — मजबूती से जमे रहो, और फिर धीरे-से बुदबुदाया — दोनो ही अर्थो मे, जमे रहो।

इस बार हम लोग पहली मुलाकातवाले कमरे मे नही रुके। वे मुझे एक बडे हॉल मे ले गये जिसमे आदमी भरे हुए थे। बृहस्पत का दिन है, जब घर के लोग अपने कैदियो के लिए साफ कपडे लाते है और उनके गदे कपडे धुलने के लिए ले जाते है। वे हमारे उस उदास जुलूस को हमदर्दों की निगाहों से देखते है, पर मुझे वह कुछ अच्छी नही लगती। मैं अपना हाथ उठा कर सिर तक ले जाता हूँ और मुट्ठी बाँधता हूँ। शायद वे लोग समझ जायें कि यह मैं सलाम कर रहा हूँ, मगर पता नहीं, शायद यह कुछ नही सिर्फ बेवकूफी का एक इशारा हो। लेकिन इससे ज्यादा की, एक शब्द भी बोलने की, ताकत मुझ में नही है।

जेल के खुले सहन मे उन्होने स्ट्रेचर ट्रक मे रख दिया। दो नात्सी सिपाही ड्राइवर के संग बैठे, दो मेरे सिर पर खडे हुए, उनके हाथ उनके रिवालवर की खुली थैलियों पर थे, और हम रवाना हुए। सडक की हालत बहुत खराब है। पहिये एक गड्ढे से उछलकर दूसरे गड्ढे में पहुँच जाते है, और हम लोग मुशकिल से दो सौ गज गये होंगे कि मैं बेहोश हो गया। प्राग की सड़कों पर हमारा इस तरह चलना बहुत दिल्लगी से भरा हुआ है — पाँच टन का एक ट्रक जो तीस कैदी ले जाने के लिए काफी है, एक के लिए पेट्रोल जलाता है। दो नात्सी सिपाही सामने और दो पीछे और गिद्धो जैसी उनकी भूखी आँखें एक लाश पर पहरा देती हुई, इस डर से कि कही वह उनके पंजों से निकल न भागे।

मेरी बेहोशी की हालत मे तो पेशी हो नहीं सकती थी, इसलिए वे मुझे

वापस पांक्राट्स ले आये। यही प्रहसन दूसरे रोज दुहराया गया, इस बार इतना जरूर हुआ कि पेचेक बिल्डिंग पहुँचने तक मैं होश में रहा। कमीसार फ्रीड्रिक ने जरा लापरवाही से मेरा शरीर छुआ नही कि मैं बेहोश हो गया और उन्हे बेहोशी की हालत में ही मुझको वापस ले आना पडा।

फिर ऐसे दिन आये जब मुझे इस बात का शक न रहा कि मैं अब भी जिन्दा हूँ। पीडा — जिन्दगी की वह जुडवाँ बहन — मुझे लगातार बडे निर्दय ढंग से उसकी याद दिलाती रहती। सारे पांक्राट्स को पता चल गया कि किसी भूल-चूक के कारण मैं अब भी जिन्दा हूँ और वे मुझे अपनी शुभकामनाएँ भेजने लगे — मोटी-मोटी दीवारो पर खट्-खट् की आवाजो और खाना लानेवाले ट्रस्टियो की निगाहों के जरिये।

सिर्फ मेरी बीवी को मेरे बारे मे कुछ नही मालूम था। मुझसे एक मंजिल नीचे और कुछ नम्बर आगे वह अकेली एक कोठरी मे आशाओ और चिन्ताओ के बीच दिन काट रही थी, जब पडोस की कोठरी की एक औरत ने कसरत के वक्त उसे बताया कि मैं मर गया, पहली यातना मे मुझे जो घाव लगे थे, उन्ही से मेरी मौत हो गयी। यह इतना बडा धक्का था कि वह पागल की तरह जेल के उस आँगन के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगी और उसे वह घूँसा भी पता नही चला जो स्त्री-संतरी ने उसे उन गिरती-पडती, जीती-मरती, पैर घसीटती आकृतियों की कतार मे वापस ठेलने के लिए मुँह पर मारा था। वे आकृतियाँ यानी जेल की जिन्दगी। उसकी उन बड़ी-बड़ी कोमल आँखो के सामने क्या दृश्य गुजरे होंगे जब वह तमाम दिन अपनी कोठरी की दीवारो को ताकती बैठी होगी, दिल ऐसा चूर-चूर कि आँसू भी न निकलते होंगे ! दूसरे दिन उसने दूसरी अफवाह सुनी कि मेरी जान यातनाओ के कारण नही निकली बल्कि दर्द से बचने के लिए मैंने कोठरी मे अपने आप को फाँसी लगा ली।

पूरे वक्त मै उस घिनावने मनहूस ओठे पर ऐंठता और करवटें बदलता पडा रहा और हर शाम दीवार की तरफ मुँह कर लेता और चाहता कि अपनी गुस्टिना को वह गाना गाकर सुनाऊँ जो उसे सबसे ज्यादा पसन्द है। वह मुझे सुन क्यों नही पाती, जब कि मैं इतनी गहरी अनुभूति से गाता हूँ ?

वह आज जानती है, वह आज उस गाने को सुन सकती है — बावजूद इसके कि अब वह पहले से भी ज्यादा दूर चली गयी है। अब सन्तरी इस बात के आदी हो गये है कि कोठरी नम्बर २६७ में गाना होता है और अब वह मुझको शान्त करने के लिए दरवाजा नहीं पीटते।

कोठरी नम्बर २६७ गाती है। मैंने तमाम जिन्दगी गाना गाया है और कोई वजह नही देखता कि अब आखिरी वक्त गाना बन्द कर दूँ, उस वक्त इंसान सबसे ज्यादा गहराई से, सबसे उत्कट रूप मे जीता है। और पापा

का क्या हाल है ? उनकी तो वात ही अलग है । उनको गाने से बहुत ही ज्यादा प्यार है । उनके पास गला नही है, संगीत के खयाल मे उनके कान भी कुछ बहुत अच्छे नहीं है, न उनकी स्मरणशक्ति ही ठीक है, लेकिन गाने से उन्हें बड़ा गहरा हार्दिक प्रेम है । उन्हें गाने मे इतना आनन्द आता है कि मुझे पता ही नही चलता कब वह बेसुरे हो जाते हैं और फिर बेसुरा ही गाये जाते हैं। और न उन्हे ही इसकी फिक्र रहती है । और इस तरह दिन अच्छा होने पर या जब इच्छाएँ मन पर हावी हो जाती हैं, तब हम लोग गाते हैं । हम एक जाते हुए कामरेड का, जिसे हम फिर शायद कभी न देखें, साथ देने के लिए गाते हैं । हम पूरबी (रूस के — अनुवादक) मोर्चे से अच्छी खबर आने पर उसका स्वागत करने के लिए गाते है । हम खुशी के मारे या अपने दिल की तसकीन के लिए गाते हैं जैसे कि लोग सदियों से गाते आ रहे हैं और तब तक गाते रहेंगे जब तक कि वह इंसान है ।

गाने के बगैर कोई ज़िन्दगी नही जैसे सूरज के बगैर कोई ज़िन्दगी नही । और यहाँ पर तो हमें गाने की दुगुनी जरूरत पड़ती है क्योंकि सूरज हम तक नही पहुँचता । कोठरी नम्बर २६७ का मुँह उत्तर को है, इसलिए सिर्फ गर्मी के महीनों में, डूबता हुआ सूरज कुछ मिनटो के लिए हमारी कोठरी की पूरबी दीवार पर खिडकी के जँगले की जाली बुन जाता है । उन कुछ मिनटो में पापा अपने मोडे हुए ओठे के सहारे झुककर खडे-खडे सूरज की उस ज़रा सी देर की आमद को एकटक ताका करते हैं ... उससे ज्यादा दुखी और उदास कोई दृश्य नही हो सकता ।

सूरज ! कितनी उदारता से वह अपनी जादूभरी किरणें फेंकता है, आदमी की आँखों के सामने वह क्या-क्या जादू करता है ! लेकिन कितने थोड़े से लोगो को जिन्दगी मे सूरज की रोशनी मिलती है । एक दिन, हाँ एक दिन वह हम सभी लोगों को रोशनी देगा और हम सभी उसकी नर्म-नर्म किरणो मे नहायेंगे । यह बात जानकर कितनी खुशी होती है । लेकिन अभी मैं उससे कही छोटी एक बात जानना चाहता हूँ — क्या वह कभी हम दोनो को रोशनी देगा ?

हमारी कोठरी उत्तर को है । कभी ही कभी जब कि गर्मी का बडा भाग्यशाली दिन हो, हम सूरज को डूबता हुआ देखते हैं । ओह पापा, मेरी कितनी लालसा है कि मैं एक बार और सूरज को उगता हुआ देखूँ ।

□

चौथा अध्याय

नम्बर ४००

पुनर्जन्म एक बहुत खास घटना होती है। असाधारण, उसे बयान नही किया जा सकता। रात को अगर नीद अच्छी तरह आयी है और दिन अगर सुंदर है तो दुनिया बडी आकर्षक लगती है। पुनर्जन्म का दिन और दिनो से भी ज्यादा सुंदर होता है, मानो उस रात सदा से भी ज्यादा अच्छी नीद आयी हो। तुम्हारा खयाल था कि तुम जीवन के रंगमंच को जानते हो लेकिन पुनर्जन्म साफ शीशे के आइने से जीवन के रगमंच पर रोशनी फेंकता है और यकायक तुम उसको रोशनी से भरा हुआ देखते हो। तुम्हारा खयाल था कि तुमने जिन्दगी को काफी अच्छी तरह देखा है कि लेकिन पुनर्जन्म तुम्हारी आँख में दूरबीन लगा देता है और खुर्दबीन भी। यह बिलकुल बसंत ऋतु जैसी बात है — देखते नही बसंत हमारे सदा के जाने-पहचाने परिवेश में कहाँ से ऐसा जादू भर देता है जिसका हमे सपने मे भी गुमान न था।

यहाँ इस कोठरी तक मे, जहाँ तुम जानते हो कि वह क्षणिक है। यहाँ पाक्राट्स जेल की कोठरी के इस रगीन और आकर्षक वातावरण में भी!

फिर एक दिन वह तुम्हें बाहर दुनिया की सैर के लिए ले जाते है। फिर एक दिन तुम्हारी ऐमी पेशी होती है जिसमे तुम स्ट्रेचर पर चढ़ कर नही जाते। गो यह तुम्हें बहुत नामुमकिन-मी बात मालूम होती है, लेकिन तुम वहाँ पहुँच सकते हो। गलियारे मे रेलिंग है, जीने पर रेलिंग है; तुम जैसे चलते हो उसे घिसटना कहना ही ज्यादा ठीक होगा। नीचे साथी कैदी तुम्हें गोद मे उठा लेते है और जेल की वस तक पहुँचा देते है। वहाँ तुम बैठने हो, दस या बारह आदमी, उस अँधेरी चलती-फिरती कोठरी में। नये-नये चेहरे तुम्हें देखकर मुसकराते है और तुम भी जवाब मे मुसकराते हो। कोई कुछ बुदबुदाता है और तुम नही जानते कि वह कौन है; तुम किसी और का हाथ अपने हाथ मे ले लेते हो और नही जानते कि वह हाथ किसका है। वस तेजी से घूम कर पेचेक विल्डिंग के चौक में दाखिल हो जाती है और नये साथी उसमे से तुम्हें निकालकर बाहर लिटाते हैं। तुम सब एक लंबे-चौड़े कमरे में दाखिल होते हो जिसकी दीवारें नंगी है और जिसमें बेंचो की पाँच कतारें लगी हुई हैं, जिन पर मानव आकृतियाँ

अकडी हुई, अटेंशन की हालत मे बैठी है, उनके हाथ घुटनो पर जमे हुए जकडे हुए — वे अपने सामने की सूनी दीवार पर अपलक आँख जमाये है ... यह तुम्हारी नयी जिन्दगी का एक टुकडा है, मेरे दोस्त, इसका नाम 'सिनेमा' है। वह पर्दा जिस पर तुम अपनी पूरी जिन्दगी को सौ वार गुजरते देखोगे।

मई दिवस

आज पहली मई १६४३ है जब थोडी-सी फ़ुर्सत मिली है और मुझे लिखने का मौका है। कैसा सौभाग्य है — फिर कुछ क्षणों के लिए कम्युनिस्ट संपादक बन जाना और मई दिवस को होनेवाली नयी दुनिया की जंगी ताकत की परेड के बारे में एक कहानी लिखना !

नही, इसकी उम्मीद मत करो कि मैं लहराते हुए झंडो के बारे मे कुछ कहूँगा, नही वह सब कुछ नही। और न मैं तुम्हे किसी जोश दिलानेवाली लड़ाई का किस्सा ही सुना सकता हूँ गो मै जानता हूँ कि लोग उसे बहुत पसंद करते है। आज की बात उन सब से कही ज्यादा सीधी-सादी है; आज हजारो मार्च करनेवालो की वे विस्फोटक लहरे नहीं है, जो और साल पहली मई को प्राग की सड़को पर जोश के सग उबाल खाया करती थी। लाखों सिरों का वह खूबसूरत समुंदर भी नही, जिसे मैंने मास्को रेड स्क्वायर मे देखा है। यहाँ लाखो आदमी देखने को नही मिलते, और न सैकड़ो; यहाँ तो सिर्फ मुट्ठी भर साथी हैं। लेकिन तब भी लगता है कि यह भी कुछ कम महत्वपूर्ण नही है क्योकि यहाँ एक नयी ताकत का इम्तहान हो रहा है जो भयानक से भयानक आग से गुजरती है और राख नही लोहा बनकर निकलती है। यह लडाई के मैदान मे होनेवाला इम्तहान है, यहाँ भी हम खाकी वर्दी पहनते है।

यह इम्तहान ऐसी छोटी-छोटी बातों मे होता है कि मुझे शक है कि तुम अगर लडाई की भट्ठी मे से नही गुजरे हो तो सिर्फ उसके बारे मे पढकर उसे समझ भी सकोगे। शायद समझ सको। मेरी बात का विश्वास करो, यहाँ शक्ति का जन्म हो रहा है।

बीथोवेन की दो कड़ियो की खट्-खट् के रूप मे सबेरे का नमस्कार पास की कोठरी से आता है। आज उसमें ज्यादा आग्रह है, ज्यादा उल्लास है और आवाज भी ऊँची है।

हमारे पास जो अच्छे-से-अच्छे कपडे है उन्हे हम पहनते है। सभी कोठरियो मे लोग यही करते है।

हम बहुत ठाठदार नाश्ता करते हैं। ट्रस्टी कोठरी के खुले हुए दरवाज़ो के सामने बिना दूध का काला कहवा, डबल रोटी और पानी लिये दौड़ते फिरते हैं। मई दिवस की शुभकामना के रूप मे कामरेड स्कोरेपा हमें दो के बदले

तीन 'बन' देते हैं। एक सजग आत्मा की शुभकामना, एक ऐसे व्यक्ति की, जो अपनी भावनाओ की अभिव्यक्ति का कोई न कोई अनूठा तरीका निकाल ही लेता है। 'बनों' के नीचे हमारी उँगलियाँ एक दूसरे को छूती हैं और बहुत धीरे से ही सही मगर दबाती हैं। बोलने की कोई हिम्मत नही कर सकता — वे हमारी आँखों के भाव की भी कड़ी निगरानी रखते हैं। लेकिन गूँगे अपनी उँगलियों से ही आपस मे अच्छी तरह बात कर लेते है।

हमारी खिड़की के नीचे कैदिनें कसरत के लिए बाहर आती हैं। मैं जँगले मे से नीचे देख सकने के लिए मेज पर चढ़ जाता हूँ। शायद वे ऊपर की ओर नजर उठायें। वे मुझे देख लेती हैं और मुट्ठियाँ बाँधकर लाल सलाम करती हैं। और एक बार और। नीचे सहन में बड़ा अच्छा है — और दिनों के मुकाबले मे सचमुच उल्लासपूर्ण। संतरी यह सब देखता नही — या देखना नही चाहता। वह भी मई दिवस की परेड का एक अंग है।

फिर हमारी बारी आती है और आज मुझी को कसरत करवानी है। आज पहली मई है दोस्तो, हमें कोई नयी चीज शुरू करनी चाहिए, संतरी देखता हो चाहे न देखता हो। पहली कसरत हथौड़ा घुमाना है — एक दो, एक दो। दूसरी है फसल काटना। हथौड़ा और हँसिया — बात लोगों की समझ मे आ जाती है। सभी लोगो मे मुसकराहट की एक लहर-सी दौड़ जाती है और लोग उत्साह के साथ कसरत करने लगते हैं। यह हमारा मई दिवस का प्रदर्शन है साथियो; यह मूक अभिनय मई दिवस की हमारी शपथ है कि हम दृढ़ रहेंगे, हम भी जो मौत की तरफ मार्च कर रहे हैं।

वापस कोठरियों मे। नौ बजा। क्रेमलिन के घण्टाघर मे दस बजता है और रेड स्क्वायर में परेड शुरू होती है। आओ, पापा, वे लोग इंटरनाशियोनाल गा रहे हैं। सारी दुनिया मे इण्टरनाशियोनाल गूँज रहा है, हमारी कोठरी मे भी तो गूँजे। हम इण्टरनाशियोनाल गाते हैं और एक के बाद एक कई इन्कलाबी गाने। हम अकेले नही रहना चाहते — और न हम अकेले है। हम लोग उनमे से है जो वहाँ, बाहर, दुनिया में आजादी के संग गाने की हिम्मत रखते हैं। वे भी लड़ रहे हैं, जैसे हम ...

उन सर्द दीवारो के पीछे,
जेल के हमारे साथियो,
तुम हमारे साथ हो तुम हमारे साथ हो।
गोकि तुम हमारी कतार में मार्च नही कर सकते।
हाँ, हम तुम्हारे साथ हैं।

कोठरी नंबर २६७ मे हमने इसको मई दिवस १६४३ के उत्सव का उचित उपसंहार समझा। लेकिन अंत यह नही था। औरतों की बारक की वार्डर

से लाल फौज का मार्चिङ्ग-गीत बजाती हुई वहाँ सहन में घूम रही है। फिर वह पार्टिजैन्का (छापेमार लड़की का गीत) और दूसरे सोवियत गाने सीटी बजाकर निकालती है, और इस तरह वह मर्द कैदियों की हिम्मत में अपनी हिम्मत का योग देती है। और चेक पुलिस की वर्दी पहने वह आदमी जो मेरे लिए कागज और पेंसिल लाया था और अब मेरी कोठरी के सामने पहरा दे रहा है जिसमें मेरे लिखते वक्त कोई अचानक आ न जाय। और वह दूसरा चेक संतरी जिसने मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया और अब मेरे लिखे हुए कागज उस दिन तक के लिए कही छिपाने को ले जाता है जिस दिन कि वे छप सकेंगे। कागज के इस टुकड़े के लिए उसे अपने सिर की कीमत भी चुकानी पड़ सकती है, लेकिन वह सीखचों मे बन्द आज और आजाद कल के बीच कागज़ का एक पुल बनाने के लिए अपनी जान खतरे मे डालता है। वे सब एक ही लड़ाई लड रहे है, बहादुरी के साथ लड रहे है, जहाँ कहीं भी वे हों, जो भी हथियार उनके हाथ आयें। इतनी सादगी से वे इस लड़ाई को लडते हैं, किसी तरह का प्रदर्शन का भाव नही और किसी तरह के दर्द से इस कदर खाली कि उन्हे देखकर तुम समझ ही नही सकोगे कि वह एक ऐसी लड़ाई लड़ रहे है जो मौत के संग खत्म होगी, जिसमे जान बचने और जान जाने में सिर्फ एक सूत का फर्क होता है।

दस बार, बीस बार तुमने क्रांति के सैनिकों को मई दिवस के रोज परेड करते देखा है, और कितनी शानदार थी वह भीड़। लेकिन लड़ाई में ही फौज की असली ताकत का पता चलता है। और तब तुमको मालूम होता है कि यह सेना अजेय है। मौत जैसा कि तुम उसके बारे मे सोचते थे उससे कही आसान है और वीरता के इर्द-गिर्द देवमूर्तियो जैसा कोई अलौकिक ज्योतिमण्डल नही है। लेकिन लडाई जैसा कि तुमने उसे खयाल किया था, उससे कही ज्यादा निर्मम है और अन्त तक डटे रहने और जीतने के लिए असीम शक्ति लगती है। तुम इस सेना को आगे बढते देखते हो, लेकिन इसमे कितनी ताकत है, इसे सदा अनुभव नही करते — इसकी चोटें इतनी सीधी-सादी मगर बेपनाह पड़ती हैं।

आज यह बात तुम्हारी समझ मे आती है। १९४३ के मई दिवस की परेड के वक्त।

यकुम मई १९४३ ने कुछ देर के लिए इस कहानी के प्रवाह को खंडित कर दिया। स्वाभाविक भी था। त्योहार के मौको पर इंसान कुछ दूसरे ही ढग से सोचता है, और आज मुझे जो खुशी महसूस हो रही है, मुमकिन है इस दिन की मेरी याद को वह बिगाड दे।

लेकिन पेचेक बिल्डिंग का 'सिनेमा' निश्चय ही कोई अच्छी लगनेवाली चीज न थी। यह यातनागृह से लगा हुआ बडा कमरा है, जहाँ से तुम्हे दूसरों

की चीखें और कराहें सुनायी देती है और तुम सोचते हो कि तुम पर क्या गुजरनेवाली है। उसके अन्दर लोग दाखिल होते है तंदुरुस्त और ताकतवर और दो-तीन घंटे बाद निकलते है यातनाओं से टूटे हुए, कुचले हुए, लँगडे और लूले और जख्मी और बेकार। अन्दर जाते वक्त एक ताकतवर मर्दानी आवाज तुमसे विदा लेती है — और लौटने पर वही आवाज दर्द से रुँधी होती है, उखडी-उखडी, बुखार की-सी हालत मे। और कभी-कभी तो इससे भी बुरी चीज देखने को मिलती है। तुम्हारे सामने एक आदमी अन्दर दाखिल होता है, उस वक्त उसकी निगाहे साफ और सीधी होती हैं; मगर जब वह लौटता है तब तुमसे आँख नही मिला सकता, उसकी निगाह मे चोर होता है। वहाँ यातनागृह मे एक पल के लिए उसमें कमजोरी आयी थी, अनिश्चय, डर और अपनी जान बचा लेने की अत्यन्त प्रबल इच्छा का एक पल, बस एक पल। मगर इसका मतलब है कि कल वे लोग नये शिकारों को लायेंगे, जिन्हें शुरू से लगा कर तमाम यातनाएँ सहनी होंगी, वे लोग जिनका सुराग उस साथी ने दुश्मन को दिया।

वह आदमी जिसका शरीर बेकार और लुंज कर दिया गया है उससे भी बुरा और तकलीफदेह उस आदमी को देखना है जिसका साहस टूट गया हो, और जिसकी अन्तरात्मा बुझ गयी हो। मगर मौत, जो यहाँ घूमती फिरती है, अगर उसका स्पर्श तुम्हारी आँखो को लगा है, अगर पुनर्जन्म ने तुम्हारी ज्ञानेन्द्रियों को जगाया है, तो बिना एक शब्द के तुम जान जाओगे कि किसके पैर काँप गये, किसने किसी दूसरे का भेद बताकर उसके संग दगा की, किसने एक पल के लिए ही सही यह विचार अपने मन में आने दिया कि सर खम कर देना ही ठीक है और अपने साथियों मे सबसे मामूली से एक आदमी का नाम बतला देने मे ऐसा बड़ा हर्ज भी क्या है! जो कमजोरी के शिकार होते हैं वे सचमुच बड़े दयनीय हैं। उनकी वह जिन्दगी क्या होगी जिसका मूल्य उन्होंने एक दूसरे साथी की जिन्दगी से चुकाया है!

मुमकिन है पहली बार जब मैं सिनेमा मे बैठा था तब यह विचार मेरे मन मे न आया हो, लेकिन अकसर यह बात मेरे मन मे आती। बिलकुल भिन्न परिस्थितियों में यह विचार उस दिन मेरे मन मे आया, उस कमरे नम्बर ४०० मे जो अक्ल और समझ की खान है।

मुझे सिनेमा मे बैठे अभी ज्यादा देर नही हुई थी, शायद एक घंटा, शायद डेढ घंटा जब किसी ने पीछे से मेरा नाम पुकारा। दो शहरी लोगों ने जो चेक बोलते थे मुझे अपनी निगरानी मे लिया, लिफ्ट मे मुझे लिटाया, चौथी मंजिल पर बाहर निकाला और एक दूसरे बड़े कमरे में ले गये जिसके दरवाजे पर नंबर ४०० की तख्ती लटक रही थी।

पहले तो मैं अपने आप बैठा रहा, दीवार के पास की उस अकेली कुर्सी पर

बिलकुल अकेला, और कुछ इस भाव से अपने चारो ओर निहारता रहा जैसे अभी इस मुहूर्त के पहले भी मैं एक बार जी चुका हूँ। क्या मैं इसके पहले कभी यहाँ आया था ? नही, कभी नही । लेकिन यह सब मेरा जाना-पहचाना है। मै इस कमरे को जानता हूँ । इसके बारे मे एक बुखार की-सी हालतवाला क्रूर सपना देख चुका हूँ । उस सपने ने इस कमरे की शकल बिगाड़ दी थी और उसे मेरी आँखो मे बेहद घृणित बना दिया था, लेकिन ऐसा नही कि मैं उसे पहचान न सकूँ । अभी तो यह बडा आकर्षक लग रहा है, कमरे में रोशनी भर रही है और रंग साफ नजर आता है, टिन चर्च और लेट्ना का हरा बाग और किला, जो सब बडी-बडी खिडकियों और उनके हलके जालीदार पर्दों के बीच से दिखायी देते हैं । मेरे सपने मे तो वह कमरा बिलकुल अँधेरा था और एक खिड़की नही, उसका रंग मटमैला पीला-सा और उनके बीच आदमी छाया जैसा दीख पड़ता । हाँ यहाँ तो आदमी थे । अब यह खाली है और पास-पास एक के पीछे एक छ बेंचें, डैडेलियन[1] और बटरकप[2] के चमकदार हरे मैदान-सी लगती हैं । सपने में तो यह जगह आदमियों से भरी लगती थी, बेंचों पर एक दूसरे से सट कर बैठे हुए, उनके चेहरे पीले और खून से लथपथ । वहाँ, दरवाजे के काफी पास, काम के समय का नीला चोगा पहने एक आदमी खडा था, जिसकी आँखें संत्रस्त थी, जो पीना चाहता था, पीना, और जो गिरते हुए पर्दे की तरह फर्श पर ढेर हो गया ...

हाँ, ऐसी ही थी मेरी कल्पना, लेकिन अब मेरी समझ मे आता है कि वह *सपना नही था । वह डरावना सपना नहीं था, वह हो चुका था ।*

मेरी गिरफ्तारी और पहली पेशी की उस रात को । वे तीन बार मुझे यहाँ लाये थे — शायद दस बार, मुझे क्या मालूम — जब भी वे आराम करना चाहते या किसी और की मरम्मत करना चाहते । मैं नंगे पैर था और मुझे याद है फर्श की टाइल ने मेरे सूजे हुए पैरो को ठंडक पहुँचायी थी तो मुझे कितना अच्छा लगा था ।

युंकर्स कारखाने के मजदूरों से उस रात बेंचे भरी थी — गेस्टापो की उस *शाम की गिरफ्तारियाँ थी वे । नीला, लम्बा-सा चोगा पहने जो आदमी दरवाजे* के पास खड़ा था वह युंकर्स के पार्टी सेल का कामरेड बार्टन था, मेरी गिरफ्तारी का परोक्ष कारण । इस विचार से कि कोई मेरी गिरफ्तारी के लिए जिम्मेवार न ठहराया जाय, मैं कहना चाहता हूँ कि इसकी वजह किन्ही साथियों की कायरता या विश्वासघात नही बल्कि सिर्फ लापरवाही और दुर्भाग्य है । कामरेड बार्टन

---

१. ककरौंदा, पीले फूल का पौदा जिसकी पत्तियाँ दानेदार होती है ।

२. *प्यालानुमा फूल का पौदा ।*

अपने सेल की तरफ से, हिटलर-विरोधी छापेमार आंदोलन के बडे-बडे नेताओ से संपर्क कायम करने की कोशिश कर रहे थे। उनके मित्र कामरेड जेलिनेक ने उनकी ओर से संपर्क स्थापित करने का वायदा करके अंडरग्राउण्ड आन्दोलन का नियम भङ्ग किया, जब कि करना उन्हे यह चाहिए था कि पहले मुझसे कहते कि मैं सीधे कामरेड बार्टन से सपर्क स्थापित कर लूँ, ऊपर से नीचे। वह एक गलती थी। दूसरी गलती यह हुई कि ड्वोराक नाम का खुफिया कामरेड बार्टन के पास से जेलिनेक का नाम जान गया। इस तरह जेलिनेक परिवार गेस्टापो के पंजे मे आ गया, किसी बड़े काम को करने मे असफल रहने के कारण नही — वह तो वे लगन और ईमानदारी से दो साल से करते आ रहे थे — बल्कि उस छोटी-सी सेवा के कारण जो अंडरग्राउंड आंदोलन के नियमो का थोडा-सा उल्लंघन करती थी। ऐसा हुआ कि उन्होने उसी शाम जब कि मै जेलिनेक के यहाँ गया था, जेलिनेक दंपती को गिरफ्तार करने का निश्चय पेचेक बिल्डिग मे किया था और यह बिलकुल आकस्मिक बात थी कि वे लोग इतनी संख्या मे और इतनी तैयारी से वहाँ गये थे। वैसी कोई योजना पहले से नही बनायी गयी थी; जेलिनेक दम्पति को वे लोग दूसरे रोज पकडनेवाले थे। लेकिन युंकर्स के पार्टी सेल के सदस्यों को पकडने मे गेस्टापो को कामयाबी मिली तो मारे जोश और खुशी के वे हँसी-हँसी में ही जेलिनेक के यहाँ गये थे। उनके आ जाने से हमको जितना अचम्भा हुआ, उससे कम अचम्भा उनको मुझे वहाँ पाकर नही हुआ। उन्हे यह भी मालूम नही था कि उन्होने किसको पकडा है। और शायद उन्हे कभी पता न चलता अगर उसके साथ-साथ ...

यह विचार सबसे पहले नंबर ४०० मे मेरे दिमाग मे आया था। इसको आगे बढाने का मौका मुझे बहुत देर मे मिला। तब तक मेरा अकेलापन खत्म हो गया था, अब बेंचें भर चुकी थी और दीवारों से लगी एक कतार खड़ी थी और एक से एक अनहोनी बातो को अपने गर्भ में छिपाये घण्टे तेजी के साथ बीतते जा रहे थे। इनमे से कुछ तो ऐसी अजीब थी कि उन्हें मैं समझ नही सका; कुछ मे दुष्टता कूट-कूटकर भरी थी, और उन्हे मैं खूब समझता था।

पहली अनहोनी बात न तो ऐसी अनहोनी ही थी और न दुष्टतापूर्ण, वह तो बल्कि एक नेकी की बात थी, बहुत छोटी-सी और महत्वहीन, लेकिन तब भी मैं उसे कभी नही भूलूंगा। गेस्टापो के उस आदमी ने जो मुझे गौर से तक रहा था — मुझे याद आता है वह वही था जिसने मेरी गिरफ्तारी के बाद मेरी एक-एक जेब उलट कर तलाशी ली थी — अपनी जलती हुई आधी सिगरेट मेरी तरफ फेंकी। तीन हफ़्तों में पहली सिगरेट, उस आदमी के लिए जो एक बार फिर जमीन पर लौट आया था। मैं इसे उठा लूं ? कही वह यह तो नहीं सोचेगा कि एक सिगरेट मे उसने मुझे खरीद लिया। मगर जिस निगाह मे वह

सिगरेट को देख रहा है वह बिलकुल खुली हुई, निष्कपट है; किसी को खरीदने में उसे कोई दिलचस्पी नही है। लेकिन मैं पूरी सिगरेट नही पी सका। हाल के पैदा हुए बच्चे बहुत सिगरेट नही पी सकते।

दूसरी अनहोनी बात — चार आदमी फौजी ढंग से मार्च करते हुए आते है और उपस्थित लोगो को, मुझे भी, चेक जबान मे नमस्कार करते हैं। वे मेज के पीछे बैठ जाते है, कागजात फैला देते हैं, सिगरेट जला लेते है, सब बहुत आराम से जैसे वह ज्यादा कुछ नही महज अफ़सर हो। लेकिन मै उन्हें जानता हूँ, कम से कम तीन को जानता हूँ — क्या यह मुमकिन है कि वे गेस्टापो के संग काम करें ? शायद — लेकिन ये तीनो भी ? क्यों, वह तो टेरिग्ल है या रेनेक जैसा कि हम लोग उसको पुकारते थे, बहुत दिनों तक यूनियन और पार्टी का सेक्रेटरी रहा, प्रकृति तो उसकी चञ्चल और उद्दण्ड जरूर थी, लेकिन उसकी वफादारी मे कोई सन्देह नही। नही, यह कभी नहीं हो सकता ! वह आंका विकोवा है, अब भी वह खूबसूरत है और उसकी कमर सीधी है, गो उसके बाल एकदम सफेद हो गये हैं। वह बडी निडर और दृढ संकल्प की लडनेवाली थी — नही, यह कभी नही हो सकता ! और वह देखो वाशेक रेजेक है, उत्तरी बोहेमिया की खानो मे काम करनेवाला राजगीर और फिर पार्टी का जिला-मन्त्री — मैं उसे खूब अच्छी तरह जानता हूँ। उन तमाम लडाइयो के बाद जो हम लोगो ने संग-संग उत्तर के इलाको मे लडी, आखिर कोई भी चीज कैसे उसकी कमर तोड सकती थी ? नही, ग़ैर मुमकिन ! लेकिन यहाँ के लोग कर क्या रहे है ? ये लोग चाहते क्या है ?

मैं अभी इन सवालो का जवाब भी नही ढूंढ पाया था कि नये सवाल पैदा हो गये। वे लोग मिर्का, जेलिनेक दंपती और फ्रीड दंपति को अन्दर लाये — हाँ मैं जानता हूँ कि वे लोग मेरे संग पकडे गये थे। लेकिन कला का इतिहासवेत्ता पावेल क्रोपाचेक जिसने बुद्धिजीवियो के बीच काम करने में मिरेक की मदद की थी, वह यहाँ कैसे आया ? यह बात मेरे और मिरेक के अलावा और कौन जानता था ? और वह लंबा सा नौजवान आदमी जिसका चेहरा भुर्ता कर दिया गया है यह दिखलाने की कोशिश क्यो कर रहा है कि हम लोग एक दूसरे को नही जानते ? मै सचमुच उसे नहीं जानता। लेकिन वह कौन हो सकता है ? क्यो, वह तो श्टिच है। श्टिच, डाक्टर जडेनेक श्टिच ? या ख़ुदा, इसका मतलब है डाक्टरो की कमेटी तक उनके पंजे पहुँच गये। लेकिन उनके बारे मे सिवाय मिरेक के और मेरे और कौन जानता था ? और जेल की कोठरी मे मुझे सता-सताकर वे लोग मुझसे बुद्धिजीवियों के बारे में क्यो पूछ रहे थे ? बुद्धिजीवियों के बीच जो काम हो रहा था उसके संग मुझे जोडने की अक्ल उनमे कहाँ से आयी ? उसके बारे मे सिवाय मिरेक के और मेरे, तीसरा कौन जानता था ?

जवाब पाना कुछ कठिन नही था, लेकिन था वह एक क्रूर आघात — जरूर मिरेक ने ही जवान खोली है, उसने हम सब लोगों को पकड़वाया होगा। एक पल के लिए मेरे मन मे यह आशा आयी कि मुमकिन है उसने सब कुछ न बताया हो, लेकिन थोडी ही देर में कैदियो का दूसरा गुच्छा आया और मैंने देखा कि उसने क्या कर डाला है।

हर वह व्यक्ति, जो चेक बुद्धिजीवियो की राष्ट्रीय क्रान्तिकारी समिति का सदस्य समझा जाता था इस समय यहाँ पर मौजूद था — व्लाडिमीर वाचुरा, लेखक; प्रोफेसर फेलवर और उसका लडका, बेडरिक वावलाबेक, जो इतनी सफाई से भेस बनाये था कि पहचाना नही जा सकता था, बोजेना पुलपानोवा, जिडरिक एलुव्न, मूर्तिकार डवोराक। मिरेक ने जरूर बुद्धिजीवियो के बीच काम की तमाम बातें बतला दी होगी।

पेचेक बिल्डिंग मे पहली बार जो मेरा वक्त गुजरा वह भी कुछ बहुत आराम का नही था, लेकिन यह आघात जो मुझे सहना पडा सब से ज्यादा क्रूर था। मैंने मौत की बात सोची थी, गद्दारी की नही। उसके बारे मे राय बनाते वक्त मैं कितनी ही नर्मी से काम क्यो न लेता, उसके अपराध को कम करनेवाली कैसी-कैसी परिस्थितियाँ ही क्यो न सोच डालता, लेकिन उस सबके बाद भी मैंने उससे उम्मीद यही की थी कि वह दुश्मनो को कुछ बतायेगा नही और अब उसकी इस हरकत के लिए मेरे पास गद्दारी के सिवा और कोई शब्द नही है। यह पैरो की थरथरी या कमजोरी न थी और न यह ऐसे आदमी की कातर भूल थी जिसे यातनाएँ दे-देकर मौत के पास पहुँचा दिया गया हो — इन चीजो को इन्सान माफ कर सकता है। अब मेरी समझ मे आया कि उस पहली रात को ही उन्हे मेरा नाम कैसे पता चल गया। अब मैं जान गया एनी जिरासकोवा यहाँ कैसे आयी, क्योकि मैं दो बार उसके घर पर मिरेक से मिला था। अब मैं समझ गया क्रोपाचेक और डाक्टर श्टिच यहाँ क्यो आये।

उसके बाद मैं रोज नम्बर ४०० मे ले जाया जाता, और रोज कुछ नयी-नयी तफसीलें खुलती। यह बडी करुण और बड़ी भयानक बात थी। यह एक हिम्मतवर आदमी था, उसे गोलियो का डर नही था जब कि वह स्पेन के मोर्चे पर लडा था और न ही उसने फ्रास के एक कंसेंट्रेशन कैंप की बेरहम जिन्दगी के आगे ही सिर झुकाया। लेकिन गेस्टापो के आदमी के हाथ मे छड़ी देखकर वह पीला पड गया था, और अपने दाँत बचाने के लिए उसने हमारे संग गद्दारी की थी। कितना ओछा था उसका विश्वास और उसकी हिम्मत, जो कुछ चोटो से बचने की खातिर टूट गयी। बहुत से लोगों के बीच रहने पर, जब उसके चारो ओर उसके जैसे खयाल के साथी होते, तब उसमे हिम्मत रहती। जब तक वह उनके बारे में सोचता रहता तब तक उसमें ताकत रहती। लेकिन सबसे कटकर अलग

जा पडने पर, कमजोरी की खोज में घावो मे उँगलियां दौडानेवाले दुश्मन के वीच अकेला पड जाने पर, उसकी सारी ताकत हवा हो जाती, उसका सब कुछ नास हो जाता क्योंकि वह अपने बारे मे सोचने लगता। अपनी जान बचाने की खातिर उसने अपने साथियों को हलाक कर दिया, कमजोरी को जगह दी और कमजोरी ही मे गद्दारी कर गया।

वह भूल गया कि इशारों की जवान में लिखे गये जो कागजात उसके कमरे मे पाये गये थे, उनका मतलब खोल कर रखने से कही अच्छा होता कि वह मरना कबूल करता। उसने उन तमाम कागजों के मतलब खोल कर उनके सामने रख दिये। उसने उन्हे (क्रान्तिकारियों के) नाम दिये, वह पते दिये जहाँ वे लोग छिप कर रहते थे। श्टिच के संग कही मिलने का उसने वायदा किया था, वहाँ वह अपने साथ गेस्टापो के एक आदमी को लेता गया। ड्वोराक के घर में वाक्ला वेक और क्रोपाचेक को लेकर एक मीटिंग हो रही थी, वहाँ उसने पुलिस को भेजा। एनी को उसने खुद पुलिस के हवाले किया। लिडा वहादुर लड़की थी और उससे प्यार करती थी, उसके संग भी उसने गद्दारी की, उसे भी पकड़वाया। जो बातें उसे मालूम थी उनका आधा तो उसने दो ही चार मुक्कों-घूँसों में उगल दिया। और जब उसने समझा कि मैं मर गया और अब किसी के सामने उसे जवाबदेही नही करनी पड़ेगी, तो उसने बाकी सब भी कह डाला।

इस सब मे वह मुझे कोई नुकसान नही पहुँचा सकता। मैं तो गेस्टापो के हाथ मे पहले ही से था—मुझे अब क्या चीज नुकसान पहुँचा सकती थी। लेकिन उसके जवाबों ने एक बहुत लंबी-चौडी छान-वीन के लिए जमीन तैयार की, गवाहियो का एक सिलसिला शुरू किया जो होते-होते मुझ तक पहुँचता था। उसने ऐसी-ऐसी बातें उन्हे बतलायी जिन्हे जान कर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। क्या मैंने और मेरे साथ के दूसरे लोगो ने इसीलिए मार्शल लॉ की जिन्दगी गुजारी थी? उसके और मेरे चले जाने के बाद मेरा दल तो न रह जाता। लेकिन अगर उसने अपना मुंह बन्द रखा होता तो उसके और मेरे मर जाने के बहुत जमाने बाद भी उसका दूसरा दल जीता और काम करता होता।

कायर आदमी सिर्फ अपनी ही जिन्दगी से हाथ नही धोता। यह आदमी एक नायाब फौज का साथ छोड़कर भागा और सबसे घृणित दुश्मन के आगे जाकर उसने आत्मसमर्पण कर दिया। यों वह अब भी जिन्दा है, लेकिन सच पूछिए तो वह कभी का मर चुका, क्योंकि उसने अपने दल से अपने आपको अलग कर लिया। बाद में उसने अपनी गलती का भुगतान करने की कोशिश की, लेकिन उसे फिर वापस लिया नहीं गया। और यह सामाजिक बहिष्कार जेल मे तो और भी असह्य हो जाता है।

कैद और अकेलापन, इन दो बातों को अकसर लोग एक समझते है, लेकिन यह बहुत बडी गलती है। कैदी अकेला नही होता। जेल भी एक बिरादरी है और सख्त से सख्त कालकोठरी भी उसे अपने दोस्तो से अलग नही कर सकती – जब तक कि वह खुद अपने आपको अलग न कर ले। गुलामों की बिरादरी पर जो जोर-जबर्दस्ती होती है वह उसको और भी ताकत देती है, सब को एक ही धागे में पिरो देती है, यहाँ तक कि सब एक दूसरे के दुख-सुख के साझीदार बन जाते है। वह दीवारों मे घुस जाती है और दीवारो मे जान आ जाती है, वे बोलने और खट्-खट् की जबान में संदेशा पहुँचाने लगती है।

यह बिरादरी हर बारक की कोठरियो को अपने मे समेट लेती है, ये तमाम बारके जिनके एक से काम है, एक-सी परीशानियाँ है, जिनके एक ही संतरी है और खुली हवा मे कसरत के जिनके घण्टे भी एक ही है। वे जब कोठरियो के बाहर एक दूसरे से मिलते है तब एक शब्द या एक इशारा कोई खबर पहुँचाने या कभी-कभी एक आदमी को जान बचाने के लिए काफी होता है। यह बिरादरी उन कैदियो को एकता की डोर में बाँध देती है जो पेशी के लिए एक संग ले जाये जाते है, साथ-साथ 'सिनेमा' मे बैठते है। इस बिरादरी में शब्दो का लेन-देन बहुत कम होता है, मगर सेवाएँ बहुत बड़ी, क्योंकि एक बार हाथ का मिलाना या एक सिगरेट का उपहार तुमको बन्द करके रखनेवाले कठघरे के सीखचे तोड देने के लिए, और तुम्हे उस अकेलेपन से मुक्त करने के लिए काफी है जिसका उद्देश्य तुमको तोड़ देना है। कोठरियो के हाथ होते हैं और तुमको महसूस होता है कि जब तुम अमानुषिक यातनाएँ भुगतकर लौटते हो तब वे तुम्हें अपनी बाँहों मे लेकर गिरने से बचा लेती है! वे तुम्हे खाना खिलाती हैं, जब दूसरे तुम्हें भूखों मार रहे होते है। कोठरियों के आँखें होती है और तुम जब फाँसी के लिए विदा होते हो तब वे तुम पर निगाह रखती है और तुमको महसूस होता है कि तुम्हें कमर सीधी करके चलना चाहिए, तनकर, बिना डरे क्योंकि तुम उनके भाई हो और तुम्हारा एक भी कदम डगमगाना नही चाहिए क्योंकि उस कोठरी को तुम्हें कमजोर नही करना है। यह एक ऐसी बिरादरी है जिसके हजार घावो से खून बहता रहता है लेकिन तब भी वह अजेय है। बिना उसके सहारे के तुम अपने सिर पर आये हुए बोझ का एक दसवाँ हिस्सा भी नही उठा सकते। न तुम न आदमी का जाया और कोई।

अगर मैं यह कहानी जारी रख सका (क्योंकि इंसान को न दिन मालूम है न घण्टा) तो उसमे नम्बर ४०० का जिक्र बार-बार आवेगा, इस अध्याय का शीर्षक भी तो वही है। पहले मुझे उसका ध्यान एक कमरे की शक्ल में आया, और वहाँ पर मेरे मन में जो विचार पहले-पहल आये उन्हें किसी तरह सुखद नही कहा जा सकता। मगर यह कमरा नही, एक कलेक्टिव (समष्टि)

है, एक सोद्देश्य, लडनेवाली टोली है, और सुखी भी।

गेस्टापो की कम्युनिस्ट-विरोधी टुकड़ी का काम बढ़ने के साथ-साथ यह 'सिनेमा' सन् ४० में शुरू हुआ। पहले यह 'अंदरूनी जेल विभाग' की कम्युनिस्टो के लिए नियत शाखा थी, कम्युनिस्टो को यही बैठकर इन्तजार करने की हिदायत थी जिसमे हर बार जब गेस्टापो का अफसर उनसे कोई सवाल पूछना चाहे तो उन्हे पहली मंजिल से चौथी मंजिल पर ले जाने की परीशानी बच जाय। उनका खयाल था कि इससे उनका काम आसान हो जाता है; यह 'सिनेमा' खोलने मे यही उनका उद्देश्य था।

अगर आप दो आदमियों को साथ रख दें, और खास तौर पर अगर वे कम्युनिस्ट हो तो पाँच मिनट में उनका संगठन तैयार हो जाता है और आपकी तमाम योजनाओ को तहस-नहस कर चलता है। सन् ४० मे 'सिनेमा' का नामकरण हुआ 'कम्युनिस्ट सेन्ट्रल' और उसमे बहुत से परिवर्तन हुए। हजारों साथी, मर्द और औरतें, बारी-बारी से इनकी बेंचो पर बैठे। लेकिन एक चीज कभी नही बदली — इस समष्टि की आत्मा, इस समष्टि की जिसमे लडने की लगन है और जिसे अन्तिम विजय में दृढ विश्वास है।

नम्बर ४००, लड़ाई के मैदान मे एक बहुत आगे बढी हुई खाई थी जो दुश्मनो से पूरी तरह घिरी हुई थी, जिस पर हर तरफ से गोलियो की बौछार हो रही थी, लेकिन जो दुश्मन के आगे हथियार डालने की बात एक मिनट के लिए भी सपने मे भी नही लाती थी। यहाँ लाल झंडा फहराता है। अपनी आजादी के लिए लडनेवाले समूचे राष्ट्र की पूर्ण एकता हमारी इस समष्टि की दृढ एकता मे अभिव्यक्त होती है।

नीचे, खास 'सिनेमा' मे एस. एस. के संतरी ऊँचे-ऊँचे बूट पहने गश्त लगाते; तुम्हारी आँख जरा-सी झँपी नही कि उन्होंने चिल्लाकर तुमको गाली दी। ऊपर नम्बर ४०० में चेक इन्सपेक्टर और पुलिस विभाग के गुप्तचरो की ड्यूटी लगती। ये लोग चाहे अपनी इच्छा से चाहे अपने बड़े अफसरों के हुक्म से दुभाषिए की हैसियत से गेस्टापो की नौकरी मे दाखिल होते और गेस्टापो के गुप्तचरो का काम करते — या काम करते असली चेको का। कभी-कभी दोनो ही। यह कुछ जरूरी न था कि आप यहाँ हाथ घुटनो पर और आँखें सीधे सामने को तकती हुईं, अटेंशन की हालत मे बैठें। आप आराम से भी बैठ सकते थे, अपने चारों तरफ ताक भी सकते थे, अपने हाथ भी हिला-डुला सकते थे। आप इससे ज्यादा भी कुछ कर सकते थे, मगर यह बात इस पर निर्भर थी कि इन तीनो में से किस किस्म के संतरी उस वक्त ड्यूटी पर है।

नम्बर ४०० मे मानव प्राणी को बहुत पास से देखने और समझने का मौका मिलता है। मृत्यु की समीपता हम सभी को उघाड़कर अपनी असली नंगी शकल

भी सच्चे और क्रान्ति के प्रति वफादार बने रहे, मदद करने लगे।

बाहर, हमारे कितने ही सैनिकों के पैर डिग गये होते अगर उन्हें इस बात का कुछ भी अंदाजा होता कि एक बार गेस्टापो के हाथ में पड जाने पर उनकी क्या गत बनेगी। यहाँ, जेल के ये वफादार साथी — इनकी आँखों के सामने हर रोज हर घंटे ये डरावनी बातें होती थी। हर घटे इस अंदेशे मे उनकी जिन्दगी चल रही थी कि उन्हें भी कैदियो के संग डाल दिया जायगा और फिर उनसे भी ज्यादा सख्त इम्तहान उनकी हिम्मत और इंसानियत का लिया जायगा। लेकिन वे डिगे नही। उन्होने हजारों लोगों की जानें बचाने में मदद की और जिनकी जान वे नहीं बचा सके उनकी तकलीफ को कम करने की उन्होंने कोशिश की। वे सच्चे अर्थों में वीर है। उनके बिना नंबर ४००, हजारो कम्युनिस्टो के लिए वह कुछ न बन पाता जो कि वह बना। एक अँधेरी इमारत मे रोशनी का एक टुकडा, दुश्मन की पाँतों के पीछे हमारी एक खाई, आक्रमणकारी की माँद मे ही आजादी की लड़ाई का केन्द्र।

□

स्तालिनग्राद के मोर्चे पर जर्मनों को हार खानी पड़ी है। जब वे तुम्हे अपने चेक बाप-दादाओं के बारे मे बतलाना शुरू कर दें या कहें कि उन्हें मजबूरी से गेस्टापो की नौकरी करनी पड़ती है — तब फिर क्या कहने, इसका साफ मतलब है कि लाल फौज रोस्तोव पर चढाई कर रही है। एक और तरह का जानवर होता है जो उस वक्त जब कि तुम डूबते रहते हो, अपने जेब से हाथ नही निकालता, लेकिन जब तुम अपनी मेहनत से, किसी तरह मरते-खपते किनारे तक पहुँच जाते हो तब वह तुम्हारी तरफ बड़ी मुस्तैदी से अपना हाथ बढा देता है !

इस किस्म के लोग अपनी सहज अंतश्चेतना से नंबर ४०० की संघशक्ति को अनुभव करते और उस शक्ति के ही कारण उसके पास पहुँचने की कोशिश करते। मगर वे कभी उसका अंग न बन पाते। एक और भी किस्म के लोग थे जो यह समझ ही न सके कि ऐसा संघ कही है भी। मैं उन्हें खूनी कहूँगा, लेकिन खूनी मनुष्य-जाति के होते है। वे चेक-भाषी दरिन्दे थे, जिनके हाथ मे डंडे और लोहे की छड़ें थी, जो हमें ऐसी यातनाएँ देते कि बहुत से जर्मन कमीसार देख न पाते और मैदान छोड कर भाग खड़े होते। वे अपनी वासनाओं के सयम का ढोंग भी नही करते — न अपने राष्ट्र के लिए न राइख के लिए। वे लोगो को यातनाएँ इसलिए देते कि उन्हे इसमें मजा आता; वे हमारे दाँत तोड़ कर गिरा देते, कानो के पर्दे फाड़ देते, आँखें निकाल लेते, पेड़ू मे ठोकरें मारते या मारते-मारते हमारा भेजा निकाल लेते और यह सिर्फ अपने भीतर की क्रूर पाशविकता को संतुष्ट करने के लिए। वह हर रोज दिखायी देते और तुम्हे उनकी मौजूदगी सहनी पड़ती, वह मौजूदगी जो हवा को मौत और खून मे भारी कर देती है। उनके विरुद्ध अकेला कवच जो तुम्हारे पास था वह था इस बात का दृढ विश्वास कि चाहे वे अपने जुर्मों के आखिरी गवाह तक को मार क्यों न डालें, लेकिन के बच न सकेंगे, और एक न एक दिन उन्हे इन्साफ की गिरफ्त में आना होगा।

इसी किस्म के लोगो के साथ वे भी थे जो सचमुच इंसान थे, जिनका नाम सोने के अक्षरों मे लिखा जाना चाहिए। वे लोग जो जेल के नियमों का इस्तेमाल कैदियों की रक्षा के लिए करते, जिन्होने नंबर ४०० के जेल कलेक्टिव को बनाने में मदद पहुँचायी और जो अपने पूरे दिल से और हिम्मत से उसके होकर रहे। उनकी महत्ता इसलिए और भी है कि वे कम्युनिस्ट नही थे; इसके विपरीत, संभव है उन्होने चेक पुलिस गुप्तचरो की हैसियत से कम्युनिस्टो के खिलाफ काम भी किया हो लेकिन उन्होने जब हमें आक्रमणकारियो से लोहा लेते देखा तब उनकी समझ मे आ गया कि राष्ट्र के लिए कम्युनिस्टों का क्या महत्व है, और उस वक्त मे वे हम सब लोगो को, जो जेल की उन बेंचों पर

भी सच्चे और क्रान्ति के प्रति वफादार बने रहे, मदद करने लगे।

बाहर, हमारे कितने ही सैनिकों के पैर डिग गये होते अगर उन्हें इस बात का कुछ भी अंदाजा होता कि एक बार गेस्टापो के हाथ में पड़ जाने पर उनकी क्या गत बनेगी। यहाँ, जेल के ये वफादार साथी — इनकी आँखो के सामने हर रोज हर घंटे ये डरावनी बातें होती थी। हर घंटे इस अंदेशे में उनकी जिन्दगी चल रही थी कि उन्हें भी कैदियो के संग डाल दिया जायगा और फिर उनसे भी ज्यादा सख्त इम्तहान उनकी हिम्मत और इंसानियत का लिया जायगा। लेकिन वे डिगे नही। उन्होंने हजारों लोगों की जानें बचाने मे मदद की और जिनकी जान वे नही बचा सके उनकी तकलीफ को कम करने की उन्होंने कोशिश की। वे सच्चे अर्थों मे वीर है। उनके बिना नंबर ४००, हजारो कम्युनिस्टो के लिए वह कुछ न बन पाता जो कि वह बना। एक अँधेरी इमारत मे रोशनी का एक टुकड़ा, दुश्मन की पाँतों के पीछे हमारी एक खाईं, आक्रमणकारी की माँद मे ही आजादी की लड़ाई का केन्द्र।

□

पाँचवाँ अध्याय

चित्र और रेखाएँ

इतिहास के इस युग में जो लोग गुजर चुके है, मैं उनसे एक बात कहना चाहता हूँ — उन लोगो को कभी मत भूलना जो इस संघर्ष में हिस्सा ले रहे है। अच्छो और बुरो दोनो को याद रखना। जितनी भी साखी हो सके उन लोगो के बारे मे बटोरना जिन्होने तुम्हारी खातिर और खुद अपनी खातिर जान दी। यह वर्तमान, समय के फेर से, बीते दिनो का इतिहास हो जायगा; आनेवाली सदियाँ इसे एक महान् युग कहेगी जिसमें ऐसे वीरों ने इतिहास की सृष्टि की जिनका नाम कोई नही जानता। मगर उन सबके नाम थे, आकृतियाँ थी, आशाएँ और आकाक्षाएँ थी। इसीलिए उनमें जो छोटे से छोटा है उसके कष्ट और उसकी यातनाएँ भी उन बडे से बड़े लोगो से कम नही हैं जिनके नाम इतिहास मे सुरक्षित रहेगे। मैं सिर्फ यह चाहता हूँ कि तुम उन सबके सग निकटता का अनुभव करो, मानो तुम उनको जानते हो, मानो वे तुम्हारे अपने परिवार के लोग हों, मानों उनकी जगह पर तुम खुद हो।

वीरो के कुटुम्व के कुटुम्ब मौत के घाट उतार दिये गये है। उनमे से किसी को चुन लो और उसको अपने बेटे-बेटी की तरह प्यार करो; उन पर वैसा ही गर्व करो जैसा कि तुम किसी महान् व्यक्ति के लिए करते जो भविष्य के लिए जिया। वे सभी जो भविष्य के लिए जिये, जो भविष्य के प्रति आस्थावान् थे, जिन्होने भविष्य को सुन्दर बनाने के लिए अपने प्राणो की बलि चढायी, वे सभी इस योग्य है कि उनकी प्रस्तर-मूर्तियाँ बनवाई जायँ। और वे जिन्होंने अतीत की गर्द से क्राति की बाढ़ के खिलाफ मेड़ बाँधने की कोशिश की, वे मड़ती हुई लकड़ी के पुतले हैं, उनके कन्धों पर ऊँचे-ऊँचे रुतबो के चमकदार निशान चाहे जितने हो। इन लोगों को भी, इनकी सारी दयनीय क्षुद्रताओ, क्रूरता और हास्यास्पदता समेत जीती-जागती शकल मे देखना जरूरी है क्योंकि वे भी हमारी भावी कल्पना के उपादान हैं।

जेलिनेक दंपती

जोजेफ और मेरी। पति बस का कंडक्टर, पत्नी घर की नौकरानी। क्या ही अच्छा हो कि तुम उनका घर जाकर देखो। चिकना, सादा, आधुनिक

फर्नीचर, एक बुककेस, एक छोटी-सी मूर्ति, दीवार पर चित्र — और कमरे की स्वच्छता, असंभव स्वच्छता। आप कहेंगे कि मेरी का सारा अस्तित्व इसी घर मे बन्द है और वह बाकी दुनिया के बारे मे कुछ नही जानती। लेकिन ऐसा नहीं है, उसने वरसों कम्युनिस्ट पार्टी मे काम किया है और सामाजिक न्याय के अपने सपने देखे है। उन दोनो ने लगन से, मगर खामोशी के साथ, काम किया — और जब दुश्मन के आक्रमण ने उनसे बड़ी कुर्बानियों की माँग की तब वे पीछे नही हटे।

उनको छिपे-छिपे काम करते तीन बरस हो गये थे। तभी एक रोज पुलिस दरवाजे तोड़कर उनके घर में घुस आयी......

वे एक दूसरे के कंधे से कन्धा मिलाये खड़े, उनके हाथ सिर के ऊपर उठे हुए — और वहाँ एक दूसरे को छूते हुए।

मई १६, १६४३

आज वे मेरी गुस्टिना को 'काम करने के लिए' पोलैंड पकड ले जायेंगे। गुलामी की जिन्दगी, टाइफस की मौत। उसे अब कुछ हफ़्ते ही और जिन्दा रहना है, शायद दो-तीन महीने। और मेरा मामला तो अदालत के सुपुर्द कर दिया गया है। अभी शायद और चार हफ्ते पाक्राट्स में सवाल-जवाब का दौर चलेगा, फिर दो-तीन महीने और, मौत तक। मेरी ये टिप्पणियाँ कभी पूरी न होंगी। अगर अगले कुछ दिनों मे मौका मिला तो मुझसे जितना बन पड़ेगा लिखने की कोशिश करूँगा। लेकिन आज मैं न लिख पाऊँगा। आज मेरे मन पर गुस्टिना छायी हुई है। गुस्टिना — एक नेक और मुहब्बत की गरमी से गरम इंसान, जीवन मे मेरी सच्ची अनमोल दोस्त। मेरा जीवन, जिसमे गहराई तो थी मगर शान्ति? शायद कभी नही।

लगातार कई शामे मैंने उसे उसके प्यारे गाने गा-गाकर सुनाये है। स्टेप्स की वह कुछ नीली-सी घास जो छापेमारो की लड़ाइयों के शानदार किस्से अपनी नर्म आवाज मे कानो मे कह जाती है। एक कज्जाक लडकी की कहानी जो अपने पति के कन्धे से कन्धा मिलाकर आजादी के लिए लड़ी, और फिर कैसे एक लड़ाई के बाद फिर कोई उसे जमीन से उठा न सका। ओह, मेरी जाँबाज दिलेर दोस्त — उस छोटी-सी जान मे और उसके उस खूबसूरत तराशे हुए मुखडे में कितनी ताकत छिपी हुई है! उन बड़ी-बड़ी, भोली-भोली, बच्चो-जैसी आँखों मे कैसी असीम कोमलता है! इंकलाब की लड़ाई कभी थमी नहीं और उसकी खातिर हमे अकसर एक दूसरे से अलग होना पड़ता। यही कारण था कि सारी जिन्दगी हम एक-दूसरे के प्रेमी-प्रेमिका बने रहे और पहले आलिङ्गन और पहले मिलन के वे उत्तप्त क्षण सैकड़ो बार हमारी जिन्दगी में फिर-फिर

आये। हमारे दो दिलो की धड़कन एक है और वह एक ही साँस है जो हम दोनों खुशी के क्षणों और परीशानी के घण्टों मे लेते हैं, उस वक्त जब कि आवेग हमारे अंग-अंग से छलका पड़ता है और उस वक्त भी जब कि दुःख से हमारी एक-एक रग सर्द होती है।

बरसों हमने साथ काम किया है और बरसों हमने एक-दूसरे की मदद की है जैसे कि सिर्फ एक दोस्त दूसरे दोस्त की कर सकता है। बरसों उसी ने सबसे पहले मेरी रचनाओं को पढ़ा है और उनकी आलोचना की है; मुझे लिखने मे दिक्कत होती है जब तक मुझे यह एहसास न हो कि उसकी आँख मुझ पर लगी है। बरसों हमने उन संघर्षों मे एक दूसरे का साथ दिया है जिनसे हमारी जिन्दगी मालामाल रही है। बरसों हमने एक दूसरे के हाथ मे हाथ देकर इस अपनी प्यारी धरती की सैर की है। हमारी जिन्दगी मे परीक्षा की घड़ियाँ भी बहुत आईं और बहुत बड़ी-बड़ी खुशियाँ भी क्योंकि हम उस धन से मालामाल थे जो कि गरीबों के पास होता है — वह धन जो हमारे अन्दर है।

गुस्टिना ? — उसको देखना चाहते हो, लो :

साल भर हुआ, जून का महीना आधा बीत चुका था, मार्शल लॉ लगा हुआ था। मेरी गिरफ्तारी के छः हफ़्ते बाद उसने पहले-पहल मुझे देखा, उन मनहूस तकलीफदेह दिनों के बाद जब वह अकेली अपनी कोठरी मे मेरी मौत की अफ़वाहों के खिलाफ लड़ती रहती। मुझे डिगाने के खयाल से वे उसे मेरे यहाँ ले आये।

हम दोनों को आमने-सामने खड़ा करके विभाग के अध्यक्ष ने गुस्टिना से कहा — इनको समझाओ। इनसे कहो कि व्यर्थ जिद न करें। अगर इन्हें अपनी फिक्र नही है तो कम-से-कम तुम्हारी फिक्र तो होनी चाहिए। तुम लोगों को सलाह-मशविरा करने के लिए एक घण्टा दिया जाता है। अगर उसके बाद भी तुम लोग अपनी जिद पर अड़े रहे, तो आज रात को तुम्हें गोली मार दी जायगी, तुम दोनों को।

गुस्टिना ने अपनी निगाहों से मुझे थपकियाँ दीं और बहुत सादगी से कहा — मिस्टर कमीसार, मेरे लिए यह कोई धमकी नहीं है। यह मेरी अन्तिम और सबसे बड़ी लालसा है। अगर आप इन्हें गोली मारें तो मुझे भी मार दीजिएगा, कृपा होगी।

यह है मेरी गुस्टिना, असीम प्यार, अपार शक्ति। गुस्टिना, वे हमारी जान ले सकते है, मगर वे हमारा प्रेम और हमारा स्वाभिमान नहीं ले सकते।

लोगो, तुम क्या सोचते हो कि अगर यह सब तूफान गुजर जाने के बाद

लिए क्यों? हमारा मिलन हुआ तो हमारी जिन्दगी की क्या शकल होगी ? फिर आजादी की हसीन जिन्दगी में मिलना जिसमें सबकी अच्छाई से एक नयी दुनिया का जन्म हो रहा है, जब कि हमें वह चीज मिल जायेगी जिसकी कि हमें चाह थी, जिसके लिए हमने इतने धीरज से काम किया और अब जिसके लिए हम मौत को गले लगाने जा रहे हैं ? मरने के बाद भी तुम्हारे इस महान युद्ध के एक अंग में हम जीवित रहेंगे क्योंकि उसके लिए हमने अपने प्राणों की आहुति दी है। इसी में हमारी खुशी है, मगर अलग होना बड़ा कठिन है।

लेकिन उन्होंने हमें एक दूसरे से अलविदा न कहने दिया, गले न मिलने दिया, यहां तक कि हाथ भी नहीं मिलाने दिया। पर हां, इतना है कि जेल के कुछ हमदर्द कर्मचारियों के जरिये जो पांकरात्स और कारलोवो स्क्वायर के दरमियान खबरें लाते ले जाते हैं, हमें कभी-कभी एक दूसरे की किस्मत के बारे में पता चल जाता था।

तुम जानती हो गुस्टिना और मैं जानता हूँ कि अब शायद कभी भी हम लोग एक दूसरे को न देख सकेंगे। लेकिन तब भी तुम्हारी आवाज दूर से मुझे पुकारती हुई सुनाई पड़ती है : अगली मुलाकात तक के लिए विदा, प्यारे, विदा ...

उस दिन तक के लिए विदा गुस्टिना, विदा ... मेरी गुस्टिना !

मेरी आखिरी वसीयत

मेरे पास अपना पुस्तक-संग्रह छोड़ और कुछ न था। गेस्टापो ने उसे भी तहस-नहस कर दिया।

मैंने सांस्कृतिक और राजनीतिक सवालों पर कई लेख लिखे, साहित्य और नाटक की बहुत सी आलोचनाएँ और समीक्षाएँ लिखीं, पत्रकारिता का बहुत सा काम किया। इन रचनाओं में से बहुत सी ऐसी थीं जो बिलकुल सामयिक महत्व की थीं और दिन बीतने के साथ वे खत्म भी हो गयीं। उन्हें यों ही पड़ा रहने दो। कुछ है जो जिन्दा है। मुझे उम्मीद थी कि गुस्टिना उन्हें छपायेगी, लेकिन अब उसकी कोई उम्मीद नहीं है। इसलिए मैं अपनी कामरेड लाडा स्टॉल से दरखास्त करता हूँ कि यह उनमें से सबसे अच्छी चीजों को ले और उन्हें पांच किताबों में बाँटे :

१) राजनीतिक लेख और बहसें।
२) घरेलू समस्याओं पर चुनी हुई रिपोर्टें।
३) सोवियत यूनियन-विषयक टिप्पणियां।
४) और ५) साहित्य और नाटक-संबंधी आलोचनाएँ और लेख।

अधिकांश लेख ट्वोरबा (रचनात्मक कला) और रूड प्रावो (लाल अ

कार) मे मिलेंगे, बाकी यमेन, प्रामेन, प्रोलेट्कल्ट, दोबा, द सोशलिस्ट, आवाँ-गार्द और दूसरे साहित्यिक और राजनीतिक पत्रों मे मिलेंगे।

जूलियस ज़ेयर पर मेरा बडा लेख गिरगाल के पास है। गिरगाल एक प्रकाशक है। जिस हिम्मत से उसने जर्मनो के कब्जे के दिनों में मेरा 'बोज़ेना नेमकोवा' छापा, उसकी वजह से मैं उसे प्यार करता हूँ। साबिनवाले लेख का कुछ हिस्सा और जान नेरूदा पर मेरे नोट उस मकान में कही छुपाकर रक्खे होगे जिनमे जेलिनेक, विसूशिल और मुचानेक रहा करते थे। इनमें से ज्यादा-तर मर चुके हैं।

मैंने अपनी इस पीढी के बारे मे एक उपन्यास शुरू किया था। उसके दो अध्याय मेरे माँ-बाप के पास है, बाकी शायद नष्ट कर दिया गया। गेस्टापो-वाली फाइल के कागज़ात के संग मैंने कई कहानियों की पांडुलिपियाँ देखी थी।

जान नेरूदा के लिए अपना प्रेम मैं साहित्य के किसी ऐसे इतिहासकार के लिए छोड जाता हूँ जो अभी पैदा नही हुआ है। वह हमारा सब से बड़ा कवि था, उसकी आँखें भविष्य मे हम लोगों से कही ज्यादा दूर तक देखती थी। अब तक उसके बारे में ऐसी कोई आलोचना नही निकली है जिसमे उसको पूरी तरह समझा और गुना गया हो। शोषित मजदूर-श्रेणी के एक व्यक्ति के रूप में उसे नही चित्रित किया गया है। वह स्मिचोव के एक छोर पर पैदा हुआ था। स्मिचोव मजदूरो का एक इलाका है और 'समाधि के फूल' का मसाला उसने रिंगहॉफर मिल्स के आसपास इकट्ठा किया था। बिना इतनी पृष्ठभूमि के तुम 'समाधि के फूल' से लेकर 'यकुम मई १८९०' तक की उसकी कविताओं को ठीक से नही समझ सकते। अधिकाश आलोचक — यहाँ तक कि शिल्डा जैसा सुलझा हुआ आलोचक भी — यह समझते हैं कि नेरूदा पत्रकार की हैसियत से जो काम करता था उसमें उसकी काव्य-सृष्टि में बाधा पहुँचती थी। यह बिल-कुल गलत बात है। सही बात तो यह है कि चूँकि नेरूदा पत्रकार था, इसी-लिए वह बैलड्स, सॉनेट्स, हिम्ज फॉर फ्राइडे डिवोशन्स और सिम्पल मोटिफ्स जैसी जबर्दस्त चीज़ें लिख सका। पत्रकार का काम थकानेवाला और मन को दूसरी बातों मे उलझानेवाला होता है सही, लेकिन वह व्यक्ति को पाठक के संग सीधे सपर्क मे ले आता है और अगर कोई नेरूदा की तरह सच्चा और ईमानदार पत्रकार हो तो उसे कविता करना भी सिखलाता है। अगर उसने पत्रकार का काम न किया होता तो संभव है उसने कविताओं की बहुत सी पोथियाँ लिख डाली होती लेकिन उनमे से कोई भी इस तरह सदियों तक जीवित न रहती, जैसी कि उसकी ये कविताएँ रहेंगी। अच्छा हो कि कोई 'साबिना' को अब भी पूरा कर डाले। वह इस योग्य है कि उस पर इतनी [illegible] की जाय।

उनके प्यार और व्यक्तित्व की सरल उच्चता के कारण मेरी इच्छा थी कि मैं अपने माँ-बाप की जिन्दगी के इन आखिरी दिनों में उन्हें आराम पहुँचा सकता। मेरे बहुत से काम इस उद्देश्य से भी अनुप्रेरित होते थे। अब तो केवल इस आशा का सहारा लेना चाहता हूँ कि मेरे चले जाने से उन लोगों का जीवन बिलकुल अँधेरा न हो जायगा। 'काम करनेवाला चला जाता है, बस काम सदा जीता है' और मैं सदा उनके साथ रहूँगा—उस रोशनी मे और उस प्यार की गर्माहट मे जो उनके चारों तरफ है।

मैं अपनी बहनो लीबा और बीरा से कहना चाहता हूँ कि वे अपने गानों और अपनी हँसी से पापा और अम्माँ की जिन्दगी के उस घाव को भरने की कोशिश करें जो अब हमारे घर में हो जायगा। वे दोनों जब हम लोगों से मिलने पंचेक बिल्डिंग में आयी थी तो बहुत रोयी थी, लेकिन जीवन का आह्लाद अभी उनमे है और इसीलिए हम लोग एक दूसरे को इतना प्यार करते है। वे हर तरफ खुशी बिखेरती चलती है — कोई भी चीज कभी उनकी इस खुशी को चुरा न पाये।

मै हर उस साथी से हाथ मिलाता हूँ जो इस आखिरी लड़ाई के दौर मे गुजर रहा है, और उन साथियों से भी जो हमारे बाद आयेंगे। हम दोनो का ये अंतिम अभिवादन लो, गुस्टिना का और मेरा, हम दोनों जिन्होने अपना कर्तव्य पूरा किया।

और मै फिर कहना चाहता हूँ कि हम सुख के लिए लड़े और अब सुख के लिए ही मरने जा रहे है। कभी शोक हमारे नाम के संग न जुड़े।

मई १६, १६४३) जूलियस फूचिक

मई २२, १६४३

दस्तखत हो गये, मुहर लग गयी। जाँच करनेवाले जज ने कल मेरा मामला खत्म कर दिया। मेरे मुकदमे की रफ्तार, मैंने जैसा कि सोचा था उससे भी कही तेज है। लगता है कि उन्हें किसी बात की बहुत जल्दी है। मेरे ही संग लिडा प्लाशा और मिरेक भी अभियुक्त है। गद्दारी से मिरेक को कुछ फायदा न हुआ।

जाँच करनेवाले जज की ठंडी, भावनाशून्य आँखो मे हर चीज अपनी ठीक जगह पर थी, उसका एक-एक शब्द ठीक था — सारी चीज इतनी ठंडी और भावनाशून्य कि हम लोग काँप गये। लेकिन गेस्टापो के हेडक्वार्टर की तो सभी चीजों मे जिन्दगी उबाल खा रही थी; वह डरावनी थी जरूर लेकिन जिन्दा तो थी, जिन्दगी का एक हिस्सा तो थी। वहाँ पर जोश और उफान था, एक तरफ सैनिकों का और दूसरी तरफ शिकारियों या दरिन्दो या मामूली डाकुओं का। उस तरफ के कई लोगों मे भी एक खास तरह की निष्ठा है। लेकिन इस जाँच

करनेवाले के सामने तो सिर्फ सरकारी कानून था। उसके कोट के कालर पर लगे हुए उस टेढ़े-से लोहे के 'क्रॉस' का संकेत किसी ऐसे विश्वास की ओर था जो उसके दिल मे नही था। वह एक ढाल थी जिसके पीछे एक छोटा-सा दयनीय अफसर छिपा हुआ था, जो सिर्फ इतना चाहता था कि इस दौर में किसी तरह जिंदा रहा आये। अभियुक्तों के प्रति वह अच्छा है न बुरा। वह न मुसकराता है न त्योरियाँ चढाता है। वह सिर्फ एक सरकारी काम को पूरा करता है। उसकी रगो मे खून की जगह बहुत ही पतला शोरबा बहता है।

उन्होने गवाही नकल की, कानून के लंबे-लंबे उद्धरण दिये और दस्तखत कर दिये। शायद छ. अभियोग लगाये गये है — राजद्रोह, राइख के विरुद्ध षड्यन्त्र, सशस्त्र विद्रोह की तैयारी और पता नही क्या-क्या। उनमे से एक ही काफी था, इतनो की तो जरूरत भी न थी।

मै पिछले तेरह महीनो से अपनी और दूसरों की जिन्दगी के लिए लड़ रहा हूँ, अपनी चालो से और अपने जोश से। उनका पार्टी का प्लैटफार्म 'नॉर्डिक' चालों और चक्रव्यूहो की वात करता है लेकिन मेरा विचार है उस मामले मे तो मैंने उन्हें मात दे दी। मेरी हार की अकेली वजह यह है कि धोखेधडी के साथ-साथ उनके हाथ मे कुल्हाडा भी है।

इस तरह वह द्वन्द्व-युद्ध खत्म हुआ। अब प्रतीक्षा शुरू होती है। दो या तीन हफ्ते, जब तक कि चार्ज-शीट नही तैयार होती, फिर राइख की यात्रा, फिर मुकदमा शुरू होने का इंतजार, सजा और सब से आखीर में सौ दिन तक फाँसी का इन्तजार। मै सोचता हूँ कि यही मेरा भविष्य है — चार या पाँच महीने का भविष्य। इतने वक्त में तो बहुत सी बातें हो सकती हैं। सारा नक्शा ही वदल सकता है। शायद। मगर मैं यहाँ पर बैठे-बैठे आखिर कैसे अन्दाज लगा सकता हूँ: मेरे पास आखिर क्या साधन है। यह भी संभव है कि बाहर घटनाओं की तेज गति हमारे अंत को भी पास ला दे। इसलिए वह भी शायद बहुत मदद न कर सके।

इस लड़ाई और उम्मीद के बीच जो यह दौड़ है इसमे किसकी जीत होगी? दो तरह की मौतो की इस प्रतियोगिता मे? कौन पहले आयगी — फाशिज्म की मौत या मेरी मौत? यह क्या सिर्फ मेरा, निजी सवाल है? नही; हजारों क़ैदी, लाखो सैनिक यही सवाल पूछ रहे हैं। यही सवाल योरप के और वाकी दुनिया के करोडो आदमी पूछ रहे है। कुछ मे ज्यादा उम्मीद होती है, कुछ में कम। लेकिन वह सचमुच एक धोखा है। वे भयानक बातें जिनसे पूँजीवाद के पतन ने दुनिया को लथपथ कर दिया है, उनसे सब को बडे से बडा खतरा है। लाखों आदमी मर जायेंगे — और कैसे अच्छे-अच्छे आदमी — इसके पहले कि लोग जो बच जायेंगे, कहे: मैं जिन्दा हूँ, फाशिज्म मर गया।

अभी यह महीनो की बात है, जल्दी ही कुछ दिनो की बात रह जायगी। मगर वे सब से निर्मम दिन होंगे। अक्सर मेरी कल्पना मे यह बात आती है कि उस अंतिम सैनिक की दशा कितनी करुण होगी जिसे लड़ाई के अन्तिम पल में अन्तिम गोली सीने में लगेगी। लेकिन कोई न कोई तो वह अन्तिम सैनिक होगा ही। अगर मुझे मालूम हो कि क्रान्ति की इस लडाई में मैं वह आखिरी आदमी हो सकता हूँ जो खेत रहेगा, तो मैं अभी इसी वक्त जाने को तैयार हूँ।

पांक्राट्स मे अब मेरे पास इतना थोड़ा वक्त बच गया है कि मै अपनी टिप्पणियों को अपने मनोनुकूल रूप नही दे सकता। मुझे और संक्षेप मे अपनी बात कहनी पड़ेगी। इतिहास के युग पर कम ध्यान देना पडेगा और व्यक्तियो पर ज्यादा। उन्ही का महत्व सबसे अधिक है।

मैंने जेलिनेक दंपती के बारे मे कहना शुरू किया था। वे सरल सामान्य लोग थे जिन्हें जीवन के साधारण प्रवाह मे देखकर तुम कभी यह न कह सकते कि इनमें वीरों के तत्व हैं। अपनी गिरफ्तारी के समय वे एक दूसरे के कंधे से कंधा मिलाये सटे खडे थे, उनके हाथ सर के ऊपर उठे हुए थे — पति का चेहरा जर्द था और पत्नी की कनपटी के नीचे कुछ वैसी ही तमतमाहट थी जैसी कि तपेदिक के रोगियो में होती है। उसकी आँखों मे कुछ भय उतर आया था जब उसने देखा कि किस तरह गेस्टापो ने पाँच मिनट मे उसके उस आदर्श घर को तहस-नहस कर दिया। तब उसने धीरे से अपने पति की ओर सिर घुमाया और पूछा :

'अब, जो ?'

जो के पास कभी बात करने को कुछ खास न होता, उसे शब्दों के लिए अटकना पड़ता और बोलने से उसे उत्तेजना होती। अब उसने अत्यन्त आयाम-हीन और किसी भी तरह की कारुणिकता से मुक्त स्वर में कहा :

'अब हम लोग मरने चलेंगे, मेरी।'

वह चीखी नही, काँपी भी नही। उसने बहुत नाजुक अन्दाज से अपना दाहिना हाथ नीचा किया और उसका हाथ पकड लिया, पिस्तौलों का मुँह उनकी तरफ था। इस हरकत से उन दोनो को एक-एक तमाचा खाने को मिला। उसने अपना गाल पोंछा, आक्रमणकारियों को ऊपर से नीचे तक देखा और हलके से व्यंग्य के स्वर मे कहा—

'कैसे खूबसूरत नौजवान है,' और फिर आवाज चढ़ाते हुए कहा, 'कैसे खूबसूरत लोग मगर कैसे जानवर।'

उसने उनको ठीक ही समझा था। कुछ घंटे बाद वे लोग उसे 'जाँच कमी-सार' के दफ्तर मे बेहोशी की हालत में ले गये। उन्होने उसे मारते-मारते लगभग बेहोश कर दिया था, लेकिन वे उससे एक भी बात निकाल न सके।

न तो तब और न तो और कभी उसने एक भी बात बतायी।

मैं ठीक नही कह सकता कि उन दिनो उन दोनों पर क्या बीती जब कि मैं अपनी कोठरी मे पेशी के अयोग्य हालत मे पडा हुआ था, लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूँ कि इस बीच वे कुछ भी नही बोले। वे मेरे आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। कितनी बार जेलिनेक की कलाइयाँ टखनो से लगाकर कस दी जाती और फिर उसे बेतहाशा पीटा जाता। लेकिन वह तब तक जबान न खोलता जब तक कि मैं वहाँ पहुँच न जाता और अपनी आँख के इशारे से उसे बतला न देता कि क्या उसे कबूल कर लेना चाहिए जिसमे तहकीकात आगे तो बढे।

गिरफ्तारी के पहले से मैं उसे जितना कुछ जानता था उससे मेरे मन में यही धारणा जम गयी थी कि वह बडी कोमल संवेदनशील स्वभाव की स्त्री है मगर यह भी है कि गेस्टापो की यातनाओं के इतने लम्बे दौरान मे मैंने कभी उसकी आँख मे एक आँसू नही देखा। उसे अपने घर पर नाज था, लेकिन जब बाहर के साथी उसे यह सन्देशा भेज कर तसकीन पहुँचाना चाहते कि उन्हें मालूम है कि उसका फर्नीचर किसने चुराया है और उस आदमी पर वह अच्छी तरह निगाह रक्खे है, तो वह जवाब देती :

'भाड मे जाय फर्नीचर। उसकी फिक्र मे वक्त मत बरबाद करो। उससे कही ज्यादा जरूरी काम करने को पडे है, और अब तो हमारी कमी पूरी करने के लिए तुम्हे और भी दुगना काम करना है। पहले हमे अपने देश का कूडा-कर्कट साफ करना है और अगर उस सब के बाद मैं बची रही तो मैं आसानी से खुद अपना घर ठीक कर लूँगी।'

एक दिन वे जेलिनेक दम्पती को ले गये, पति को एक जगह, पत्नी को दूसरी जगह। उन पर क्या बीती, यह पता लगाने की मैंने बहुत कोशिश की लेकिन बेकार। गेस्टापो के हाथ में पडने पर लोग अचानक न जाने कहाँ गायब हो जाते है — एक हजार कब्रिस्तानों मे बिखर जाते है। एक दिन इन भयानक बीजों मे कैसी फसल तैयार होगी!

उसका अन्तिम संदेश था :

'चीफ[1], बाहर उन लोगों को कहलवा दो कि मेरे लिए अफसोस न करें, और न मुझ पर जो कुछ गुजरी उसमे डरें। मैंने एक मजदूर की हैसियत से अपना कर्तव्य पूरा किया और उसी तरह मरूँगी भी।'

वह एक 'घरेलू' औरत थी। उसने बहुत शिक्षा भी नही पायी थी और न वह उस वीरतापूर्ण सन्देश को ही जानती थी जो सदियों पहले दिया गया था :

यात्री, लेसिडिमोनियनों से कह देना कि हम मरे पडे हैं — जैसा कि न्याय का आदेश था।

---

१. सब लोग जिसका आदेश मान कर चलते हो।

होगी। लेकिन जिन्दगी को चलाये चलने का उसे सिर्फ एक जरिया मिला — छुपे-छुपे इंकलाब का काम किये जाना, अब दो आदमियों का काम करना।

इस तरह १९४३ के नये दिन के ठीक पहलेवाली शाम को वह खाने की मेज पर अकेली बैठी थी और जहाँ मर वह बैठता था — वहाँ उसकी तस्वीर रखी हुई थी। जब बारह बजा तो उसने उसके गिलास से जो उसकी खाली जगह पर रखखा था अपना शराब का गिलास टन् से छुलाया और उसके स्वास्थ्य और जल्दी लौट आने की — खास कर इस बात की कि वह देश आजाद होने तक जिन्दा रहे — कामना करती हुई पी गयी।

एक महीने बाद वह भी पकड़ी गयी। इस बात से नम्बर ४०० के हम कई लोग काँप गये क्योंकि वह बाहर के उन लोगों में से थी जिनके जरिये बाहरी दुनिया के संग हमारा संपर्क अब भी बना हुआ था।

उसने एक भी बात मुँह से नही निकाली।

उन्होंने उसे पीटा नही; वह इतनी बीमार थी कि मर ही जाती। उन्होंने उसे और बुरी यातनाएँ दी — मानसिक। उसकी गिरफ्तारी के कुछ दिन पहले वे उसके पति को काम करने के लिए पोलैंड ले गये। अब वे उससे कहते :

'देखो, तन्दुरुस्त आदमी तक के लिए वह जिंदगी कितनी सख्त है, फिर तुम्हारे पति की तो टाँग खराब है, वह उसे कभी सह नही सकेगा। वह वहीं गिरकर ढेर हो जायगा और तुम उसे अब फिर कभी नही देख सकोगी। फिर तुम्हे दूसरा पति कहाँ मिलेगा — इस उम्र मे? इसलिए समझ से काम लो और जो कुछ भी जानती हो बतला दो, और हम लोग झट से तुम्हारे पति को तुम्हारे पास वापस बुला देंगे।'

वह वहीं मर जायगा, मेरा जो, बेचारा जो! कौन जाने कैसी मौत? उन्होने मेरी बहन को मार डाला, मेरे पति को भी मार डालेंगे और मैं अकेली रह जाऊँगी, मौत के दिन तक बिल्कुल अकेली! मुझे इस उम्र में और कौन मिलेगा? लेकिन मैं उसे बचा सकती हूँ। वे उसे वापस ला देंगे — एक कीमत पर। नही, मैं वह कीमत नही चुकाऊँगी, और इस तरह अगर वह मुझे मिला भी तो वह न होगा।

उसने एक शब्द भी मुंह से नही नि[illegible]
गुमनाम रफ्तनी में कही गायब हो गयी [illegible]
उसका जो पोलैंड मे मर गया।

जिसे वे लोग लिडा कहकर बुलाते थे। अभी वह बच्ची ही थी। बडे कुतूहल से वह मेरी मूँछों को देखती रहती और बडी खुश रहती, शायद यह सोचकर कि थोड़ी देर के मनबहलाव के लिए यह एक अच्छी नयी और दिलचस्प चीज घर में आ गयी।

हम दोनों की दोस्ती बडी जल्दी हो गयी। बाद मे पता चला कि जोजी की सौतेली बहिन, इस बच्ची की उम्र उन्नीस साल है। उसका घर का नाम प्लाशा है (जिसका अर्थ होता है शरमीली) लेकिन यह गुण उसमे नही है। उसे अभिनय का शौक था।

मैं उसका गहरा दोस्त बन गया जिससे वह अपनी भेद की बातें भी कहने लगी। इस बात से मैंने यह अनुभव किया कि और कुछ हो न हो मैं प्रौढ़ जरूर हो गया हूँ। वह अपने तरुण प्रेम की सारी दुखभरी बाते और सारे सपने मुझे बतलाती और बहन या बहनोई से कोई तकरार हो जाने पर उसे सुलझाने के लिए मेरे ही पास दौड़ी आती। सभी युवतियों की तरह उसके दिमाग का पारा भी बडी जल्दी चढ जाता था और वह तो और भी बिगड़ी हुई सी थी, वैसी ही जैसे माँ-बाप के बुढ़ापे के बच्चे अकसर हो जाते है।

वहाँ छः महीने रहने के बाद जब मैं बाहर गया तो वह पहली बार मेरे संग बाहर गयी।

कुछ-कुछ लँगड़ाता-सा एक अधेड आदमी अगर अपनी लड़की के साथ घूमने जाय तो कम लोग उस पर ध्यान देंगे बनिस्बत इसके कि अगर वह अकेले जाय। जो हमारे पास से गुजरते वे मुझे न देखकर उसी को देखते। इसीलिए वह मेरे संग घूमने जाती, इसीलिए वह मेरे संग मेरी पहली गैरकानूनी मीटिंग में गयी, इसीलिए वह मेरे पहले छिपकर रहने के कमरे मे मेरे सग आकर रहने लगी। इस तरह — अभियोग-तालिका अब यही कहती है — इस तरह धीरे-धीरे वह मेरी छिपी हुई संदेशवाहिका हो गयी।

वह इस काम को बहुत प्रसन्नता से करती है, बिना इस बात के पीछे सिर खपाये कि वह काम क्या है या उसका मतलब क्या है। उसके लिए यह एक नयी और आकर्षक चीज थी, एक ऐसी चीज जिसे सब लोग नही करते, जिसमें जोखिम है, जाँबाजी का कुछ मजा है। उसे बस इसी की जरूरत थी!

जब तक वह छोटे-मोटे काम करती रही, मैंने उसे ज्यादा कुछ बतलाना उचित नही समझा। पकड़े जाने पर वह जितना कम जानती उतना ही ज्यादा अपनी रक्षा कर सकती — क्योंकि तब उसे अनुभव भी न होता कि उसने कोई जुर्म किया है।

लिडा ने तेजी से विकास किया और इस हालत को पहुँच गयी कि जेलिनेक के यहाँ कोई छोटा-सा सन्देशा लेकर दौड़ जाने से ज्यादा बड़े-बड़े और जिम्मेदारी

होंगी। लेकिन जिन्दगी को चलाये चलने का उसे सिर्फ एक जरिया मिला — छुपे-छुपे इंकलाब का काम किये जाना, अब दो आदमियों का काम करना।

इस तरह १९४३ के नये दिन के ठीक पहलेवाली शाम को वह खाने की मेज पर अकेली बैठी थी और जहाँ मर वह बैठता था — वहाँ उसकी तस्वीर रखी हुई थी। जब बारह बजा तो उसने उसके गिलास से जो उसकी खाली जगह पर रखखा था अपना शराब का गिलास टन् से छुलाया और उसके स्वास्थ्य और जल्दी लौट आने की — खास कर इस बात की कि वह देश आजाद होने तक जिन्दा रहे — कामना करती हुई पी गयी।

एक महीने बाद वह भी पकड़ी गयी। इस बात से नम्बर ४०० के हम कई लोग काँप गये क्योंकि वह बाहर के उन लोगों में से थी जिनके जरिये बाहरी दुनिया के संग हमारा संपर्क अब भी बना हुआ था।

उसने एक भी बात मुंह से नहीं निकाली।

उन्होंने उसे पीटा नहीं; वह इतनी बीमार थी कि मर ही जाती। उन्होंने उसे और बुरी यातनाएँ दी — मानसिक। उसकी गिरफ्तारी के कुछ दिन पहले वे उसके पति को काम करने के लिए पोलैंड ले गये। अब वे उससे कहते :

'देखो, तन्दुरुस्त आदमी तक के लिए वह जिंदगी कितनी सख्त है, फिर तुम्हारे पति की तो टाँग खराब है, वह उसे कभी सह नहीं सकेगा। वह वहीं गिरकर ढेर हो जायगा और तुम उसे अब फिर कभी नहीं देख सकोगी। फिर तुम्हे दूसरा पति कहाँ मिलेगा — इस उम्र में ? इसलिए समझ से काम लो और जो कुछ भी जानती हो बतला दो, और हम लोग झट से तुम्हारे पति को तुम्हारे पास वापस बुला देंगे।'

वह वहीं मर जायगा, मेरा जो, बेचारा जो ! कौन जाने कैसी मौत ? उन्होंने मेरी बहन को मार डाला, मेरे पति को भी मार डालेंगे और मैं अकेली रह जाऊँगी, मौत के दिन तक बिल्कुल अकेली ! मुझे इस उम्र मे और कौन मिलेगा ? लेकिन मैं उसे बचा सकती हूँ। वे उसे वापस ला देंगे — एक कीमत पर। नहीं, मैं वह कीमत नहीं चुकाऊँगी, और इस तरह अगर वह मुझे मिला भी तो वह न होगा।

उसने एक शब्द भी मुँह से नहीं निकाला। वह भी गेस्टापो के माल की गुमनाम रफ्तनी मे कहीं गायब हो गयी। कुछ ही दिन बाद खबर आयी कि उसका जो पोलैंड में मर गया।

लिडा

पहली बार जब मैं वाक्सा के घर गया था तो वह शाम का वक्त था। घर पर सिर्फ जोजी था और सजीव, चमकती हुई आँखो की एक छोटी-सी लड़की

जिसे वे लोग लिडा कहकर बुलाते थे। अभी वह बच्ची ही थी। बड़े कुतूहल से वह मेरी मूंछों को देखती रहती और बडी खुश रहती, शायद यह सोचकर कि थोड़ी देर के मनवहलाव के लिए यह एक अच्छी नयी और दिलचस्प चीज घर मे आ गयी।

हम दोनों की दोस्ती बडी जल्दी हो गयी। वाद मे पता चला कि जोजी की सौतेली वहिन, इस वच्ची की उम्र उन्नीस साल है। उसका घर का नाम प्लाशा है (जिसका अर्थ होता है शरमीली) लेकिन यह गुण उसमे नही है। उसे अभिनय का शौक था।

मैं उसका गहरा दोस्त बन गया जिससे वह अपनी भेद की बातें भी कहने लगी। इस बात से मैंने यह अनुभव किया कि और कुछ हो न हो मैं प्रौढ जरूर हो गया हूँ। वह अपने तरुण प्रेम की सारी दुखभरी बाते और सारे सपने मुझे वतलाती और वहन या वहनोई से कोई तकरार हो जाने पर उसे सुलझाने के लिए मेरे ही पास दौडी आती। सभी युवतियों की तरह उसके दिमाग का पारा भी बड़ी जल्दी चढ़ जाता था और वह तो और भी बिगड़ी हुई सी थी, वैसी ही जैसे माँ-बाप के बुढ़ापे के वच्चे अकसर हो जाते है।

वहाँ छः महीने रहने के वाद जब मैं बाहर गया तो वह पहली वार मेरे संग बाहर गयी।

कुछ-कुछ लँगड़ाता-सा एक अधेड आदमी अगर अपनी लड़की के साथ घूमने जाय तो कम लोग उस पर ध्यान देंगे वनिस्वत इसके कि अगर वह अकेले जाय। जो हमारे पास से गुजरते वे मुझे न देखकर उसी को देखते। इसीलिए वह मेरे संग घूमने जाती, इसीलिए वह मेरे संग मेरी पहली गैरकानूनी मीटिंग में गयी, इसीलिए वह मेरे पहले छिपकर रहने के कमरे मे मेरे सग आकर रहने लगी। इस तरह — अभियोग-तालिका अव यही कहती है — इस तरह धीरे-धीरे वह मेरी छिपी हुई संदेशवाहिका हो गयी।

वह इस काम को बहुत प्रसन्नता से करती है, बिना इस बात के पीछे सिर खपाये कि वह काम क्या है या उसका मतलव क्या है। उसके लिए यह एक नयी और आकर्षक चीज थी, एक ऐसी चीज जिसे सव लोग नहीं करते, जिसमें जोखिम है, जाँवाजी का कुछ मजा है। उसे बस इसी की जरूरत थी!

जब तक वह छोटे-मोटे काम करती रही, मैंने उसे ज्यादा कुछ वतलाना उचित नही समझा। पकड़े जाने पर वह जितना कम जानती उतना ही ज्यादा अपनी रक्षा कर सकती — क्योंकि तब उसे अनुभव भी न होता कि उसने कोई जुर्म किया है।

लिडा ने तेजी से विकास किया और इस हालत को पहुँच गयी कि जेलिनेक के यहाँ कोई छोटा-सा सन्देशा लेकर दौड़ जाने से ज्यादा बड़े-बड़े और जिम्मेदारी

के काम ले सके। अब वक्त था कि उसे बताया जाता कि यह सब क्या मामला है। चुनाचे मैं उसे शिक्षा देने लगा। मेरी शिक्षा एक बाकायदा स्कूल थी और लिडा बडे सुख और बडी आतुरता से सीखती। देखने में तो अब भी वो वही खुश, अपने में मगन और गंभीर बातो से दूर, ऊपरी-ऊपरी बातों मे रस लेने-वाली लडकी जान पड़ती थी लेकिन अन्दर से वह बिलकुल बदल गयी थी। उसने विकास किया और वह गहराई से सोचने लगी।

इस काम के सिलसिले में मिरेक से उसका परिचय हुआ। वह बहुत काम कर चुका था और ऐसे ढंग से उसको ये बातें बतलाता कि वे उसके दिल मे उतर जाती। मिरेक का उस पर काफी प्रभाव पड़ा। उसके चरित्र के मूल गुणों को परखने मे लिडा से शायद भूल हुई, लेकिन वह भूल तो मुझ से भी हुई। खास बात यह थी कि अपने काम और अपनी दीख पडनेवाली निष्ठा के कारण वह अन्य युवको की अपेक्षा लिडा के अधिक पास पहुँच सका।

लिडा मे तेजी से प्रेम जगा और उसकी जड़ें भी गहरी चली गयी।

१६४२ के प्रारंभ मे उसने हिचकिचाते हुए पार्टी की सदस्यता के बारे मे सवाल पूछने शुरू किये। इसके पहले कभी मैंने उसे इतना हिचकिचाते नही देखा था; इसके पहले किसी भी चीज को उसने इतनी गम्भीरता से नही लिया था। मैंने उसकी बात को अच्छी तरह तौलकर देखा और शिक्षा जारी रखखी। मैं अब भी उसकी परीक्षा लेना चाहता था।

फरवरी १६४२ मे सीधे केन्द्रीय समिति ने उसे पार्टी मे ले लिया। रात का समय था, बहुत सख्त बर्फ गिर रही थी और हम लोग पैदल घर चले आ रहे थे; वह खामोश थी, गो आम तौर पर वह बहुत बात करती थी। घर के पास एक मैदान को पार करते हुए वह यकायक रुकी और एक ऐसी खामोशी मे जिसमे जमीन पर गिरकर बर्फ के टुकडो का जमना भी सुनायी देता था, उसने बहुत ही धीमे से कहा —

'मैं जानती हूँ कि यह मेरी जिन्दगी का सबसे महत्वपूर्ण दिन है, क्योकि अब मैं अपनी नही रही। मैं तुमको वचन देती हूँ कि चाहे जो हो मैं कभी तुम्हें निराश नही करूँगी।'

उसके बाद बहुत कुछ हुआ, लेकिन उसने कभी हमें निराश नही किया।

चोटी के नेताओं से हमारे गुप्ततम संबंध बनाये रखने का काम उसका था। सब से नाजुक और सब से जोखिम के काम उसके थे, जैसे ऐसी टोलियो के साथ संपर्क स्थापित करना जो कटकर अलग जा पड़ी हैं या उन काम करनेवालों को सावधान करना जो सब से ज्यादा खतरे मे हैं। जब हाई कमान का मामला कुछ गडबडा जाता या हमारी गुप्त छिपने की जगह खतरे में पड जाती तो लिडा बहुत सफाई से सब कुछ ठीक कर देती। वह बड़े-बड़े काम

भी वैसे ही करती जैसे कि छोटे-छोटे काम, यों ही बहुत चलते-फिरते हलके-फुलके मनमौजी ढंग से, मगर वह केवल ऊपरी ढंग था, असल मे उसकी तह मे जिम्मेदारी का बडा दृढ़ संकल्प था।

वह हम लोगों के एक महीने बाद पकड़ी गयी। सब कुछ कबूलते हुए मिरेक ने उसका भी नाम लिया और तब उन लोगों को पता चला कि उसने अपनी बहन और बहनोई को फरार होने और छिपने में मदद पहुँचायी थी। उसने अपने सिर को झटका दिया और एक चंचल लड़की का अपना स्वाभाविक पार्ट अदा किया, जैसे उसकी समझ ही में यह बात न आती हो कि उसने कोई गैरकानूनी काम किया है, जिसका परिणाम उसके लिए बुरा हो सकता है।

उसे मालूम बहुत-सी बातें थीं लेकिन उसने बतायी एक नही और सबसे बड़ी बात यह कि उसने काम जारी रक्खा। अब उसकी परिस्थितियाँ और काम करने के तरीके बदल गये थे, उसके काम भी अब दूसरे-दूसरे थे, लेकिन हाथ पर हाथ धरकर वह बैठी नही। पार्टी के प्रति उसका कर्तव्य नहीं बदला था। जो काम उसे दिया जाता उसे वह जल्दी, बिलकुल ठीक-ठीक और बडी लगन से करती। अगर बाहर किसी को बचाने के लिए यह जरूरी हो जाता कि किसी तरह एक उलझी हुई परिस्थिति को सुलझाया जाय, तो लिडा बहुत मासूम चेहरे से इस काम को अपने हाथ मे लेती। पान्क्राट्स में औरतो के हिस्से मे वह ट्रस्टी हो गयी और बाहर बीसियो आदमी जिन्हे कोई नही जानता था उन सन्देशों की बदौलत पकडे जाने से बच गये जिन्हे लिडा ने भिजवाया था। इसके करीब एक साल बाद उसका ऐसा ही एक सन्देशा पकड़ा गया और उसके इस 'पेशे' का अन्त हुआ।

अब वह हम लोगों के साथ मुकदमे के लिए राइख जा रही है। हम लोगो की टोली में वही एक है जिसके बारे मे थोडी बहुत यह आशा की जा सकती है कि वह देश आजाद होने तक जियेगी। उसकी उम्र अभी कम है। हम लोग न भी रहे तो भी तुम लोग उसे खोना मत। उसे अभी बहुत कुछ सीखना है। उसे सिखाओ-पढाओ और उसकी बाढ़ मत रुकने दो, लेकिन उसे अपने ऊपर घमण्ड न करने दो और न इस बात का मौका दो कि जितना कुछ उसने किया है उसी से संतुष्ट हो कर वह बैठ जाय। वह कठिन से कठिन संघर्ष की कसौटी पर खरी उतरी है। वह आग में से गुजरी है और हमने देखा है कि किस जबर्दस्त धातु की वह बनी है।

मेरा कमीसार

वह नाटक के पात्रों में से नही है, लेकिन उसका व्यक्तित्व आकर्षक है—बाकी लोगों से ज्यादा शानदार।

दस साल पहले विनोह्राडी के फ्लोरा कैफ़े मे जब तुम मेज पर अपना पैसा

खटखट करना चाहते या पुकारनेवाले होते 'बिल, हेडवेटर' तब एक लम्बा-सा दुबला आदमी, काला टेलकोट पहने अचानक तुम्हारे सामने आ जाता। कुर्सियों के बीच वह पानी के मकड़े की तरह तेजी से जैसे तैरता हुआ, निःशब्द आ जाता और बिल तुम्हारे सामने रख देता। उसके शरीर का मुड़ना-घूमना, हिलना-डुलना दरिन्दे जैसा था, तेज और खामोश और उसकी आँखें ऐसी कि एक ही बार में वह सब कुछ जैसे भाँप लेता। तुम्हे अपना आर्डर कहने की जरूरत भी न होती। वह वैरे से कह देता : तीसरी मेज के लिए सफेद कॉफी बिना ह्विप्ड क्रीम के। या 'बायीं खिड़कीवाली मेज के लिए पेस्ट्री और पीपुल्स पेपर।' ग्राहकों की दृष्टि में वह लाजवाब हेडवेटर था और दूसरे काम करनेवालों के लिए एक अच्छा साथी।

खैर, तब मैं उसको नही जानता था। मैंने तो उसे जाना बहुत बाद मे, जेलिनेक के यहाँ, जब वह पेंसिल की जगह हाथ में एक पिस्तौल लिये हुए था जिसका निशाना मुझ पर था।

'मुझे सबसे ज्यादा दिलचस्पी उसमें है।'

सच पूछो तो उसके बाद से हम दोनों की एक दूसरे में दिलचस्पी हो गयी। उसने अक्ल पायी थी और दूसरो से वह इस कारण से और भी बढ़ा-चढ़ा था कि लोगों का दिमाग वह समझता था। इसीलिए अगर वह क्रिमिनल पुलिस में गया होता तो बहुत कामयाब रहता। छोटे-मोटे मुजरिम और हत्यारे, अपने वर्ग से कटकर अलग जा पड़े आवारे, इन लोगो को उसके सामने अपना दिल उघाड़कर रखने में कतई हिचक न होती क्योंकि उन्हे अपनी जान बचाने के अलावा दूसरी कोई फिक्र नही होती। लेकिन पोलिटिकल पुलिस के हाथ मे ये अपनी जान बचानेवाले तो कम ही पड़ते है। यहाँ पर पुलिस की अक्ल का मुकाबला सिर्फ एक आदमी की अक्ल से नही होता जिसे कि उन्होने पकड़ रखा है, बल्कि उससे कही बड़ी एक ताकत से। यहाँ उन्हे सामना करना पड़ता है दृढ़ विश्वासों का, एक समूची टोली की अक्ल का, उनका शिकार भी जिस टोली का ही एक अङ्ग है। धोखेधड़ी और मारपीट से विश्वास नही तोड़े जा सकते। 'मेरे कमीसार' मे तुम्हे कोई भी आंतरिक दृढ़ विश्वास नहीं मिलेगा। अगर उनमें से कुछ में वह है भी तो उसके संग मे है मूर्खता — चालाकी नही, ज्ञान नही। अगर कुल मिलाकर कामयाबी का सेहरा उनके सिर रहा तो इसका कारण यह है कि इंकलाबी लड़ाई बहुत लम्बी घिसट गयी और बहुत छोटे से क्षेत्र में लड़ी गयी, ऐसी परिस्थितियों मे जो पहले के किसी अंडरग्राउंड संघर्ष से कही अधिक मुशकिल थी। रूसी बोलशेविक कहा करते थे कि एक अच्छा अंडरग्राउंड कार्यकर्ता दो साल तक चल सकता है लेकिन अगर मास्को में रहना उनके लिए असंभव हो जाता तो वे भागकर पेत्रोग्राद जा सकते थे, पेत्रोग्राद

से ओडेसा जा सकते थे, उन करोड़ों नगरवासियों के बीच मे जहाँ उन्हें कोई नही जानता था, उनके बीच वे अपने को इस तरह खो दे सकते थे कि कोई उनका पता न पा सकता। लेकिन हमारे पास तो सिर्फ प्राग है, प्राग जहाँ पर शत्रु के ज्यादातर गुप्तचर केन्द्रित है। इस सबके बावजूद हम बरसो से लड़ रहे है और यहाँ पर ऐसे-ऐसे साथी हैं जो पाँच साल से छिपे हुए काम कर रहे है और गेस्टापो उनका पता नही पा पाता। यह चीज इसीलिए सम्भव है कि हमने बहुत-सी बातें सीख ली है। हाँ, लेकिन इसका एक कारण यह भी है कि दुश्मन ने ताकतवर और क्रूर होने के बावजूद तहस-नहस करने में ज्यादा कुछ नही सीखा है।

सेक्शन ११-अ मे तीन आदमी है जो कम्युनिज्म के सबसे कट्टर संहारकों के रूप में प्रसिद्ध है और जिन्हें घर के दुश्मन के खिलाफ युद्ध मे वीरता का परिचय देने के लिए काले-सफेद-लाल फीते भी मिल चुके है। वे है फ्रीड्रिक जैण्डर और 'मेरा कमीसार' जोजेफ बोएम। हिटलर के नात्सीवाद के बारे मे कहने को उनके पास कुछ खास नही है, क्योंकि उसके बारे मे उनकी कोई जानकारी ही नही है। वे किसी राजनीतिक सिद्धान्त के लिए इस लड़ाई मे नही है, वे इसमे है अपनी खातिर। सब, अपने-अपने ढग से।

जैंडर को — जो एक निहायत छोटा-सा बेहद कड़ुआ आदमी है — बाकी सब लोगो से ज्यादा जानकारी पुलिस के तरीकों की है, लेकिन उससे भी ज्यादा जानकारी उसे बनिये की तरह सौदा पटाने की है। कुछ महीनों के लिए उसका तबादला प्राग मे बर्लिन का हुआ था, लेकिन जल्दी ही वह फिर तिकड़म के जोर से अपनी पुरानी जगह पर पहुँच गया। राइख की राजधानी में नौकरी उसके लिए तनज्जुली थी — और नकद घाटा। अँधेरे अफ्रीका या प्राग में जर्मन हाकिम का जो रोब और रुतबा होगा वह बर्लिन में कहाँ, दूसरे ऐसी दूरदराज जगहो मे नकद प्राप्ति का डौल भी तो कहीं ज्यादा होता है। जैंडर बहुत मेहनती आदमी है; यह दिखलाने के लिए कि वह कितना ज्यादा काम करता है वह खाना खाते समय तहकीकात करता है, सवाल पूछता है। उसे अपने सरकारी काम का प्रमाण जुटाने की जरूरत पडती है जिसमें लोगो का ध्यान इस बात पर न जाय कि उसकी ऐसी दिलचस्पियाँ और भी बडी है जिनका कोई संबंध उसके सरकारी काम से नही है। रहम के काबिल है वह जो उसके हाथ में पडा, लेकिन उससे भी दुगनी रहम का हकदार है वह जिसके घर पर बैंक की पास-बुक है या हुंडियाँ हैं। उस आदमी का अंत जल्दी आवेगा क्योंकि जैंडर बैंक बुकों और हुंडियो पर जान देता है। वह सबसे काबिल जर्मन अफसर समझा जाता है — उस खास दिशा में। इस मामले मे वह अपने चेक सहायक — स्मोला — से थोडा भिन्न है क्योंकि स्मोला शरीफ डाकू है और अगर तुम्हारा

पैसा उसके हाथ लग जायगा तो तुम्हारी जान वह न लेगा।

फ्रीड्रिक लम्बा-सा, दुबला-पतला, कुछ पीला-सा आदमी है जिसकी आँखों और मुसकराहट में दुष्टता है। वह गेस्टापो के एक खुफिया की हैसियत से सन् ३७ में चेकोस्लोवाकिया आया था, उन जर्मन कम्युनिस्टों को पकड़ने और जर्मनी भेजने के लिए जिन्होंने हमारे देश में आकर शरण ली थी। उसको लाशें बहुत भाती है। कोई निर्दोष भी है, यह वो नही मानता। जो उसके दफ्तर की देहलीज लाँघता है वह मुजरिम है। उसे औरतो से यह कहना अच्छा लगता है कि उनके पति कसेन्ट्रेशन कैंप में मर गये या मार डाले गये। उसे अपनी डेस्क की दराज में से मृत देहो की राख के सात पात्र निकालकर उस आदमी को दिखलाने मे मजा आता है जिसका इम्तहान वह ले रहा है : मैंने खुद अपने हाथो से मार-मारकर उन सातो को जहन्नुम रसीद किया था। अब आठवें तुम होगे।

अब उसकी डेस्क मे आठ राखदान हैं क्योंकि जान जिज्का को पीटते-पीटते उसने उसका दम निकाल लिया।

अपने अलग-अलग मामलो के कागजात की फाइलें उलटना और हर बार यह कहना उसे अच्छा लगता है

'फ़ैसला। मामला खारिज।'

पर औरतो को यातनाएँ देने में उसे सबसे ज्यादा रस आता है।

विलासपूर्ण जीवन बसर करने की जो चाह उसके हृदय मे है, वह पुलिस की कार्रवाइयो में उसे बहुत मदद पहुँचाती है। अगर आपके पास एक खूबसूरत सजा-सजाया घर है या कोई अच्छा, मुनाफे का व्यापार है तो आपकी मौत बहुत जल्द आ जायेगी, और कुछ नही।

उसका चेक सहकारी नर्जर लम्बाई में उससे दो मुट्ठा छोटा है। दोनों मे बस इतना ही अन्तर है।

मेरे कमीसार, बोएम, को रुपये या लाशो मे कुछ खास प्रेम नही है, गो उसकी सूची मे भी लाशें पहले दो लोगों से शायद ही कम हों। वह एक सट्टेबाज, किस्मत आजमानेवाला आदमी है जो बडा आदमी बनना चाहता है। वह नेपोलियन रूम मे काम करता था जहाँ हिटलर बहुत ही गुप्त बातचीत के लिए बेराँ से एकदम अकेले मे मिलता था। जो कुछ बेराँ खुद हिटलर को न बतला पाता, उसे बोएम जोड देता। लेकिन वह इस चीज के मुकाबले मे कुछ न था, यह आदमियो का शिकार करना, उनकी जिन्दगी और मौत का मालिक बन बैठना, पूरे-पूरे खानदानो की मौत का हुक्म दे देना — इसकी बात ही और है!

यह न था कि वह सदा पूरे घरानों की हत्या करवाये ही तो उसे सन्तोष मिले ; लेकिन उसे सदा यह कुरेदन होती थी कि कोई नयी लाजवाब बात पैदा करे, और यह चीज पूरे कुनबे की हत्या करने से भी ज्यादा

बुरी हो सकती थी।

उसने गुप्तिया पुलिस के गोयन्दों का सब से बड़ा जाल खड़ा किया। वह शिकारी था, उसके पास शिकारी कुत्तों का सबसे बड़ा गिरोह था, और वह शिकार करता था। अकसर वह शिकार के मजे के लिए ही शिकार करता। सवाल-जवाब, पूछताछ, इस काम से उसे सख्त कोफ्त होती थी, उसकी खास चीज थी लोगों को पकड़ना और फिर उन्हें फैसले की प्रतीक्षा में अपने सामने खड़ा रखना। एक बार उसने प्राग के दो सौ बस कंडक्टरों, मोटर ड्राइवरों और बस ड्राइवरों को पकड़ा और उन्हें सड़क के बीचोबीच भेड़ों की तरह हाँकते हुए ले चला, सड़क का चलना बन्द हो गया और आने-जानेवालों का तमाम सिलसिला ही मस्त गड़बड़ में पड़ गया। लेकिन उसकी खुशी का कोई ठिकाना था! फिर उसने उनमें से डेढ़ सौ को छोड़ दिया, अपने मन ही मन में बहुत खुश कि डेढ़ सौ परिवार उसकी नेक दिली के गुन गायेंगे!

आमतौर पर उसके मामले बड़े अनावश्यक से, छोटे-मोटे लेकिन पेचीदा और उलझे हुए होते थे। मेरी बात अलग थी; मुझे तो उसने अकस्मात् पकड़ लिया था।

'तुम मेरे सबसे बड़े केस हो' वह अकसर मुझ से कहता और दिल से कहता। उसे इस बात का घमंड था कि उसके मामलों में से एक ऐसा भी है जिसका शुमार सबसे बड़े केसों में होता है! संभव है इस बात ने मेरी जिन्दगी थोड़ी बढ़ा दी हो। हम लोग अपनी पूरी शक्ति से और लगातार एक दूसरे से झूठ बोलते, लेकिन उसमें एक अन्तर था। वह यह था कि मैं जब झूठ बोलता तो यह समझ-कर कि झूठ बोल रहा हूँ और वह बिना जाने झूठ बोलता, अपनी समझ में वह सच बात ही कहता लेकिन होती वह झूठ। जब कभी किसी झूठ का भांडा फूटता तो हम उसे आंख की ओट कर देते, और हमारे बीच यह बिनकहा समझौता भी चलता कि हम फिर उस बात का, जिक्र न उठायें। मेरा खयाल है कि सच्चाई का पता लगाने की उसे कुछ खास चिन्ता न थी; उसे चिन्ता सिर्फ इस बात की थी कि उसके सबसे बड़े केस पर कोई दाग न आने पाये।

तहकीकात के वक्त वह सिर्फ डंडों और लोहे की छड़ों ही का इस्तेमाल न करता। उसकी नजर में आदमी जैसा होता उसके अनुसार वह अपने अस्त्र चुन लेता और अकसर डरवाने से ज्यादा बहलाने-फुसलाने पर जोर देता। उस पहली रात को छोड़कर उसने फिर शायद कभी मुझे यातना नहीं दी। लेकिन अगर उसकी जरूरत पड़ती तो वह मुझे किसी और के हवाले कर देता।

इसमें सन्देह नहीं कि वह और सबों से ज्यादा पेचीदा मगर दिलचस्प आदमी था। उसकी कल्पना-शक्ति बहुत अच्छी थी और उसका इस्तेमाल करना भी वह जानता था। हम लोग अकसर कल्पना के घोड़ों पर सवार

होकर ब्रानिक के एक काल्पनिक सम्मेलन मे पहुँच जाते जहाँ हम लोग एक बियर गार्डेन मे बैठते और लोगों की भीड़ को गुजरते हुए देखते।

उनके बारे मे सोचते-सोचते वह कहता :

'हमने तुम्हे पकड लिया, लेकिन देखो इससे उनकी जिन्दगी में कुछ फर्क नही पडा। वे अब भी वैसे ही घूमते हैं जैसे पहले घूमते थे; अब भी पहले ही की तरह मुसकराते या अपनी तकलीफों के बारे मे परीशान होते है। दुनिया का सारा कारबार उसी तरह चल रहा है, गोया तुम कभी थे ही नही! उनमें जरूर तुम्हारे कुछ पुराने पाठक होगे — तुम्हारा क्या खयाल है, क्या तुम्हारी गिरफ्तारी से किसी के माथे पर एक भी शिकन ज्यादा आयी होगी?'

कभी-कभी पूरे दिन के सवाल-जवाब के बाद वह मुझे मोटर में बिठाल-कर नेरुदा स्ट्रीट होता हुआ किले तक ले जाता :

'मैं जानता हूँ कि तुम्हे प्राग से मुहब्बत है। वह देखो! तुम क्या फिर कभी वहाँ लौट कर नही जाना चाहते? कितना खूबसूरत है प्राग — और तुम्हारे न रहने पर भी वह ऐसा ही खूबसूरत रहेगा।'

बाइबिल के लोभ दिलानेवाले सर्प का पार्ट वह अच्छा अदा करता। गर्मी की गहरी होती हुई शाम मे कुछ यह भाव था कि प्राग मे पतझड का मौसम शुरू हो गया। शाम नीलगूँ थी और उसमे पकती हुई अंगूरी लता का हलका धुधलापन था, और था नशा अंगूर का-सा। मेरी इच्छा हुई कि मैं प्रलय के दिन तक उसे इसी तरह देखा करूँ...लेकिन मैंने उसे टोका :

'...और तुम जब न रहोगे तब तो प्राग और भी ज्यादा खूबसूरत हो जायगा।'

वह जरा सा हँसा। उस हँसी मे कमीनापन नही, उदासी थी। उसने कहा :

'तुम सिड़ी हो।'

वह अकसर उस शाम की बात पर लौट-लौट आता।

'जब हम लोग न रहेंगे...तब क्या तुम्हे अब भी हमारी जीत मे विश्वास नही होता?'

वह मुझ से पूछता था क्योंकि उसे खुद पूरा इत्मीनान न था। और वह बडे ध्यान से, एकाग्र होकर मेरी बात सुनता जब मैं उसे सोवियत संघ की शक्ति और अजेयता के बारे मे बतलाता।

यह मेरे आखिरी 'इम्तहानो' में से [illegible]

गेलिसों

सामनेवाली कोठरी के दरवाजे के [illegible]

आदमियो के काम आनेवाली मामूली [illegible]

पसन्द आयी। लेकिन [illegible]

बड़े चाव से उसे तका करते हैं — क्योंकि उसमे हमें आशा की किरण दिखायी देती है। पकड़ पाने पर वे चाहे तुम्हे मारते-मारते अधमरा ही क्यों न कर डालें, मार ही क्यों न डालें, लेकिन इतना जरूर करेंगे कि तुम्हारी नेकटाई, बेल्ट या गेलिस जरूर ले लेंगे जिसमें तुम अपने आपको फाँसी न लगा सको (गो मरदूदो को मालूम नही कि तौलिये से भी बड़े मजे में फाँसी लगायी जा सकती है!)। मौत के ये भयानक औजार फिर जेल के दफ्तर मे रक्खे जाते है, उस वक्त तक जब तक कि गेस्टापो की कोई छोटी-मोटी अदालत यह फैसला नही कर देती कि तुम्हें कही और भेजना है काम पर, कंसेन्ट्रेशन कैंप मे या फाँसी के लिए। तब वे तुम को अन्दर बुलाते है और पूरे सरकारी रीति-रस्म के साथ तुमको वे चीजें लौटा देते है — लेकिन कोठरी मे तुम उन्हें अपने साथ नही ले जा सकते। कायदा है कि वे चीजें कोठरी के दरवाजे के पास या उसके सामने के जँगले पर लटका दी जायें, फिर वे वही लटकती रहती है जब तक कि तुम्हारा ट्रान्सपोर्ट छूटने का वक्त नही आता, जो कि इस बात का साफ सबूत होता है कि कोठरी का कोई आदमी एक ऐसे सफर की तैयारी कर रहा है जो कि उसका चाहा हुआ नहीं है।

सामनेवाली वह गेलिसें उस दिन वहाँ पर दिखायी दी जिस दिन मुझे यह पता चला था कि गुस्टिना पर क्या बीतनेवाली है। सामनेवाला मेरा यह दोस्त भी गुस्टिना ही के संग, उसी ट्रान्सपोर्ट मे 'काम पर' भेजा जा रहा है। यह टोली अभी गयी नही है, यकायक जाना स्थगित करना पड़ा क्योंकि, सुनते है, वह जगह जहाँ ये लोग काम करने जा रहे थे, बमो से उड़ा दी गयी (यह भी एक बड़ी सुन्दर संभावना होती है)। अब पता नही वे लोग कब जायेंगे —, आज शाम, शायद कल या शायद एक या दो हफ्ते बाद। गेलिसें अब भी सामने लटक रही है और मैं जानता हूँ कि जब तक वे मुझे उस जगह पर दिखायी देती है तब तक गुस्टिना यही प्राग मे है। इसीलिए मैं उन्हे बहुत चाव से और बहुत प्यार से देखा करता हूँ गोया वे गुस्टिना को मदद पहुँचानेवाली जानदार चीजें हों! उसकी बदौलत उसे एक दिन, दो दिन, तीन दिन की मोहलत मिलती है ... कौन जानता है उन तीन दिनो मे *क्या* हो जाय? मुमकिन है उन्ही में से एक दिन वह आजाद हो जाय।

यहाँ पर इसी तरह हम लोगो की जिंदगी चलती है। पिछला साल, पिछला महीना, आज, कल — हमारी आँखें लगातार उस आनेवाले कल पर लगी रहती हैं जिस पर ही सारी उम्मीदों का दारोमदार है। तुम्हारी किस्मत का फैसला हो चुका है, तुम्हे परसो गोली मारी जानेवाली है — लेकिन, ओह, अभी तो कल बीच में पड़ा है, क्या कुछ नही हो सकता! कल तक तो जिन्दा रहो, मुमकिन है सारा नक्शा ही बदल जाय। सभी कुछ इतना डाँवाडोल है,

कौन जाने कल क्या हो जाये ? कल बीत जाते है, हजारों जिन्दगी से हाथ धोते है और उनके लिए फिर कल नही होता । लेकिन जो जिन्दा है वह न मरनेवाली उम्मीदों के सहारे जिये जाते है — पता नही कल क्या हो, कल को किसने देखा है ।

वह दिमागी हालत एक से-एक फिजूल अफवाहों को जन्म देती है । हर हफ़्ते *लडाई के खात्मे के बारे मे कोई गुलाबी कहानी चलती रहती है जिसे सभी* खूब खीसें निकालकर मुसकराते हुए दोहराते रहते हैं । हर हफ़्ते पाक्राट्स लोगो के कानों में कोई नयी अच्छी सनसनीखेज बात कह जाता है, जिसे हम लोग झट से सच मान लेते हैं । ऐसी बातों पर विश्वास कर लेने के खिलाफ़ तुम अपने आप से लडते हो ; झूठी उम्मीदो को दबाते हो क्योंकि वह चरित्र को मजबूत नही करती, उल्टे अत मे कमजोर कर देती है । उम्मीद को कभी, किसी हालत में, झूठ की खूराक नही पहुँचानी चाहिए, उसे *सदा सच्चाई का ही आधार देना चाहिए, वह सच्चाई जो साफ़-साफ़ लडाई* का अन्त उस रूप मे देखती है जिस रूप मे ही उसका अन्त हो सकता है । सत्य मे बुनियादी विश्वास आदमी के अन्दर होता है । और यह विश्वास कि एक दिन ही सब कुछ है, निर्णय उसी के हाथ में है और सम्भव है कि वह एक दिन जो तुम्हें और मिला तुम्हें उस जिन्दगी, जिसके छूट जाने के खयाल से ही तुम्हे नफ़रत है, और उस मौत की चौहद्दी से बाहर ले आये जो तुम्हारे सामने खड़ी है ।

आदमी की जिन्दगी मे ऐसे दिन बहुत नही होते लेकिन फिर भी तुम उन्हे तेजी से, और-और तेजी से, जितनी तेजी से मुमकिन हो सके, खर्च करना चाहते हो । भागता हुआ, बेलगाम वक्त, जो खून की तरह बह जाता है और आदमी की जिन्दगी को खत्म कर देता है, यहाँ पर सबसे बड़ा दोस्त होता है । कैसी अजीब बात है ।

आने वाला कल बीता हुआ कल हो गया है । परसो आज है — और फिर वह भी बीत जायगा । गेलिसें अब भी सामनेवाली कोठरी के दरवाजे पर लटक रही हैं ।

□

छठा अध्याय

मार्शल लॉ १९४२

मई २७, १९४३

ठीक एक साल पहले की बात है।

यातनाएँ देकर वे लोग मुझे 'सिनेमा' की ओर ले जा रहे थे। वह हम लोगों का रोज का रास्ता था : नंबर ४०० से नीचे खाने के लिए (खाना पांक्राट्स मे आता था), फिर वापस चौथी मञ्जिल पर। लेकिन उस दिन दोपहर में वे हमको फिर ऊपर नहीं ले गये।

बैठो और खाओ। बेंचें कैदियो से, जो अपने चमचे और मुंह चलाने में व्यस्त है, भरी है। यहाँ यह तो बिल्कुल आदमियों जैसा रंग-ढंग मालूम होता है। अगर हम सब जो कल मर जायेंगे, यकायक कंकालो मे बदल जायें तो वह आवाज जो हमारे मिट्टी के बर्तनों पर चमचो के चलने से हो रही है, हड्डियों की कडकडाहट और जबड़ो की चटचट मे बदल जायेगी। बस इतना है कि किसी को इस बात का ख़याल नही आया और न किसी को शक ही हुआ कि ऐसा भी हो सकता है। हम में से हर आदमी हफ्ता भर या महीना भर या सालों जिन्दा रहने के लिए पेट भर रहा था।

वहाँ के वातावरण को देखकर अनायास कहने का जी होता था : मौसम मुबारक हो। तब अचानक एक अजीब हवा का झोका हमें लगा और बडी मनहूस खामोशी छा गयी। सिर्फ सन्तरियो के चेहरो से इस बात का कुछ अन्दाजा लगता था कि असाधारण कुछ हो रहा है। इसका सबूत यह था कि उन्होने हमे बाहर निकाला, लाइन में खडा किया और पांक्राट्स की ओर ले चले। दोपहर को ही पांक्राट्स वापस : ऐसा तो पहले कभी नही हुआ। आधा दिन बिना यातनाओं के। हम लोग अपने आप से ये सवाल कर-करके थक जाते है और हमे कोई जवाब नही मिलता। लगता है जैसे भगवान् की खास कृपा हो। लेकिन बात ऐसी नही है।

वहीं सायबान मे हमें जेनरल एलियाश मिले जो प्रोटेक्टरेट के जमाने मे प्रधान मंत्री थे और बाद को मार डाले गये। उनकी आँखें उद्विग्न है,

सतरियो के झाड-झंखाड के बीच से उन्होंने मुझे देखा, पास आये और धीरे से कहा

'मार्शल लॉ लगा है।'

मेरे मूक प्रश्न का उत्तर देने का मौका उनके पास न था। बहुत जरूरी बातचीत के लिए भी कैदियों के पास सेकंडो के भी टुकड़े ही होते हैं।

पाक्राट्स के सतरी हमारे पेचेक से जल्दी लौट आने पर बड़े अचंभे मे थे। जो मुझे मेरी कोठरी तक ले गया उसे देखकर मेरे मन में इतना काफी विश्वास जगा कि जो कुछ मैंने सुना था मैने उसे बता दिया। मुझे पता नही वह कौन है, लेकिन उसने सिर भर हिला दिया। उसे मार्शल लॉ के बारे मे कुछ नही मालूम था — या शायद उसने मेरा सवाल नही सुना। तो भी, शायद — और उससे मेरी परीशानी दूर हुई, वह परीशानी जो उमसे सवाल पूछने के करण मैं महसूस कर रहा था।

वहरहाल शाम को वह आया और उसने मेरी कोठरी के अन्दर झाँका : 'तुमने ठीक कहा था। हेड्रिक की हत्या करने की कोशिश की गयी। वह बुरी तरह घायल हुआ है। प्राग मे मार्शल लॉ है।'

दूसरे दिन उस समूचे गलियारे में उन्होंने हमें एक कतार मे खडा किया और यातनाएँ देने के लिए ले चले। हमारे साथ हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति का आखिरी जीवित सदस्य कामरेड विक्टर साइनेक है। उसे फरवरी १९४१ मे पकडा गया था। एस० एस० की वर्दी पहने एक दुबला-पतला लम्बा-सा आदमी, जो जेलखाने की चाभियाँ रखता है, उसकी आँखों के आगे सफेद कागज का एक टुकडा नचाता है जिस पर मोटे-मोटे अक्षरो में छपा हुआ है —

'रिहाई का हुक्मनामा।'

वह बहुत भोडे ढग से हँस रहा है :

'तो देखा तुमने, यहूदी के बच्चे, आखिर तुम बच ही गये। तुम्हारी रिहाई का हुक्मनामा ! है क्यो नही ...... ' कहकर उसने अपनी उँगली गले पर फेरी और इस तरह बतलाना चाहा कि *विक्टर का सिर उतार लिया जायगा।* सन् १९४१ के मार्शल लॉ मे फाँसी पानेवालों मे ऑटो साइनेक पहला था। उसका भाई विक्टर सन् १९४२ के मार्शल लॉ का पहला शिकार है। फाँसी के लिए उसे वे माउटहाउज़ेन ले गये थे।

अब पाक्राट्स से पेचेक और पेचेक से पाक्राट्स रोज हजारों कैदियो के लिए मौत का रास्ता हो गया है। बसों मे नात्सी सन्तरी 'हेड्रिक का बदला लेते हैं'। आध मील जाते-जाते दर्जनों कैदियों के चेहरो से और मुँहो से खून बहने लगता है : पिस्तौल के कुंदों से उन्हे मारा गया है। जो मेरे ...

है उनका रास्ता अकसर जरा आराम से कट जाता है क्योंकि मेरी दाढ़ी से खिलवाड़ करने में ही सब इतने उलझे रहते है कि दूसरो को पीटने-पाटने का वक्त ही उनके पास नही बचता ! मोटर धक्के देती हुई जब आगे बढती है तो संतरी मेरी दाढ़ी पकड़कर लटक जाते है, यानी उससे वह वही काम लेते है जो मोटर में लगा चमड़े का फीता देता है ! यह खेल उनको खास तौर पर भाता है। अच्छा है, यातनाएँ भुगतने के लिए यह अच्छी तैयारी हो जाती है। ये यातनाएँ राजनीतिक परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती हैं, लेकिन खत्म सदा एक ढंग से होती है : 'अगर कल तक तुम्हारी अकल ठिकाने पर नही आयी, तो तुम्हें गोली मार दी जायगी।'

अब इस बात से बिलकुल डर नही लगता। एक शाम के बाद दूसरी शाम, वे सदा ही तो गलियारो मे खड़े नाम पुकारा करते है। पचास, सौ, दो सौ आदमियों के हाथ-पैर देखते-देखते कस दिये जायेंगे, उन्हे मोटर मे डाला जायगा और बूचडखाने के जानवरो की तरह कोबिलिसी ले जाया जायगा, झुंड के झुंड को एक साथ फांसी लगेगी। उनके खिलाफ अभियोग ? पहला तो यही कि कोई भी बात साबित नही की जा सकी। ये पकडे गये थे, किसी बड़े मामले से उनका कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया, अब और तहकीकात के लिए उनको कोई जरूरत नहीं है, इसलिए उन्हे फांसी लगायी जा सकती है, कम से कम इतना काम तो उनसे लेना ही चाहिए ! हेड्रिक की हत्या के दो महीने पहले एक मायी ने एक व्यंग्यात्मक कविता लिख कर नौ आदमियो को सुनायी थी। अब सब के सब फांसी वाली कोठरी मे है—'हत्या का समर्थन करने के अपराध में'। एक औरत छः महीने पहले इस शक पर पकड़ी गयी थी कि वह ग़ैरकानूनी पर्चे बाँटती है। उसने कभी यह स्वीकार नही किया, और न इसका कोई सबूत ही है। फिर भी उन्होने उसके भाई-बहनों, उसके भाइयों की पत्नियो और बहनों के पतियों को पकड लिया है और उन सब की हत्या करने जा रहे है क्योंकि 'संदिग्ध लोगों' के समूचे परिवार का संहार इस मार्शल लॉ का मूल मंत्र है। एक डाकिया, जो गलती से पकड़ा गया है गलियारे में खड़ा इन्तजार कर रहा है कि अब उसे छोड़ दिया जायगा। उसका नाम पुकारा जाता है, और वे लोग उसे ठेल-ठालकर फांसी के सजा-यापता लोगो की पाँत में खड़ा कर देते हैं, गाड़ी में बिठालकर ले जाते हैं और गोली मार देते हैं। दूसरे दिन उनको पता चलता है कि उनसे भूल हो गयी : उसी नाम के किसी और आदमी को गोली मारनी थी। लिहाजा उन्होने उस दूसरे आदमी को भी गोली मार दी, और अब सारा मामला ठीक हो गया। अब किसके पास इतना वक्त धरा है कि मिलाता बैठे कि जिस आदमी को गोली मारी जा रही है वह सही आदमी है या नहीं ? और वक्त अगर हो

तो उसकी जरूरत ही क्या जब कि धीरे-धीरे सारे राष्ट्र को ही मार डालना उनका उद्देश्य है।

उस रात मैं 'पेशी' से बहुत देर में लौटा। देखता हूँ कि दीवार के पास व्लाडिमीर वाचुरा (सबसे अधिक प्रतिभासंपन्न चेक उपन्यासकारो में से एक) खडा है, उसकी चीजो की एक छोटी सी पोटली उसके पैरों के पास रक्खी है। मैं उसका मतलब अच्छी तरह समझता हूँ। और वह भी समझता है। हम एक क्षण के लिए मजबूती से हाथ मिलाते हैं। मैं ऊपर वाले गलियारे से अब भी उसे देख सकता हूँ, सिर जरा-सा झुकाये वह खडा है और उसकी आँखें दूर, हम लोगों की जिन्दगी से परे बहुत दूर कही ताक रही है। आध घण्टे बाद उसका नाम पुकारा गया ......

कुछ दिन बाद मिलोश क्रास्नी उसी दीवार की ओर मुँह किये खड़ा था, इंकलाब का एक बहादुर सिपाही जो पिछले साल अक्तूबर मे पकड़ा गया था। यातनाएँ और कालकोठरी उसे तोड़ नही सकी। चेहरे को थोड़ा सा दीवार से एक ओर को फेरे वह अपने पीछे खड़े संतरी को शान्तिपूर्वक कुछ समझा रहा है। वह अचानक मुझको देखता है, मुसकराता है, अलविदा कहने के लिए झटके से सर ऊपर को फेंकता है और संतरी मे वदस्तूर बोलता जाता है :

'इस सबसे कुछ न होगा। मेरी तरह और भी बहुत से लोग अभी मरेंगे, लेकिन आखीर में हार तुम्हारी होगी ......'

फिर एक दिन और हम लोग दोपहर के वक्त, पेचेक बिल्डिंग मे नीचे खडे खाने का इन्तजार कर रहे थे। वे लोग एलियाश को लाये, उसकी बगल में एक अखबार दबा हुआ था। वह उसकी तरफ इशारा करता है और मुसकराता है, क्योंकि उसने अभी पढा था कि उन्होने साबित कर दिया है कि हेड्रिक की हत्या मे उसका हाथ है (बावजूद इसके कि पिछले आठ महीने से वह जेल मे था) !

'खुराफात !' उसने कहा और खाने लगा।

उस शाम को हम लोगों के संग पांक्राट्स लौटते समय, वह दिल्लगी के लहजे में इसके बारे मे बात करता है। लेकिन एक घंटे बाद ये उसे उसकी कोठरी से ले जाते है और कोबिलिसी भेज देते हैं।

लाशों का ढेर बढता जा रहा है। अब वे लोग दसो मे या सैकड़ो मे नही हजारों में गिनती करते हैं। ताजे खून की बू से इन दरिन्दों के नथुने फड़कने लगते है। वे रात बडी देर तक और इतवारो को भी, 'काम' करते हैं। अब वे सब एस० एस० की वर्दियाँ पहनते है; यह उनका जश्न है, कत्ल का यह त्योहार। वे मजदूरो, स्कूल के मास्टरों, किसानो, लेखकों, अफसरो सब को मौत के घाट उतारते हैं, मर्दों, औरतों और बच्चो को कत्ल

करते हैं, पूरे-पूरे कुनबों का सफाया कर देते हैं, गाँव के गाँव जला डालते हैं, उनका नामोनिशान मिटा देते हैं। बन्दूक की नली से निकली हुई सीसे की गोली की शकल में मौत प्लेग की तरह सारे देश मे घूमती और सबको सुलाती चलती है।

लेकिन इस भयानक हालत में भी लोग जीते है।

विश्वास नही होता लेकिन लोग अब भी जीते है, खाना खाते है, सोते है, प्रेम करते हैं, काम करते है और ऐसी हजार चीजो के बारे मे सोचते है जिनका कोई मम्बन्ध मौत से नही है। उनके दिमागो मे कही भयानक तनाव है, लेकिन उसे वे बर्दाश्त करते हैं। वे सिर नही झुकाते और न दम ही तोड़ते है।

मार्शल लॉ लगा था तो क्या, मेरा कमीसार मुझे ब्रानिक ले गया। जून के सुन्दर महीने की हवा नीबू और कीकर के फूलो की मीठी खुशबू से भारी हो रही थी। इतवार की शाम थी और मोटर के लिए नियत लाइन को छोड़ने के बाद सड़क इतनी चौडी न थी कि सैर-सपाटे से लौटनेवाले उन लोगो के रेले को सँभाल सकती। वे सब बहुत खुश थे और शोर मचा रहे थे, दिन भर सूरज और पानी के आलिंगन में और अपने प्रेमी-प्रेमिका की बाँहो मे गुजारने के बाद उनके अंगों मे अब एक सुखद-सी, मीठी-सी, गुलाबी थकन थी। सिर्फ यह था कि मौत उनके चेहरो पर नही दिखायी देती, गो कि वह उनके बीच उनके सग-सग चल रही थी और कभी-कभी उनमे से एकाध का शिकार कर लेती थी। वे बिलकुल खरगोशो की तरह झूमते हुए चलते है। और चलते-चलते गिर पड़ते है, और चालाक भी वह उन्ही की तरह है। बिलकुल खरगोशो की तरह ! उनके बीच पहुँच जाओ और एक को खाने के लिए मार लाओ। जरा देर को वह सब कोने मे दुबककर बैठते है, लेकिन फिर झट तमाम बाहर निकल आते है, अपनी खुशियो और परीशानियो समेत, जीवन के उल्लास से भरपूर।

जेल की घिरी-बँधी जिंदगी से उखाडकर किसी ने मुझे यकायक आदमियो के इस हुजूम मे लाकर खडा कर दिया और यह मीठा सुख पहले-पहल मुझे कड़वा लगा।

लगना चाहिए नही था, गो कि।

यहाँ पर मैं जो कुछ देख रहा हूँ वह जिन्दगी है और जहाँ से मै अभी-अभी चला आ रहा हूँ वह भी जिन्दगी है। चाहे कुछ ही क्यो न करो, जीवन को नष्ट नही किया जा सकता, हो सकता है कि किसी एक बिन्दु पर तुम उसे पीट-पीट कर उसका भुर्ता बना दो, लेकिन सौ दूसरी जगहों से उसकी कोंपलें फूटेंगी। यह जिन्दगी है और सदा मौत पर भारी पड़ती है।

इसमें कड़वेपन की क्या बात है ?

और हम लोग जो कि यन्त्रणाओं के बीच जेल की कोठरियों में रहते हैं, सारी कौम से अलग किसी धातु के बने हैं ?

कभी-कभी मैं पुलिस की गाड़ी में बैठकर, जिसके संतरी काफी शराफत से पेश आते, अपनी पेशियों के लिए जाता। मैं खिड़की में से सड़क को देख सकता था, दूकानों की सजी खिड़कियों को देख सकता था, फूल बिकने की जगह देख सकता था, राह चलनेवालों की भीड़ देख सकता था, औरतों को देख सकता था। एक बार मैंने मन में कहा भी कि जिस दिन मुझे नौ जोड़ा हसीन टाँगें दिखायी देती हैं उस दिन मुझे फाँसी नहीं लगती। फिर मैं उन्हें देखने लगा, उनके अंगों के ढलाव को बारीकी से मिलाने लगा, टाँगों में बहुत गहरी दिलचस्पी ले-लेकर उन्हें पास और फेल करने लगा बगैर इस बात की जरा फिक्र किये कि उस पर मेरी जिन्दगी निर्भर थी, मानो यह सब सिर्फ कुछ रेखाओं की बात हो और उसके संग एक जिन्दगी का ममला गुँथा हुआ न हो।

ज्यादातर वे मुझे बहुत देर में वापस लाते। और ईड पेशेक सदा परीशान रहते कि मैं लौटूंगा भी कि नहीं। वह मुझे गले से लगाते और मैं उन्हें सब खबरें जो मैंने सुनी होतीं बता देता, जैसे कल रात कोविलिसी में कौन-कौन मारे गये। उसके बाद हमें, भूख से मजबूर होकर; सुखाकर रखी हुई तरकारियों का नफरत पैदा करनेवाला भुर्ता खाना पड़ता। तब हम कोई अच्छा मजेदार गाना गाने लगते या अगर गुस्से में हैं और तबियत गिरी हुई है तो चौपड़ खेलने लगते और थोड़ी देर के लिए जी बिलकुल बहल जाता। हमारे शाम के घंटे इसी तरह बीतते, जब कि यह अन्देशा पूरे वक्त रहता था कि अब हमारी कोठरी का दरवाजा खुला और हममें से किसी की मौत का परवाना सुनाया गया।

'तुम या तुम, नीचे चलो। अपनी सब चीजें ले लो। जल्दी, फौरन !'

मगर उस वक्त हममे से किसी की मौत का परवाना नहीं आया। उन भयानक घड़ियों में से हम जिन्दा निकल आये। अब जब हम उस वक्त की अपनी भावनाओं के बारे में सोचते हैं तो हमें अचंभा होता है। आदमी कैसी अजीब मिट्टी का बना होता है — हम लोग असह्य चीजें भी सह ले जाते हैं।

सह ले जायें मगर यह संभव नहीं कि ऐसी घटनाएँ हमारी जिन्दगी पर गहरे निशान न छोड़ जायें। वे हमारे दिमाग की झिल्ली के नीचे फिल्म के छोटे-छोटे रोलों की तरह लिपटी पड़ी रहती हैं और बाद को असली जिन्दगी में — अगर तब तक हम लोग जिये — पागलपन की शकल में खुलती हैं।

या शायद बाद में वे बड़े-बड़े कब्रिस्तानों की शकल में खुलें या हरे-हरे बागों की शकल में जिन्हें उस सब से महँगे, आदमी की जिंदगी के, बीज से लगाया गया है।

वह सब से अमूल्य चीज, एक न एक दिन जिसमें अँकुआ फूटेगा, जो एक न एक दिन गहगहाकर फूलेगी

□

सातवाँ अध्याय

चित्र और रेखाएँ —२

पांक्रादृस

जेलखाने मे दो तरह की जिन्दगी होती है। आदमी को कोठरी में डाल कर बाहर से ताला भर दिया जाता है, और इस तरह सारी दुनिया से भयानक रूप से अलग कर दिया जाता है लेकिन फिर भी राजनीतिक बंदी तो दुनिया के साथ बहुत गहरे सम्बन्ध-सूत्र से जुड़े रहते हैं। दूसरी, कोठरियों के सामने लंबे गलियारे की जिन्दगी है, मन को तकलीफ पहुँचानेवाले अँधेरे-से गलियारो की वर्दीपोश जिन्दगी। बावजूद इसके कि इसमें छोटे-मोटे लोग, आकृतियाँ भरी होती है यह जिन्दगी कोठरियो की जिन्दगी से भी कही ज्यादा अकेली होती है। अब मैं उस जिन्दगी का जिक्र करना चाहता हूँ।

उस हिस्से का अपना भूगोल और इतिहास होता है। अगर न होता तो मैं उसका अध्ययन न कर सकता। पहले मैं स्टेज के सिर्फ उस सामनेवाले हिस्से को जानता था जिसका मुँह हमारी तरफ है, उस प्रत्यक्षतः कठोर, कठिन सतह को जो कोठरी के रहनेवालो पर निरंतर अपना बोझ डालती रहती है। साल भर या छः महीने पहले ऐसा ही लगता था। लेकिन अब मैं देखता हूँ कि उस सतह में इतनी बड़ी-बड़ी दरारें है कि उनमें से आदमियों के चेहरे झाँकते नजर आते हैं — वह चेहरे जिन पर तरस आता है, जो कुछ जानना चाहते हैं, या परीशान घबराये हुए चेहरे जिन्हें देखकर हँसी आती है। सब तरह के चेहरे, लेकिन हैं सब आदमियों के। उस धुंधली-धुंधली-सी दुनिया के हर आदमी को शासन का तनाव एक शिकंजे की तरह दबाता है और इसी से उनकी जो भी मानव भावनाएँ है, वे उभरकर सामने आ जाती है। अकसर वह चीज उनमें कम ही होती है; मगर प्रत्यक्षतः कुछ मे ज्यादा होती है कुछ मे कम। उसी चीज के कम या ज्यादा होने से उनमें अपनी-अपनी विशेषताएँ पैदा होती हैं और उनकी अलग-अलग किस्में बन जाती हैं। हाँ यह तो है ही कि कभी-कभी उनमे कुछ पूरे-पूरे आदमी भी मिल जाते हैं। लेकिन दूसरो की मदद करने के लिए उन्हें इस शासन से पैदा तनाव की जरूरत न थी!

जेल कोई खुशी की जगह नहीं है लेकिन कोठरियों के सामने की दुनिया कोठरियों से भी ज्यादा अँधेरी होती है। कोठरियों मे दोस्ती का वास होता है — और कैसी दोस्ती ! वैसी ही जैसी कि लड़ाई के मोर्चे पर बहुत लंबे चलनेवाले खतरे के समय पैदा होती है, जब कि आज तुम्हारी जिन्दगी मेरे हाथ में हो सकती है और कल मेरी जिन्दगी तुम्हारे हाथ मे। जो हो, इस हुकूमत के संतरियों में आपस मे बहुत ही कम दोस्ती है। हो भी नही सकती। उनके चारो तरफ ओछी खुफियागीरी की हवा रहती है, वे सदा एक दूसरे की चुगली खाया करते हैं। और उन्हें उन लोगो से सावधान रहना पड़ता है जिन्हें वे सरकारी तौर पर 'साथी' कह कर पुकारते है। उनमे से बेहतरीन लोग जो बिना दोस्ती के जी नही सकते, उनको यह चीज हमारी कोठरियों मे मिलती है।

बहुत दिन तक हम लोग एक दूसरे का नाम न जानते थे। मगर उससे कुछ नही बिगड़ता, हम लोगों ने खुद ही उनके नाम रख लिये थे। कुछ नाम हम लोगों ने उन्हें दिये, कुछ नामो का आविष्कार हमारे पूर्वजो ने किया था और कोठरी के संग वे भी हमे उत्तराधिकार मे मिले। कुछ के *अलग-अलग* कोठरियों में अलग-अलग नाम थे — वे ऐसे लोग थे जो न अच्छे थे न बुरे, न इधर थे न उधर, जो एक कोठरी में कायदे से ज्यादा भी कुछ दे देते लेकिन वे ही दूसरी कोठरी मे कैदियों के मुँह पर तमाचा मार देते। कैदियो से यह जो कुछ क्षणों का सम्पर्क होता है, यही कोठरी के रहनेवालों के मन पर चिरस्थायी छाप छोड़ जाता है, और इन छापों के ही आधार पर नाम रक्खे जाते हैं। बहरहाल, कभी-कभी ऐसा भी होता है कि तमाम कोठरियां एक ही लकब से किसी को पुकारने लग जाती है, और यह होता है उन संतरियो के संग जिनमे अच्छी या बुरी कुछ बड़ी खास अपनी विशेषताएँ होती है।

आइए जरा इन लोगो को एक नजर देखें : इन छोटी-छोटी शकलों को ! वह यों ही अचानक एक जगह नही इकट्ठा हो गये है। वे नात्सीवाद की राजनीतिक सेना का एक दस्ता हैं। उन्हें बहुत होशियारी से चुना गया है। वे इस हुकूमत के खंभे है, जिन पर उनका समाज टिका है।

'फर्स्ट-एड-वाला'

वह लम्बा, मोटा-सा एस० एस० का आदमी जिसकी कमजोर-सी पतली-सी जनानी आवाज है, उसका नाम रियुस है; वह राइन के किनारे कोलोन के एक स्कूल मे चौकीदार था। सभी जर्मन स्कूलो के चौकीदारों की तरह उसने भी फर्स्ट एड सीखा था और अकसर जेल के डाक्टर की जगह पूरी करता था। इस जगह वह पहला आदमी था जिससे मेरा संपर्क हुआ। वह मुझको घसीटकर कोठरी में लाया, ओठे पर मुझे लिटाया; मेरे घावों को

देखा, सुना और उन पर गीली पट्टियाँ रक्खीं, पहली बार। शायद यह ठीक है कि उसने मेरी जान बचाने में मदद की! वह किस बात की अभिव्यक्ति थी। उसकी मनुष्यता की या उसके फर्स्ट एड के ज्ञान की? मैं ठीक नही कह सकता। मगर जब वह गिरफ्तार यहूदियो के दाँत तोड देता या उन्हे नमक या बालू के चमचे भर-भर कर देता, (क्योंकि सब बीमारियों का यह एक अकसीर इलाज उनके पास था) तब यह निश्चय ही उसके नात्सीवाद की अभिव्यक्ति होती।

'स्मार्टी'

यह बातूनी, रहमदिल फेबियन[१] चेस्का बुडेजोविट्ज़े के शराब के कारखाने का एक ड्राइवर था। वह जब हमारा खाना लाता तो खूब मुस-कराता हुआ कोठरी में दाखिल होता, और कभी हम लोगो को परीशान न करता। आप कभी विश्वास नही करेंगे कि वह घंटो हमारी कोठरी के दर-वाजे के बाहर, हमारी बातो पर कान लगाये खडा रहता कि कोई छोटी-सी बात भी मिल जाय तो उसे लेकर वह अपने किसी ऊँचे अफसर के पास दौड जाये।

'कोकलार'

वह भी बुडेजोविट्ज़े के शराब के कारखाने का मजदूर था। सुडेटन इलाके के जर्मन मजदूर यहाँ पर बहुत है। मार्क्स ने एक बार लिखा था: 'यह महत्व की बात नही है कि एक मजदूर व्यक्ति के नाते क्या सोचता या करता है, महत्व की बात यह है कि अपना ऐतिहासिक कर्तव्य पूरा करने के लिए मजदूर वर्ग को क्या करना चाहिए।' जिन लोगों को हम यहाँ देखते है वे अपने वर्ग के कर्तव्यों के बारे में खाक-बला कुछ भी नही जानते। अपने वर्ग से विच्छिन्न और परिस्थितियोवश उसके विरोध मे खडे, वे सिद्धान्त की दृष्टि से त्रिशंकु के समान अधर में लटकते रहते है — आगे चलकर शायद सैद्धान्तिक ही नही शारीरिक दृष्टि से भी उनकी यही स्थिति होती है!

आराम से अपनी रोजी कमाने के लिए उसने नात्सियो का साथ किया। मगर अब उसे पता चलता है कि यह तो बहुत टेढा मामला है, इसकी तो उसने कल्पना भी न की थी। तब से वह मुसकराना भूल गया है। उसने नात्सियो की जीत पर बाजी लगायी थी, मगर अब उसे लगता है कि उसने मुर्दा घोडे पर बाजी लगायी थी! उसकी हिम्मत टूट गयी है। स्लिपर पहने,

---

१. समाजवाद से उसके क्रान्तिकारी तत्व, वर्ग संघर्ष को निकालकर वैधानिक ढंग से समाजवाद की स्थापना का सपना देखनेवाले 'समाजवादियो' की किस्म — अनुवादक।

खामोशी से जब वह रात को गलियारे मे चहलकदमी करता, तो अनजाने मे ही लैंप के शेड की धूल पर अपने उदास विचारो के दाग छोड देता।

उनमें से एक पर उसने कविता की भाषा मे लिखा था, 'हर चीज बदबू करती है', और आत्महत्या करने की सोची थी।

दिन के वक्त वह संतरियो और कैंदियो दोनो को अपनी जल्दबाज, खर-खरी आवाज मे इधर-उधर दौड़ाता रहता है — और यह सब खुद अपनी हिम्मत बनाये रखने के लिए।

रॉस्लर

लम्बा और दुबला, भद्दी, खुरदुरी, मोटी आवाज का रॉस्लर यहाँ के उन गिनती के लोगो मे है जो खुलकर हँस सकते है। वह जाब्लोनेट्ज़ की एक कपड़े की मिल का मजदूर है। वह हमारी कोठरी मे आ जाता है और घण्टो बहस करता है।

'मैं इसमे कैसे आ फँसा ? दस साल तक मेरे पास कोई स्थायी काम न था, और तुम सोच ही सकते हो हफ्ते मे चार शिलिंग[१] मे पूरे परिवार का खर्च चलाना हो तो जिन्दगी का नक्शा क्या होगा। फिर वे लोग आये और उन्होने कहा : हम तुम्हें काम देंगे, हमारे संग चलो। मैं गया और उन्होंने मुझे काम दिया, मुझे और सबों को ; अब हम लोगो की रोटी का तो ठिकाना हो गया, घर बनाकर रह तो सकते हैं, एक बार फिर साँस तो ले सकते है। समाजवाद ? बेकार चीज है। मैंने इसके बारे में पहले कुछ दूसरी ही कल्पना की थी, लेकिन यह जो कुछ है पहले से अच्छा है। नही है ? लडाई ? लडाई मैं नही चाहता था। मैं नही चाहता था कि दूसरे लोग मरें, मैं तो सिर्फ खुद जीना चाहता था।

'क्या ? मैं चाहूँ या न चाहूँ लडाई मे मदद पहुँचा रहा हूँ ? तो करूँ क्या? यहाँ मैंने किसी को कोई चोट पहुँचायी है ? अगर मैं चला जाऊँगा, तो दूसरे लोग, शायद मुझ से भी गये-बीते, मेरी जगह ले लेंगे। इससे किसी का कुछ फायदा होगा ? लड़ाई के बाद मैं फिर अपने कारखाने वापस चला जाऊँगा...'

'तुम्हारा क्या खयाल है कौन जीतेगा ? हम लोग नही ? तुम लोग ? तो हम लोगों का क्या होगा ?'

'खात्मा ? यह तो बहुत बुरी बात है। मैंने तो कुछ और ही कल्पना की थी।'

और वह लंबे-लंबे थके हुए कदमों से कोठरी के बाहर चला जाता है।

---

१ मोटे हिसाब से शिलिंग लगभग पचहत्तर पैसे का होता है — अनुवादक

आध घंटे में वह फिर सोवियत संघ के बारे मे एक सवाल लेकर लौट आता है ।

बेजान वह

एक दिन हम लोग पाक्राट्स के बड़े गलियारे में खड़े उन लोगो का इन्तजार कर रहे थे कि आकर हमे पेशी के लिए पेचेक बिल्डिग ले जायें । हमे रोज इस जगह दीवाल से माथा सटा कर खडे रहना पडता था जिसमें हम यह न देख सकें कि हमारे पीछे क्या हो रहा है । उस दिन मैंने एक नयी आवाज सुनी :

'मैं कुछ नही देखना चाहता ! मैं कुछ नही सुनना चाहता ! तुम मुझको नही जानते, लेकिन जल्दी ही जान जाओगे !'

मैं हँसा । इस कवायद मे 'गुड सोल्जर श्वाइक' के गरीब बेवकूफ लेफ्टिनेंट डूब का यह उद्धरण *बहुत मौके का था। अब तक किसी ने यह हिम्मत* नही दिखलायी थी कि इस मजाक को जोर से कहता । कतार में मेरे बगल में खड़े मेरे ज्यादा अनुभवी पड़ोसी ने मेरी पसली मे उँगली चुभाकर इशारा किया कि हँसो मत, मुमकिन है तुम्हारा खयाल गलत हो ; और यह बात *हँसने के लिए न कही गयी हो । और सचमुच वह हँसने के लिए नही कही* गयी थी !

वह शकल जिसकी आवाज हमने अपने पीछे सुनी थी, एस० एस० की वर्दी पहने एक पिद्दी-सा आदमी था, जिसे स्पष्ट ही श्वाइक के बारे में कुछ *नही मालूम था । यह शकल लेफ्टिनेट डूब की तरह बात कर रही थी क्योकि* आध्यात्मिक रूप मे वह उससे सबद्ध थी । यह शकल वितान पुकारने पर जवाब देती थी और बहुत दिनों तक नाम को थोड़ा-सा चेकोस्लोवाक रूप देकर चेकोस्लोवाक फौज मे सार्जेण्ट की हैसियत से काम कर चुकी थी । उसने *बात ठीक कही थी, धीरे-धीरे हम लोग उसे* खूब अच्छी तरह जान गये और हम लोग सदा उसके बारे मे उत्तम पुरुष एकवचन का ही प्रयोग करते थे — वह । सच बात तो यह है कि जब हमने मूर्खता, दुष्टता, अहम्मन्यता और सीधे-सादे कमीनेपन के उस अजीब संमिश्रण के लिए, जो कि पाक्राट्स की हुकूमत के खास स्तम्भों मे से था, कोई उपयुक्त नाम ढूंढना चाहा तो हमारी अकल ने जवाब दे दिया ।

जब हम उन ओछे, जलील, घमंडी और मौकेबाज लोगो के मर्म पर आघात करना चाहते तो कहते, 'वह सुअर के घुटने [illegible] नही पहुँ[illegible]' वह हमारा खास फिकरा था । उस आदमी का [illegible]
जिसे अपने नाटे क़द की वजह से यंत्रणा महसू[illegible]

यंत्रणा महसूस होती थी और वह हर उस आदमी से बदला लेता था जो उससे शारीरिक या मानसिक रूप मे बड़ा होता — यानी हर किसी से।

मुक्कों-घूंसों से नही। इतनी उसमें हिम्मत न थी। जासूसी करके, चुगली खाकर। वितान की मनगढन्त के पीछे न जाने कितने कैदियो ने अपनी सेहत से हाथ धोया होगा, न जाने कितनों ने अपनी जान गँवाई होगी — क्योंकि तुम पांक्राट्स से किसी कन्सेन्ट्रेशन कैंप भेजे जाते हो या पांक्राट्स से निकल भी पाते हो, इन सब बातो का दारोमदार इस पर है कि तुम्हारे कार्ड पर क्या लिखा है।

जब वह शान मे आर्कर मुर्गे की तरह गलियारे में अकेले चहलकदमी करता है तो उसे देखकर हँसी आती है। जब कोई उसे नही भी देखता होता तब भी वह इसी तरह फूलकर चलता है। जब किसी आदमी से उसकी मुलाकात होती है तो उसे लगता है कि कहाँ कूदकर औरो से ऊपर जा बैठे। जब वह हम लोगों मे से किसी से सवाल-जवाब करता है तब भी वह कुर्सी की बाँह पर बैठा रहता है और गोकि उस तरह बैठने मे उसे तकलीफ ही होती है तो भी वह उसी तरह घंटे भर तक बैठा रह सकता है क्योंकि उस हालत मे उसकी ऊँचाई तुमसे मुट्ठी भर ज्यादा हो जाती है। हमारे दाढी बनाते वक्त जब वह ड्यूटी पर रहता है, तब वह या तो सीढ़ी पर खड़ा रहता है या बेंच पर ऊपर-नीचे क़वायद करता रहता है, और उसकी जबान पर उसका मशहूर फ़िकरा : मैं कुछ नही देखना चाहता, मैं कुछ नही सुनना चाहता। तुम मुझे नही जानते......'

सबेरे कसरत के वक्त वह सहन से अलग घास के एक छोटे से प्लाट पर जा बैठता है, क्योंकि वहाँ पर बैठकर वह सहन के बाकी सब लोगों से चार इंच ऊँचा हो जाता है। वह कोठरी मे उसी शानो-शौकत से दाखिल होता है जिससे कि बादशाह दाखिल होता है, लेकिन वह फौरन कुर्सी पर जा खड़ा होता है जिससे मुनासिब ऊँचाई से मुआयना कर सके।

उसे देखकर हँसी तो बहुत आती है लेकिन जब आदमी की जिन्दगी का सवाल उठता है तब तो तमाम गधे सरकारी अफसरो की तरह वह खतरनाक भी बहुत है। उसके गधेपन में एक सिफत और छिपी हुई है — उसे तिल का ताड बनाना आता है। उसे सिर्फ एक काम आता है, रखवाले कुत्ते का और इसीलिए कायदे-कानून का छोटा-से-छोटा उल्लंघन भी उसकी दृष्टि मे बहुत बडा हो जाता है, उसकी अहम्मन्यता के बराबर बडा। वह जेल के छोटे-से-छोटे नियम और आदेश की अवज्ञा की व्याख्या इस रूप मे करता है कि उससे उसकी इस चेतना को खुराक पहुँचे कि वह भी कोई है। और फिर कौन इस बात का पता लगाता है कि उसके लगाये अभियोगों मे कितनी सच्चाई है?

स्मेटांज

स्मेटाज का बेडौल, भारी-भरकम शरीर, कुंद, बुझा हुआ चेहरा और एकदम भावशून्य आँखें प्रतिरूप हैं उन व्यंग्य चित्रों की जो ग्रोज़ ने नात्सी स्टार्मट्रूपरों के बनाये है। वह पूर्वी प्रशिया की लिथुआनियन सीमा के पास ग्वाले का काम करता था, लेकिन अजीब बात है कि वह नेक जानवर गाय भी उस पर कोई असर न डाल सकी। ऊपर, लोग उसे जर्मन चरित्र का मूर्त रूप समझते है — वह कठोर है, फुर्तीला है, उसे रिश्वत नही दी जा सकती। वह उन थोडे से लोगों में से है जो ट्रस्टियो से, जिनसे गलियारे में उसकी मुलाकात होती है, अपने हिस्से से ज्यादा खाना नही माँगता, लेकिन...

किसी जर्मन वैज्ञानिक ने, नाम नहीं याद आ रहा है, एक बार जानवरो की अकल इस तरह नापी थी कि वे कितने 'शब्द' बना पाते है। इस आधार पर उसने नतीजा निकाला था कि पालतू बिल्ली तमाम जानवरों से कम अकल वाली होती है — क्योंकि, ऐसा लगता है, वह सिर्फ १२८ 'शब्द' बना पाती है। लेकिन भई, स्मेटाज के मुकाबले में तो बिल्ली भी बहुत बढ़ी-चढ़ी विदुषी है क्योंकि स्मेटांज के मुँह से पांक्राट्स ने आज तक चार से ज्यादा शब्द नही सुने :

'ए, दिमाग ठिकाने रखना !'

हफ्ते मे दो या तीन बार उसे काम पर से अलग किया जाता। हर बार उसे इस बात से तकलीफ होती, लेकिन वह सदा इस छोटी-सी रस्म मे कोई-न-कोई गड़बडी कर बैठता है। एक बार मैने जेल के सुपरिन्टेन्डेन्ट को उसे इसलिए डाँटते देखा था कि उसने खिडकियाँ नही खोली थीं। गोश्त का वह ढेर, छोटी-छोटी गठीली टाँगो के सहारे एक बार आगे जाता था फिर पीछे आता था, पीछे आता था फिर आगे जाता था, उसका बोदा सर आगे की तरफ जरा झुका हुआ था, उसके मुँह के कोने इस कठिन कोशिश मे गिरे हुए थे कि वह उस हुक्म को एक बार दोहरा दे जो उसके कानो ने अभी-अभी सुना था...और फिर अचानक गोश्त का यह पहाड़ भोपू की तरह गरजने लगा और गलियारे भर मे सब सकते मे आ गये। किसी की समझ मे न आया कि यह सब क्या और क्यों हो रहा है, खिड़कियाँ बदस्तूर बन्द रही और दो कैदी जो स्मेटांज के सबसे करीब थे, उनकी नाक से खून बहने लगा। सवाल को हल करने का यह उसका तरीका

और यही उसका कायदा था। वह जिस

चलता, मारते-मारते मार तक डालता। इतना

था। और कुछ नही। एक बार वह एक

आदमी को मार दिया। कैदी बीमार था, जमीन पर गिर पड़ा और मारे तकलीफ के लोटने लगा। स्मेटांज ने कोठरी के बाकी लोगों को भी मजबूर किया कि वह भी उसकी तिलमिलाहट और ऐंठन की ताल पर उठें-बैठें। बीमार के थकने और उसकी ताकत खत्म होने के साथ-साथ उसकी ऐंठन भी खत्म हो गयी। तब स्मेटांज कूल्हो पर हाथ रखे बेवकूफ आदमी की तरह मुसकराने लगा : वह बडा खुश था कि ऐसे पेचीदा मसले को उसने कैसी खूबी से हल कर लिया!

वह सचमुच आदिम काल का जंगली आदमी था जिसे उन तमाम बातो मे से जो कि उन लोगो ने उसे सिखाने की कोशिश की थी सिर्फ एक बात याद थी — कि ज्यादातर मसले मार-पीट से हल हो जाते है।

आखिरकार इस जानवर के अन्दर भी कोई चीज टूटी। लगभग एक महीना पहले की बात है कि वह और क — जेल के गोल कमरे में बैठे हुए थे। क— उसे परिस्थिति समझा रहा था। इतना घुमा-फिराकर, तूल देकर, हैरान हो-होकर बात समझायी गयी कि वह स्मेटांज की अक्ल मे भी कुछ-कुछ धँसी। तब वह खड़ा हुआ, कमरे का दरवाजा खोला, बहुत गौर से गलियारे को देखा। एक आवाज नही, रात की उस मृत्यु जैसी निस्तब्ध बेला मे सभी सो रहे थे। उसने दरवाजा बन्द किया, सावधानी से ताला लगाया और धीरे से कुर्सी मे गिर पडा :

'तो तुम्हारा खयाल है...?'

ठुड्ढी हथेलो पर टिकाये वह बैठा था। उस भारी-भरकम, पहाड़ जैसे शरीर मे जो छोटी-सी आत्मा थी उस पर एक बहुत भयानक बोझ आकर बैठ गया। बहुत देर तक वह सिर झुकाये बैठा रहा, फिर सिर उठाया और गहरी निराशा के स्वर में कहा .

'तुम ठीक कहते हो। हम नही जीत सकते...'

पिछले एक महीने से पाक्राट्स ने स्मेटाज की रण-गर्जना नही सुनी है। नये कैदी उसके घूसे को नही जानते।

जेल संचालक

वह एक छोटे-से, फौजी दस्ते का लीडर था; सदा ठाठदार कपडे पहने रहता, वह फिर चाहे फौजी वर्दी हो या शहरी पोशाक ; देखने मे बड़ा चिकना-सा समृद्ध-सा लगता, और अपने आप पर बेहद मगन। उसे कुत्तों, शिकार और औरतों से प्रेम था — लेकिन उससे हमें क्या मतलब।

उसके चरित्र के दूसरे पहलू में — जिसका पांक्राट्स से सम्बन्ध है — यह बात थी कि वह बिलकुल अशिक्षित, गँवार, और मोटे रेशे का आदमी था। वह बिल्कुल खास नात्सी छिछोरा था जो अपना रुतबा बनाये रखने के लिए किसी

की भी कुर्बानी कर सकता है। वह पोलैंड का रहनेवाला है और उसका नाम सॉप्पा है, पता नहीं इस नाम का क्या मतलब है। सुनते हैं पहले वह लुहार का काम सीखता था, मगर उस ईमानदार पेशे का उस पर कोई असर नहीं दिखायी देता था। हिटलर की नौकरी करते उसे एक जमाना हो गया था और इस वक्त उसका जो रुतबा है वह उसे खुशामद और साजिशों के जोर से मिला है। वह हर मुमकिन चालाकी से अपनी नौकरी की रक्षा करता है। उसे किसी कैदी या अपने किसी आदमी, बच्चों या बुड्ढों, किसी के लिए कोई खयाल नहीं है और न उनके लिए दिल में कोई भाव है। पाक्राट्स के जेल कर्मचारियों के दिल में नात्सीवाद के लिए कोई खास बात नहीं है, लेकिन उनमें से शायद ही कोई सॉप्पा जैसा भावनाशून्य आदमी हो। जेल का डाक्टर पुलिसमास्टर वाइजनर वह अकेला आदमी है जिसको वह कुछ समझता है और जिससे वह अकसर बातचीत करता है। लेकिन लगता है कि उधर से ऐसी बात नहीं है।

सॉप्पा को सिर्फ अपनी चिन्ता रहती है। अपना वर्तमान पद, जिसमें वह लोगों पर राज करता है, उसने केवल अपने लिए हासिल किया है और अपने ही लिए वह अन्तिम क्षण तक वर्तमान सरकार की नमक-हलाली करेगा। वह शायद अकेला आदमी है जो कभी-कभी यह सोचता है कि क्या मुक्ति का कोई और भी रास्ता है, मगर अब वह जानता है कि ऐसा कोई रास्ता नहीं है। नात्सीवाद का पतन उसका अपना पतन होगा, जो उसके ऐश्वर्यपूर्ण जीवन का अन्त कर देगा, उसके खूबसूरत मकान का, उसकी अपनी शानो-शौकत का, जिसे बनाये रखने के लिए उसे मार डाले गये चेकों का कपड़ा इस्तेमाल करने में भी कोई हिचक न हुई।

हाँ, वह सचमुच उसका भी अन्त होगा।

जेल डाक्टर

पुलिसमास्टर वाइजनर—पांक्राट्स के रङ्गमञ्च पर कैसा विचित्र अभिनेता। उसे देखकर अक्सर ऐसा लगता है कि यहाँ के वातावरण में वह कुछ जमता नहीं—लेकिन उसके बिना भी तो पांक्राट्स की कल्पना नहीं की जा सकती। जब वह मरीजों के कमरे में नहीं होता तो अपने छोटे-छोटे झूमते हुए कदमों से गलियारों में जैसे फिसलता-सा चला आता है—अपने से बात करता हुआ और अपने चारों तरफ की हर चीज पर गौर करता हुआ, हर वक्त गौर करता हुआ। वह एक परदेसी यात्री की तरह है जो यहाँ चला आया है और यहाँ के बारे में ज्यादा से ज्यादा तफसीलें बटोरकर अपने साथ ले जाना चाहता है। लेकिन ताले में चाभी डालने और गुपचुप कोठरी का दरवाजा

खोलने में वह किसी भी चोर से कम नही है। उसमे एक बहुत सूखे ढङ्ग का मजाक करने का माद्दा है, और उसी के बल पर वह ऐसी बातें कह जाता है जिनका गुह्यार्थ होता है, लेकिन वह ऐसी कोई बात नही कहता जिस पर तुम बाद मे उसे पकड सको। वह लोगों की खुशामद करता लेकिन किसी को अपनी खुशामद नही करने देता। वह देखता बहुत कुछ है लेकिन अपने संग किस्से नही लिये घूमता और न लोगों की बुराई करता है। अगर वह किसी ऐसी कोठरी में पहुँच जाता है जो धुएँ से भरी है, तो जोर-जोर से नाक से सूं-सूं करता है और कहता है :

'जी', और जोर से चटखारा मारता है, 'कोठरी मे सिगरेट पी जा रही है।' फिर ओठ से चट से करता है और कहता है, 'सख्त मनाही है।'

मगर इस बात की रिपोर्ट वह नही करेगा। उसका चेहरा सदा परीशान रहता है और उस पर झुर्रियाँ पड़ी रहती है, मानो अन्दर ही अन्दर कोई सख्त तकलीफ उसे मथ रही हो। यह स्पष्ट है कि वह उस सरकार से कुछ लेना-लेना नही चाहता जिसकी कि रोटी वह खाता है, जिसके शिकारो की वह दिन-रात फिक्र रखता है। उसे इस सरकार मे विश्वास नही है, वह इसे चिरस्थायी नही मानता और न कभी उसने माना। इसीलिए वह अपने परिवार को ब्रेसलाउ से प्राग नही लाया, गो राइख के बहुत थोड़े अफसर होंगे जिन्होंने अधिकृत देश में ठूंस-ठूंसकर खाने का और नोचखसोट करने का यह मौका हाथ से जाने दिया हो। लेकिन जो लोग इस सरकार से लड रहे हैं, उनसे भी हाथ मिलाना उसके लिए उतना ही असम्भव है। वह बिलकुल तटस्थ है, किसी ओर नही झुकता।

वह बहुत ईमानदारी से और सजग कर्तव्यबुद्धि से मेरी देखभाल करता। अपने ज्यादातर मरीजों के संग उसका यही सलूक है, और वह अकसर बहुत सख्ती से मना कर देता है कि वे कैदी जिन्हे बहुत ज्यादा यातनाएँ दी जा चुकी है, फिर और यातनाओं के लिए ले जाये जायें। शायद इससे उसकी अन्तरात्मा शात हो जाती है। बहरहाल कभी-कभी जब उसकी मदद की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, वह मदद करने से इन्कार भी कर देता है। शायद तब जब वह बहुत डरा हुआ होता है।

साधारण नागरिक की खास एक किस्म का वह नमूना है — आज की ताकतों के अपने डर और फिर कल क्या होगा उसके डर के बीच एकदम अकेला। वह हर तरफ समस्या हल करने के लिए आँखें दौड़ाता है, लेकिन वह हल उसे कही नही मिलता : चूहेदानी मे फँसा हुआ अच्छा-खासा मोटा चूहा है वह।

बुरी तरह फँसा हुआ। निकलने की कोई उम्मीद नही।

'फ्लिक'

यह आदमी न तो एकदम न-कुछ है और न अभी उसका पूरा-पूरा चरित्र बन पाया है। अभी वह दोनों हालतों के बीच है। अभी उसके पास वह साफ दृष्टि नही है कि यह कहा जा सके कि उसके पास अपना व्यक्तित्व है।

उस तरह के दो आदमी यहाँ पर है। सीधे-सादे, निष्क्रिय रूप मे सवेदनशील भी। पहले तो वे उन भयानक बातों से डर गये जिनमे कि वे जा पड़े है, और अब वे उनसे निकल भागने को राह पाना चाहते हैं। वे किसी भी तरह का मानसिक आधार खोजते हैं, क्योकि उन्हें अपने ऊपर भरोसा नही है। वे तर्कबुद्धि की अपेक्षा अपनी सहज अन्तश्चेतना से इस आधार को खोजते है। अगर वे तुम्हारी कोई मदद करते है तो उसमे भाव यही है कि तुम उनकी मदद करोगे। इन लोगो को मदद देना ठीक है—इस समय भी और भविष्य मे भी।

पांक्राट्स के तमाम जर्मन अफसरों मे यही दो हैं जो लड़ाई के मोर्चे पर भी हो आये हैं।

हनोअर जमोज्मो का एक दर्जी था जो बर्फ की मार से बीमार और बेकार होकर जल्दी ही पूरबी मोर्चे से लौट आया था: यह बात अलग है कि उस बीमारी का सारा इन्तजाम उसने खुद किया था! अब वह श्वाइक की शैली मे दार्शनिको के समान बात करता है, 'युद्ध लोगो के लिए नही है', 'मेरे लिए उसमें कुछ नही।'

हेयफ़र बाटा के जूते के कारखाने का एक प्रसन्नचित्त कारीगर है। वह फ्रास के हमले में था, फिर अपनी फौजी ड्यूटी छोड कर भाग आया, बावजूद इसके कि उसे तरक्की मिलनेवाली थी। जब कभी वह किसी झंझट मे पड़ता --और रोज ही ऐसी सैकड़ो झंझटें होती—तब वह 'धत्तेरे की!' कहकर और हाथ हिलाकर उसको टालने की कोशिश करता।

इन दोनों की किस्मत और भावनाएँ दोनों ही बहुत कुछ एक सी थी। लेकिन हेयफर दोनो मे ज्यादा निडर, ज्यादा स्पष्ट ढंग से अपनी बात कहनेवाला, और पूर्णतर व्यक्तित्व का आदमी था। लगभग सभी कोठरियों मे उसका लकब 'फ्लिक' था।

जिस दिन वह ड्यूटी पर होता है वह दिन कोठरीवालो के लिए खैरियत मे गुजरता है। वह तुम्हे जोर से डपटता है तो साथ ही साथ आँख भी मार देता है, यह दिखाने के लिए कि उसका मतलब तुम्हे डपटना नही बल्कि नीचे बैठे हुए इंस्पेक्टर को सुनाना है कि वह कैदियो के संग कितनी सख्ती से पेश आता है। लेकिन सख्ती दिखलाने की उसकी ये नाटकीय कोशिशें

बेकार जाती है। अब किसी को उसकी बात पर यकीन नही होता और कोई हफ्ता नही जाता कि उसे सजा न मिलती हो।

'धत्तेरे की !' कहकर वह लापरवाही के अन्दाज से हाथ हिलाता है और फिर वही रफ्तार बेढंगी। वह अब भी संतरी नही, जूते के किसी कारीगर का नौजवान चञ्चल सहायक ही है जो कि वह पहले था। उसे कभी-कभी कैदियों के सग बडे आनन्दपूर्वक, यहाँ तक कि मस्ती से गोटी खेलते पकडा जा सकता है। उसके एक मिनट बाद वह कैदियों को कोठरी मे से गलियारे मे खदेड देगा और कोठरियो का मुआयना करेगा। अगर मुआयना बहुत देर तक चला और तुम्हे कुतूहल हुआ कि इतनी देर क्यो हो रही है और तुमने कोठरी के अन्दर झाँककर देखा तो क्या देखोगे कि हजरत मेज पर बैठे, सिर बाँहों पर टिकाये सो रहे है। बहुत शान्ति से और बडे मजे मे सो रहे है। यहाँ उसे अपने अफसरो का डर नही रहता क्योकि गलियारे मे खडे कैदी उसकी पहरेदारी करते हैं और कोई खतरे की बात होने पर उसे सावधान कर देते है। ड्यूटी के वक्त सोना उसके लिए जरूरी हो जाता है क्योकि उसका रात का आराम उस लड़की की नजर होजाता है जिसे वह दुनिया मे सब से ज्यादा चाहता है।

नात्सीवाद की जीत होगी या हार ? 'धत्तेरे की ! तुम क्या यह सोचते हो कि यह सर्कस कयामत के दिन तक इसी तरह चलता रहेगा ?'

अपनी गिनती वह उन लोगो मे नही करता। यही उसकी सब मे दिलचस्प बात है। इससे भी बडी बात यह है कि वह उन लोगो का नही होना चाहता और न है ! अगर तुम किसी दूसरी जगह कोई गुप्त चिट्ठी भेजना चाहो तो उसे फिलक के सिपुर्द कर दो। अगर तुम बाहर किसी को कुछ कहलाना चाहो, तो फिलंक तुम्हारा सदेशा बाहर ले जायगा। अगर तुम्हें किसी से बात करने की ज़रूरत हो जिसमे तुम उसे कायल कर सको कि वह बात ठीक नही है, और इस तरह कुछ और लोगो की जाने बचा सको, तो फिलंक तुम्हें उसकी कोठरी मे ले जायगा और बाहर खडा होकर पहरा देगा — अन्दर से फूलकर कुप्पा, वैसे ही जैसे शहर का छोकरा पुलिसवाले को चुत्ता देकर। अकसर उसे समझाना पडता है कि जरा होशियारी से काम ले — खतरे के बीच उसे खतरा कुछ बहुत मालूम नही होता। वह लोगो के संग जो भलाई करता है उसका असली महत्व क्या है, इसकी उसे जरा भी चेतना नही है। अपनी जान से जितना बन पडता है उतना कर देने मे स्वयं उसके मन को शान्ति मिलती है, बस इतना है। लेकिन वह चीज उसके स्वाभाविक विकास मे बाधक है।

अभी तक उसके व्यक्तित्व का निर्माण नही हुआ है, मगर हो रहा है।

'कोलिन'

मार्शल लॉ के दिनो की एक शाम की बात है। एस.एस. की वर्दी पहने जिस संतरी ने मुझे मेरी कोठरी में दाखिल किया, उसने बहुत ऊपरी-ऊपरी ढंग से मेरे जेबो की तलाशी ली।

'क्या हालचाल हैं ?' उसने धीरे से पूछा।

'मालूम नही। सुना है कल मुझे गोली मार दी जायेगी।'

'सुनकर डर लगा ?'

'मै पहले ही से जानता था।'

एक मिनट के लिए उसने यंत्रवत् मेरे कोट के सामनेवाले हिस्से पर हाथ दौड़ाया।

'मुमकिन है मार ही दे। मुमकिन है कल न मारें, शायद और कभी, शायद कभी नही। लेकिन ऐसे समय मे हर बात के लिए तैयार रहना ही ठीक है...'

फिर वह चुप हो गया।

'लेकिन अगर ऐसा ही हो, तो क्या तुम किसी को कुछ कहलाना चाहोगे ? या...कुछ लिखना चाहोगे ? तत्काल प्रकाशन के लिए नही, समझे न, भविष्य के लिए। तुम कैसे यहाँ आये, क्या किसी ने तुम्हारे साथ दगा की, कुछ लोगो का आचरण कैसा रहा। यह सब बातें, जो तुम जानते हो तुम्हारे संग खत्म नही हो जायेगी।'

क्या मैं कुछ लिखना चाहूँगा ? गोया उस चाह से ही मेरा सारा जिस्म सुलग न रहा हो !

एक मिनट में वह कागज-पेंसिल ले आया। मैंने खूब सावधानी से उसे छिपा दिया जिसमें किसी भी मुआइने में वह उन लोगो के हाथ मे न पड़े।

मगर बहुत दिन तक मैं उन्हे हाथ नही लगा सका।

यह इतनी बडी बात थी कि मुझे यकीन नही होता था। अपनी गिरफ्तारी के कुछ हफ्ते बाद इस अँधेरी इमारत मे एक इन्सान से मुलाकात होना कैसी अद्भुत बात थी, और वह इन्सान उन लोगो की वर्दी में जो सिर्फ डपटना और मारपीट करना जानते है — उनकी वर्दी मे एक इंसान, एक ऐसा दोस्त पाना जो तुम्हारी तरफ मदद का हाथ बढाता है और इस बात मे तुम्हारी मदद करता है कि तुम कम से कम एक पल के लिए उन लोगों मे बात कर सको जो इस प्रलय के बाद भी जीते रहेगे — और उन लोगों

से भी जो नही रहेंगे। और ठीक उसी पल मे जब कि वे गोली से उडाये जानेवाले लोगो का नाम पुकार रहे हैं, उन लोगो की संगत मे जो खून पीकर मतवाले हो रहे हैं और उन लोगों के बीच जिनके गले डर के मारे रुँधे हुए हैं, जो अगर चिल्लाना चाहें भी तो नही चिल्ला सकते। ऐसी हालत में एक मित्र पाना — नही, यह सचमुच ऐसी बात है कि सहसा विश्वास नही होता। अगर यह बात सच नही है तो कम से कम चेतावनी तो है ही। लेकिन उस आदमी मे कितना जबर्दस्त मनोबल होगा जो मेरी जैसी स्थिति मे पड़े हुए आदमी की तरफ अपने आप मदद का हाथ बढ़ाता है ! सचमुच कैसा असीम साहस !

कोई एक महीना गुजर गया। मार्शल लॉ उठा लिया गया था, डाँटना-डपटना खत्म हो गया था, उन सबसे भयानक घड़ियो की अब केवल स्मृतियाँ रह गयी थी। शाम का वक्त था और मैं जब यातनाएँ भुगतकर लौटा तो उसी संतरी ने मुझे कोठरी के अन्दर किया।

'देखता हूँ कि तुम सह ले गये। सब ठीक था ?' उसके चेहरे से जाहिर था कि उसे बड़ी फिक्र है।

मै समझ गया कि उसका क्या मतलब है। उस सवाल ने मेरे दिल को बहुत गहराई से छुआ। हर बात से ज्यादा उस सवाल ने मुझे इस बात का पूरा यकीन दिला दिया कि वह सच्चा और ईमानदार है, कोई धोखा नही खेल रहा है। सिर्फ वही आदमी यह सवाल कर सकता था जिसे उसका नैतिक अधिकार हो। इस क्षण से मैं उसका विश्वास करने लगा : वह अब हम मे से एक था।

पहली नजर मे तो वह एक अजीब सा आदमी था। गलियारो मे वह अकेला घूमता—खामोश, मुँह बन्द, चौकन्ना और चारो तरफ निगाह रखनेवाला। किसी ने कभी उसे डाँटते-डपटते नही सुना। और न मारते-पीटते देखा।

'फिर जब स्मेटाज इधर देखे तो तुम मुझे एक घूँसा मारना, मेरे कहने से।' दूसरी कोठरी मे मेरे पड़ोसी उससे दरखास्त कर रहे थे कि कम से कम अपनी खातिर वह जरा और मुस्तैदी दिखलाये !

'उसकी जरूरत नही है,' उसने सिर हिलाते हुए कहा।

वह चेक छोड और कोई जबान न बोलता। उसकी सारी वज़ा-क़ता, चाल-ढाल, हर चीज से यह बात साफ थी कि वह बाकी सबसे भिन्न है, लेकिन अगर कही कोई तुमसे पूछ बैठता कि वह कौन सी बात है तो बतलाना तुम्हारे लिए कठिन हो जाता। वे लोग भी इस बात को महसूस करते थे लेकिन उसे पकड़ नही पाते थे।

जहाँ कही भी उसकी जरूरत होती है, पता नही वह कैसे पहुँच जाता है।'

जहां लोगों मे बेचैनी और घबराहट होती है वहां वह उन्हें शांत करता है। जहां लोग सिर लटकाकर बैठते हैं वहां वह उनकी हिम्मत बढ़ाता है। जब बाहर बहुत सी जानें खतरे में होती है और उन लोगो से हमारा संबंध टूट गया रहता है जो उनकी जान बचा सकते हैं, तो वह नये संपर्क पैदा करता है। बहुत छोटी-छोटी, तफसील की, बातों में वह अपने आपको नही उलझाता; वह बहुत कायदे से और बडे पैमाने पर काम करता है।

यह कोई नयी बात नही है। शुरू से, जब से उसने नात्सियों की नौकरी की, तभी से यह बात उसके दिमाग में थी।

आडोल्फ कोलिस्की, चेक संतरी जिसकी हम बात कर रहे हैं, मोरेविया के एक पुराने चेक परिवार का है। ह्राडेक क्रालोव और फिर पाक्राट्स में चेक कैदियों पर पहरा रखने के काम के लिए जब उसने दरखास्त दी थी तो मसलहतन् उसने अपने को जर्मन बतलाया था। जो लोग कि उसे जानते थे, उनके दिमाग मे यकीनी उसके बारे मे कडवे विचार होगे। चार साल बाद जर्मन जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट कोलिस्की के मुंह के सामने घूंसा ले जाते हुए उसे धमकाता है :

'मैं यह चेक-पना तुम्हारे अन्दर से निकाल दूंगा!'

अब नही, जरा देर हो गयी! सुपरिन्टेन्डेन्ट का खयाल गलत है। कोलिस्की का चेक-पना निकालने भर से काम नही चलेगा, उसकी इंसानियत को ही पीस डालना पड़ेगा, तब शायद बात बने। वह एक जवांमर्द है जिसने खूब समझ-बूझकर, अपनी मर्जी से दुश्मन की नौकरी की ताकि उसके घर में घुस कर वह उससे लड़ सके और दूसरों को लड़ने में मदद दे सके। हर वक्त के खतरे ने अगर उसके साथ कुछ किया है तो यही कि उसने उसके इरादे को और फौलाद बना दिया है।

हमारा

अगर ११ फरवरी १९४३ को सवेरे नाश्ते मे उस काली सी चाय की जगह जो पता नही काहे की बनी थी उन्होने हमे कोको दिया होता तो भी हमे इस चमत्कार का पता न चलता। क्योंकि उस सुबह एक दूसरा चमत्कार हुआ—एक चेक पुलिसमैन की वर्दी की झलक हमारी कोठरी के पास दिखायी दी।

सिर्फ झलक। हमे काले पतलून और लागबूट का सिर्फ एक पैर दिखायी दिया। एक गहरी नीली आस्तीन का हाथ ताले के पास पहुंचा, कोठरी के दरवाजे को खोला फिर बन्द कर दिया, फिर गायब हो गया। यह सब इतनी तेजी से हुआ कि पन्द्रह मिनट बाद हमे इस बात का यकीन हो जाता कि ऐसी कोई चीज हुई ही नही।

पंक्राट्स में एक चेक पुलिसमैन ! इस एक बात से क्या-क्या नतीजे नही निकाले जा सकते !

दो घण्टे के अन्दर ही अन्दर हम नतीजे निकालने भी लगे थे। कोठरी का दरवाजा फिर खुला और एक चेक पुलिस की टोपी ने अन्दर झांका और हमारे अचम्भे पर मुस्कराते हुए ओठो ने कहा—

'छुट्टी !'

अब भूल की कोई गुंजाइश न थी। गलियारो में एस. एस. के संतरियों की खाकी-हरी वर्दी के बीच-बीच कई काले धब्बे भी दिखायी देने लगे थे जो हमें बहुत जानदार चमकदार लगे। वे चेक पुलिस अफसर थे।

हमारे लिए इसकी क्या अहमियत हो सकती है ? ये कैसे होगे ? कैसे भी हो, उनका यहाँ होना ही बहुत साफ जबान मे बहुत सी बातें कहता है। उस हुकूमत *का अन्त कितने पास होगा जिसे अब अपनी सबसे नाजुक मशीन मे, अपने सबसे* मत्हवपूर्ण संगठन में जिस पर कि वह टिकी हुई है, उसी राष्ट्र के लोगो को लेना पड़ता है जिन्हे कि वह दबाकर रखना चाहती है ! लडाई के मोर्चे पर उसे आदमियो की कितनी सख्त कमी होगी जो वह कुछ थोडे से सैनिकों की लालच में अपनी पुलिस-शक्ति कम करने को तैयार है ! तुम्हारा क्या खयाल है, ऐसी हालत मे हुकूमत कितने दिन चलेगी ?

इसमें तो खैर कोई शक नही कि यहाँ पर वे सिर्फ चुने हुए आदमियो को भेजेंगे जो जर्मन संतरियों से भी गये-गुजरे साबित होंगे, जिनकी चेतनता नष्ट हो गयी होगी और जीत में जिनका विश्वास खो गया होगा। लेकिन यह बात, सिर्फ यह बात कि एस. एस. की जगह चेक पुलिस ले रही है, इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि अन्त अब पास है।

इस बात को हमने इस तरह से समझा।

हम लोगों ने जितना समझा था उससे कही ज्यादा चेक पुलिसमैन निकले। असलियत यह थी कि उस मशीन के पास अब चुनने-चुनाने की गुन्जाइश ही न रह गयी थी, अब उसके पास उतने आदमी ही न थे जितनो को उसे अपनी हिफाजत के लिए जरूरत थी।

पांक्राट्स में पहली चेक वर्दी हमने ११ फ़रवरी को देखी।

दूसरे दिन हम उन लोगों से परिचित होने लगे।

एक आता, कोठरी के अन्दर झांकता, चौखट पर खड़ा अस्थिरता-पूर्वक पैर आगे-पीछे करता। फिर हमारी नजरो का जवाब यकायक बड़ी हिम्मत से देता, वैसे ही जैसे बैयां-बैयां चलनेवाला छोटा सा बच्चा एक बार किचकिचाकर जोर लगाये और उछल पड़े।

'कहिए, क्या हालचाल है जनाब ?'

हम लोग मुस्कराहट से जवाब देते, फिर वह भी जवाब में मुस्कराता। फिर फट पड़ता

'हम लोगों से खफा मत होइएगा। विश्वास कीजिए, हमें वहाँ उस चबूतरे पर चहलकदमी करना मंजूर, यहाँ आप लोगों पर पहरेदारी करना मजूर नही। हमे यह काम करना पड़ा, लेकिन शायद — शायद इसका कुछ अच्छा नतीजा निकले......'

वह बडा खुश होता जब हम लोग उसे बताते कि हम लोग उसके बारे मे और उन लोगो के पांक्राट्स आने की बाबत क्या सोचते हैं। इस तरह हम लोग पहले क्षण से ही मित्र हो गये। उसका नाम वितेक था, सीधा-सा नेकदिल लड़का था — वह पहला चेक सिपाही था जिसकी झलक हम लोगो ने अपनी कोठरी के दरवाजे के पास उस पहली सुबह देखी थी।

दूसरे का नाम तुमा था, वह पुराने ढंग का खास चेक सिपाही था। काफी खुरदुरे किस्म का और बड़ा शोरगुल मचानेवाला लेकिन मूलतः अच्छा, नेक —वही किस्म जिसे हम लोग चेक प्रजातंत्र की जेल में 'पॉप' कहा करते थे। उसे अपनी स्थिति कुछ खास न जान पड़ती। इसके विपरीत वह बड़े आराम और बेफिक्री से रहता और शान्ति स्थापित करता। किसी कोठरी में वह किसी को रोटी पकड़ा देता या सिगरेट, राजनीति छोड़ कर किसी भी चीज के बारे में किसी के भी संग बैठ कर गप्प ठोंकता और वक्त गुजारता। यह सब वह बड़े स्वाभाविक ढंग से करता, बिना इस बात को छिपाये कि उसकी नजर में यही संतरी का काम है। इस बात के लिए पहली डाँट जो उसे पडी उससे वह और चौकन्ना तो हो गया, मगर बदला नही। वह अब भी पहले का वही पॉप था। उससे बड़ी कोई बात पूछने की हिम्मत न पड़ती लेकिन अगर वह आस-पास हो तो आसानी मालूम होती और साँस लेने मे कठिनाई न होती।

तीसरा चेक पुलिसमैन गलियारे मे चहलकदमी करता, तेवरियाँ चढ़ाये, खामोश, कुछ न देखता हुआ। उसके पास पहुँचने की जो कोशिशें होती उन पर वह कोई ध्यान न देता।

एक हफ्ते तक उसे गौर से देखने के बाद डैडी ने कहा, 'उसे चुनने से उन लोगों को कुछ खास फायदा नही हुआ। वह तो सब से असफल निकला।'

'या शायद सब से तेज,' मैंने कहा, यों ही, बहस के लिए क्योंकि छोटी-छोटी बातों का विरोध करना ही इस कोठरी की जिन्दगी का मिर्च-मसाला है।

दो हफ्ते बाद मुझे लगा कि उस चुप्पे आदमी ने कायदे के थोड़ा खिलाफ मुझे हलके से आँख मारी। मैंने भी उसी इशारे से उसे जवाब दिया, और जेल मे उस इशारे के एक हजार मतलब हो सकते हैं। लेकिन कुछ हुआ-गया

नही। मुझे शायद धोखा हुआ।

ख़ैर एक महीने बाद सारी बात साफ हो गयी। और यह चीज हुई बिलकुल वैसे ही जैसे रेशम का कोया फोड़कर तितली निकल आये। त्योरियाँ चढ़ाये हुए वह कोया फूटा और उसमें से एक जीवित प्राणी निकल आया मगर वह तितली नही आदमी था।

'तुम स्मारक तैयार कर रहे हो,' डैडी इसमें के कई रेखाचित्रों के बारे मे कहते।

मेरी बहुत इच्छा है कि मैं वैसा कर सकूँ जिसमे मैं उन साथियो की स्मृति जीवित रख सकूँ जो यहाँ पर और बाहर सच्चाई और बहादुरी के साथ लड़े, और खेत रहे।

लेकिन मैं उन जीवित लोगो का भी स्मारक बनाना चाहता हूँ जिन्होने मुशकिल से मुशकिल हालतो में ऐसी सच्चाई और बहादुरी से हमारी मदद की, जो किसी से भी कम नही हैं। मैं पाक्राट्स के भुतहे गलियारों मे से कोलिस्की और इस चेक पुलिसमैन जैसे व्यक्तित्वों को जीवन के प्रकाश मे लाना चाहता हूँ। इसलिए नही कि इससे उनका गौरव बढ़ेगा, बल्कि दूसरो के सामने उदाहरणस्वरूप, क्योंकि मनुष्य का कर्तव्य इस लडाई के बाद खत्म नही हो जायगा और आदमी जब तक सही मानों मे इन्सान नही बन जाते तब तक इंसान बनना हिम्मत और साहस की माँग करेगा।

पुलिसमैन यारोस्लाव होरा की कहानी बहुत छोटी-सी है। लेकिन उसमे एक पूर्ण मनुष्य के जीवन की कहानी मिल जाती है।

राडनिको देश के एक सुदूर कोने में एक खूबसूरत-सा मगर गरीब और उजाड़-सा इलाका है। उसका बाप शीशा बनाने का काम करता था, और उसका जीवन कठिन था। मुल्क में जब काम हो तो ऊब और थकान, और जब बेकारी घर बनाये तो गरीबी — यही उसकी जिन्दगी थी। इसके दो ही नतीजे हो सकते थे : आदमी या तो घुटने टेक देता या एक बेहतर दुनिया के स्वप्न मे गर्व से सिर ऊँचा करता। बेहतर दुनिया मे विश्वास करने और उसके लिए लडने की खातिर उसका बाप कम्युनिस्ट हो गया। लडकपन मे यार्दा मई दिवस की परेड मे साइकिलवाली टुकडी के संग पहियो में लाल फीता लपेटे घूमता। वह लाल फीता उसने वही छोड नही दिया बल्कि अपने दिल के भीतर कही रख लिया, जब वह खराद-विभाग मे काम करने गया, जो कि उसकी पहली नौकरी थी, स्कोडा के कारखाने में।

बेकारी का संकट आया, फिर फौजी नौकरी, फिर पुलिस की नौकरी का मौका। पता नही इस बीच उसके दिलवाला वह लाल फीता क्या कर

रहा था — शायद लपेटकर कही रख दिया गया था, शायद भूल भी चला था — मगर खोया न था। एक दिन पांक्रात्स में उसकी ड्यूटी लगायी गयी। वह कोलिस्की की तरह स्वेच्छा से नही आया था, एक उद्देश्य को लेकर, उसके हर पहलू को अच्छी तरह समझ-बूझकर। लेकिन पहली ही बार जो उसने कोठरी के भीतर झांका तो उसे एक उद्देश्य की और अपने कर्तव्य की चेतना हुई। फीता जो लिपटा हुआ रखा था, अब खुला।

पहले उसे अपनी कर्मभूमि को अच्छी तरह समझना था और उसके मुकाबले में अपनी ताकत की नाप-जोख करनी थी। गहरे एकाग्र चिन्तन से उसके माथे पर बल पड जाते, कहाँ शुरू करे कैसे शुरू करे। वह कोई पेशेवर राजनीतिज्ञ नही, धरती का एक सीधा-सच्चा पुत्र था। और उसके पास अपने बाप का तजुर्बा था; वह चरित्र का एक दृढ केन्द्र था जिसके चारों ओर उसके संकल्प रूप ग्रहण करते। जब उसने संकल्प कर लिया तो उसके नाक-भौ चढाये हुए रेशम के कोये को फोडकर एक इन्सान निकल आया।

अन्दर से वह बड़ा अच्छा आदमी था, अत्यन्त स्वच्छ, भावुक, और लजीला लेकिन जवाँमर्द। जिस चीज की बाजी लगाना जरूरी हो वह लगा देता। छोटी और बड़ी सभी चीजें जरूरी होती है, लिहाजा वह छोटी चीजे भी करता है और बड़ी चीजें भी। वह खामोशी से काम करता है, बिना किसी भी तरह के दिखावे के, खूब धीरे-धीरे समझ-बूझकर मगर बिना डरे। यह सब कुछ उसके लिए इतना नैसर्गिक है, उसके भीतर का आदेश। यह चीज करनी ही है तो उसके बारे मे बात करके क्या होगा?

बस इतनी-सी उसकी कहानी है। यह एक व्यक्ति की पूरी कहानी है जिसे आज तक कई लोगो की जानें बचाने का श्रेय प्राप्त है। पांक्रात्स में एक आदमी ने अपना मनुष्योचित कर्तव्य पूरा किया, इसीलिए आज वे जिन्दा है और बाहर काम कर रहे है। वह निजी तौर पर उन्हे नही जानता और न वे ही उसे जानते है। और न शायद कोलिस्की को ही वे जानते है, लेकिन आगे चल कर उनका परिचय होगा। इन दो काम करनेवालों ने झट से एक दूसरे को पा लिया और सेवा करने के जो मौके उन्हें मिले उनका अच्छे से अच्छा उपयोग किया।

उनके उदाहरण को याद रखना। ऐसे दो आदमियों का उदाहरण जिनकी अकल उनके पास थी और जिनका दिल अपनी ठीक जगह पर था, और जिन्होने दोनों का पूरा-पूरा इस्तेमाल किया।

डैड स्कोरेपा

अगर कही तुम्हे मौके से तीनो एक संग दीख जायें, तो समझ लो कि

तुमने मेलजोल और भाईचारे की जीती-जागती तसवीर देख ली — एस. एस. के सन्तरी कोलिस्की की खाकी-हरी वर्दी, चेक पुलिस होरा की गहरी नीली वर्दी और जेल के ट्रस्टी डैड स्कोरेपा की हलके रङ्ग की उदास सी वर्दी। वह तीन एक संग कम ही दिखायी पडते है — बहुत कम। और उसका सरल-सा कारण यह है कि उनके दिल सदा एक साथ रहते है।

जेल के कायदे के अनुसार गलियारो की सफाई और खाना देने आदि के काम 'सिर्फ ऐसे कैदियो को दिये जाने चाहिए जो बहुत ही विश्वसनीय, कायदे-कानून की पाबन्दी करनेवाले और दूसरे कैदियों से एकदम अलग-थलग हो।' ऐसा कायदा है — मुर्दा कायदा, बिलकुल बेजान। ऐसा कोई ट्रस्टी न हो सकता है न हुआ है। कम-से-कम गेस्टापो की जेलों मे तो नही। यहाँ पर तो ट्रस्टी माध्यम है जिनके जरिये जेल का कलेक्टिव आजाद दुनिया के संस्पर्श मे आता है जिसमे कि वह जी सके, और कुछ कह-सुन सके। कोई सन्देसा बीच ही में रोक लिये जाने पर या कोई गुप्त चिट्ठी समेत पकड़े जाने पर न जाने कितने ट्रस्टियो ने जान गँवायी होगी! लेकिन जेल के संघ का नियम निर्ममतापूर्वक उनके उत्तराधिकारियो से माँग करता है कि वे भी उसी जान-जोखिम काम को करें। वे चाहे इस काम को हिम्मत से करें चाहे डरकर, लेकिन संघ के लिए काम उन्हे करना जरूर पड़ता है। बस इतना है कि जो जितना डरता है उसके लिए उतना ही ज्यादा खतरा होता है, और आगे-पीछे वह जरूर पकड़ा जाता है — तमाम अंडरग्राउंड काम की ही तरह यहाँ भी वही नियम लागू होता है।

यह सबसे कठिन अंडरग्राउन्ड काम है, ठीक उन लोगो के नीचे जो सारी विरोधी ताकतों को जड से उखाड़ फेंकने पर तुले हैं; संतरियों की निगाह-तले, उन जगहों पर रहकर जहाँ कि वे तैनात किये जायँ, उन सख्त कायदो के मातहत जिनका बनानेवाला दुश्मन है— कठिन से कठिन परिस्थिति मे यह काम करना होता है।

अंडरग्राउन्ड काम के बारे में बाहर तुमने जो कुछ भी सीखा हो, वह सब यहाँ नाकाफी है, लेकिन तुम्हें करना पहले के बराबर या उससे भी ज्यादा पड़ता है।

जैसे बाहर गैरकानूनी काम मे उस्ताद लोग होते हैं, वैसे ही यहाँ ट्रस्टियो में होते है। डैड स्कोरेपा तो बहुत ही मँजे हुए खिलाड़ी हैं, देखने में एकदम शान्त और नम्र, लेकिन काम में मछली की तरह फुर्तीले। सन्तरी उसकी तारीफ करते हैं — देखो, कैसे धीरे-धीरे इत्मीनान से अपने काम में लगा रहता है, कितना भरोसे का आदमी है, बस अपने काम से काम, ऐसी किसी बात से कोसो दूर जो कायदे के खिलाफ जाती हो। वे दूसरे

को उसका अनुकरण करने को कहते !

हाँ, दूसरे ट्रस्टी उसका अनुकरण करते हैं ! वह सचमुच ट्रस्टियों का मुखिया है जैसा कि कैदी चाहते ही है। वह बाहरी दुनिया के साथ संघ का संस्पर्श कायम रखने में सबसे शक्तिशाली, और साथ ही सबसे संवेदनशील माध्यम है।

वह हर कोठरी के रहनेवालो को जानता है, हर आगन्तुक को पहले क्षण से जानता है — वह क्यों यहाँ आया, उसका संपर्क किन-किन लोगो से है, बाहर उसका क्रान्तिकारी आचरण कैसा था और उसके दोस्तों का कैसा था। वह हर 'केस' का गहरा अध्ययन करता है और उन्हे सुलझाने की कोशिश करता है। यह चीज जरूरी हो जाती है क्योकि वह बाहर के लोगो को बचाना और कभी-कभी उन्हें अच्छी सलाह देना चाहता है।

वह दुश्मन को भी जानता है। हर सन्तरी को गौर से परखता है, उसकी आदतें, उसकी कमजोरियाँ, उसकी ताकत की बातें, उसकी किस बात पर निगाह रखना चाहिए, उससे क्या काम लिया जा सकता है, कैसे उसे चकमा देना चाहिए, कैसे उसे भरमाना चाहिए। संतरियों की बहुत सी विशेषताएँ जिनका मैंने इस्तेमाल किया है, डंड स्कोरेपा ने मुझे बतायी थी। वह उन सबको जानता है, उन सबकी अच्छी और ठीक-ठीक परिभाषा दे सकता है। ये सब बातें उस आदमी के लिए जरूरी हैं जो आजादी से गलियारों मे घूमना और अच्छी तरह अपना काम करना चाहता है।

मगर सबसे बढकर, स्कोरेपा अपना कर्तव्य खूब अच्छी तरह समझता है। वह एक कम्युनिस्ट है जो जानता है कि हर क्षण उसे एक कम्युनिस्ट की तरह रहना चाहिए, और ऐसी कोई जगह या वक्त नही है जब वह हाथ पर हाथ धरकर बैठ सके। मैं समझता हूँ कि यहाँ इस बडे से बड़े खतरे के बीच और सख्त से सख्त दबाव मे उसे उसके योग्य सबसे अच्छी जगह मिली है। यहाँ पर उसने विकास भी किया है।

उसमें अद्भुत लचीलापन है, हर रोज हर घंटे नयी परिस्थितियाँ पैदा होती है जिनको हल करने के लिए नये तरीके निकालने पडते हैं। ये तरीके वह बहुत फुर्ती से और बडी चालाकी से निकालता है। कभी-कभी एक मिनट से भी कही कम वक्त मिलता है। उतने ही में वह कोठरी के दरवाजे पर दस्तक देता है, दरवाजे के छोटे से छेद मे से एक अच्छी तरह तैयार किया हुआ सन्देसा सुनता है और उसे गलियारे के दूसरे सिरे पर की कोठरी मे बिलकुल साफ-साफ और ठीक-ठीक पहुँचा देता है, उस एक क्षण में जब कि उसका संतरी नीचे जाता है और उसकी जगह पर दूसरा संतरी सीढ़ी चढकर ऊपर आता है, उस एक छोटे क्षण में। वह बड़ा चौकस आदमी है और कभी घबराता नही। जेल की

सैकड़ों चिट्ठियाँ उसके हाथ से आयी-गयी होंगी, लेकिन आज तक एक नही पकडी गयी, और न कभी किसी ने उस पर शक किया।

वह अपने सहज ज्ञान 'से जान जाता है कि कौन कठिनाई मे है, किसे वाहर की परिस्थिति के वारे मे चार शब्द सुनाकर हिम्मत बढाने की जरूरत है। वह जानता है कि किसे वह अपनी उन खास गम्भीर वात्सल्यपूर्ण आँखो से देखकर प्रोत्साहित कर सकता है, कब निराशा को हराने के लिए ताकत की जरूरत होती है। वह जानता है कि किसे हिस्से से ज्यादा एक रोल या एक बडा चमचा शोरवा देना चाहिए जिसमे भूख की सजा के अगले दौर का सामना करने के लिए उसके शरीर मे ताकत रहे। वह ये सब वातें अपने लम्बे और गहरे तजर्वे और कोमल भावनाओ के द्वारा जान जाता है —और फिर जो जरूरी होता है वह करता है।

यह है डैड स्कोरेपा। एक सैनिक, ताकतवर और निडर। एक असल इन्सान।

मैं तुम लोगो से, जो किसी दिन इसे पढ़ोगे, कहना चाहता हूँ कि स्कोरेपा सिर्फ एक इन्सान नही, वेहतरीन किस्म का ट्रस्टी है, जो उस काम को, जिसकी माँग अत्याचारी शासन उससे करता है, पीडितो की सेवा में बदल देता है। यहाँ पर सिर्फ एक डैड स्कोरेपा है लेकिन दूसरे इन्सानी साँचे के और लोग भी है जो इंकलाव को मदद पहुँचाते है और उतनी ही जितनी कि वह। मैं उन सबके, जो यहाँ पाक्राटस् मे है और पेचेक विल्डिग मे, स्केच खीचना चाहता था, लेकिन अफसोस है कि अब सिर्फ कुछ घंटे बचे हैं — जो कि बहुत थोडा है 'उस गाने के लिए जिसे गाने मे इतना थोडा सा समय लगता है लेकिन जिसके पीछे जीवन का इतिहास इतना लम्बा है।'

अब सिर्फ कुछ और नामो के लिए वक्त है (बहुतों मे से कुछ उदाहरण) जिन्हे याद करना चाहिए :

'रेनेक' — जोजेफ टेरिंग्ल बहुत सख्त, गर्म, कुर्बानियोवाला आदमी है जो पेचेक विल्डिग और उसके अन्दर सङ्घर्ष के बहुत से इतिहास के सङ्ग गुँथा हुआ है वैसे ही जैसे उसका नेकदिल लंगोटिया यार, जो वेरविदू।

डाक्टर मिलोश नेडवेड, खूबसूरत और शरीफ नौजवान जिसने हमारे कैदी साथियों की रोज मदद करने की कीमत ओसवाइकिम में अपनी जिन्दगी से चुकायी।

आर्नोस्ट लॉरेंज, जिसकी पत्नी इसलिए मार डाली गयी कि पति ने अपने साथियो के संग विश्वासघात करना मंजूर नहीं किया। उसने एक साल देर से मरना कबूल किया जिसमें कि वह अपने दोस्तों, नम्बर ४०० के ट्रस्टियों और उनके पूरे संघ को बचा सके।

आठवाँ अध्याय

इतिहास का एक टुकड़ा

९ जून १९४३

मेरी कोठरी के सामने एक पेटी टँगी है। मेरी पेटी। इस बात का चिह्न कि जल्दी ही मुझे भेजा जायगा। कभी रात को वे मुझे राइख ले जायँगे, मुकदमा चलाने के लिए — और फिर इसी तरह। मेरी जिन्दगी के आखिरी टुकड़े में से समय आखिरी कौर काट लेता है। पाक्राटस के चार सौ ग्यारह दिन आश्चर्यजनक तेजी से बीत गये है। अब और कितने दिन बाकी हैं। कैसे दिन ? और कहाँ बीतेंगे वे ?

जो भी हो, और कही शायद ही मुझे लिखने का मौका मिले। इसलिए यह मेरी आखिरी गवाही है। इतिहास का एक टुकडा जिसका प्रत्यक्षतः मैं ही अकेला जिन्दा गवाह हूँ।

फरवरी १९४१ में उन्होने चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी की पूरी केन्द्रीय समिति को गिरफ्तार कर लिया—और उनसे एक सीढी नीचे के तमाम नेताओं को जो हम लोगो के चले जाने पर मोर्चे की सँभाल करनेवाले थे। यह कैसे हुआ कि एक ऐसा जबर्दस्त पहाड यों अचानक हमारे सिर पर टूट पडा, अभी तक इसका रहस्य पूरी तरह नही खुल सका है। शायद किसी दिन खुलेगा, जब गेस्टापो के कमीसार पकडे जायँगे और उन्हे बोलने के लिए मजबूर किया जायगा। पेचेक बिल्डिग के एक ट्रस्टी की हैसियत से मैंने इस भेद को पाने की बहुत कोशिश की लेकिन बेकार। इसमे निश्चय ही किसी जासूस का हाथ है, और हमारी तरफ की बेहद लापरवाही तो है ही। दो साल तक सफलतापूर्वक छिपे-छिपे काम करने से साथियो की चौकसी जाती रही थी। हमारा गैरकानूनी संगठन हद से ज्यादा फैल गया; नये कार्यकर्ता बराबर लिये जा रहे थे — बहुत से ऐसे भी जिन्हे रोक रखना चाहिए था जिसमें कि अगर कुछ होता तो वे पहली टोली की जगह ले सकते। सेलों का हमारा जाल इतना उलझ गया कि उस पर किसी तरह का नियंत्रण रखना असम्भव हो गया। हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति पर जो हमला हुआ, स्पष्ट ही, बहुत पहले से और बहुत अच्छी तरह उसकी तैयारी की गयी थी और वह हुआ ठीक उस वक्त जब दुश्मन सोवियत संघ पर हमला करने जा रहा था।

पहले मुझे नही मालूम था कि हममे से कितने जाल मे फँस गये। पहले

[illegible] रहा कि अभी लोग [illegible] ह प्रतीक्षा बेकार थी। [illegible] बहुत बड़ी घटना हो गयी है और मुझे सिर्फ इस बात की प्रतीक्षा करते नही बैठे रहना चाहिए कि बाहर का कोई आदमी मुझसे संपर्क कायम करेगा। लिहाजा मैंने भीतर ही संपर्कों की खोज शुरू की, और दूसरों ने भी यही खोज शुरू की।

पहला सदस्य जो मुझे मिला हॉन्जा विसकोचिल था, मध्य बोहेमिया के इलाके का अध्यक्ष। उसमे पहल करने की शक्ति बहुत थी और अभी से उसके पास 'लाल अधिकार' का प्रकाशन पुनः जल्द से जल्द चालू करने के लिए कुछ सामग्री मौजूद थी जिसमें पार्टी बिना पत्र की न हो जाय। मैंने मुख्य संपादकीय लिखा, लेकिन फिर हम इस निश्चय पर पहुँचे कि सब सामग्री जिसका बाकी हिस्सा मैंने नही देखा था, 'मई पत्र' के नाम से छपे, 'लाल अधिकार' के नाम से नही। दूसरी पार्टियों ने भी नियमित संस्करणो की जगह ऐसे ही जब-तब छपनेवाले पत्र निकाले थे।

बाद के महीनों मे कुछ छापेमार कार्रवाई हुई। हमला जबर्दस्त था सही, चोट भी जबर्दस्त थी लेकिन उससे पार्टी मर नही सकती थी। सैकडो नये काम करनेवालो ने उन कामो को उठा लिया जिन्हें नेता अधूरा छोडकर चले गये थे, खेत रहे थे। उनके ताजे जोश और लगन की बदौलत पार्टी के बुनियादी संगठन मे कोई गडबड़ी नही आने पायी और न पस्तहिम्मती या निष्क्रियता ही घर करने पायी। लेकिन सञ्चालन करनेवाली केन्द्रीय शक्ति न थी और छापेमार दलों के काम में डर इस बात का था कि ठीक उस समय जब कि ऐक्यबद्ध, दृढ, संगठित नेतृत्व की आवश्यकता होगी, उस वक्त यह नेतृत्व न मिलेगा—उस वक्त जब कि दुश्मन सोवियत रूस पर हमला करेगा।

मैंने 'लाल अधिकार' की एक प्रति मे किसी अनुभवी राजनीतिक कार्यकर्ता का हाथ देखा। उसे किसी छापेमार सेल ने प्रकाशित किया था। मुझे कहते हुए अफसोस हो रहा है कि मई पत्र का हमारा एक अंक जो निकला था वह कुछ बहुत सफल न था; लेकिन दूसरो ने उसमे इस बात का प्रमाण तो पाया कि सहयोग करने के लिए और भी कोई है। लिहाजा हम दोनो दल एक दूसरे से संपर्क कायम करने की कोशिश मे लग गये।

यह वैसा ही था जैसे कोई किसी को एक बहुत घने जंगल में ढूँढे। हमें एक आवाज सुनायी देती और हम उसकी तलाश मे निकल जाते। तब ठीक आवाज बहुत धीमे मे एक बिलकुल दूसरी दिशा से आती सुनायी देती। हमको जो भीषण क्षति हुई थी उससे अब पार्टी में सब लोग अत्यन्त सतर्क और खूब चौकन्ने थे कि कहीं किसी जाल में न जा फँसें। पहली केन्द्रीय समिति के दो

सदस्य जो एक दूसरे को खोज रहे थे उन्हें बहुत से इम्तहान पास करने पड़े और बहुत-सी रुकावटें रास्ते से अलग करनी पड़ीं — जो सब उन लोगों की लगायी हुई थीं जिन पर उन्हें विश्वास था और जिन्होंने वह चीज़ इस बात का पक्का इत्मीनान करने के लिए की थी कि उनमें से कोई धोखा तो नहीं खेल रहा है। मेरे रास्ते में सबसे बड़ी अड़चन यह थी कि मैं नहीं जानता था मैं किसे ढूंढ रहा हूँ — और न वही जानता था कि केन्द्रीय समिति का कौन सदस्य उससे मिलने की कोशिश कर रहा है।

आखिरकार हमें एक आदमी मिला जो हम दोनों को जानता था और हम दोनों की गारंटी ले सकता था। वह एक बहुत अच्छा सा नौजवान आदमी था, डाक्टर मिलोश नेडवेड, जो हमारा पहला संदेशवाहक बना। वह मुझे बिलकुल अकस्मात् मिल गया। जून १९४१ के दूसरे हफ्ते में मैं बीमार पड़ा और मैंने लिडा को डाक्टर नेडवेड को ढूंढ़कर बावसा के घर लाने के लिए कहा जहाँ कि मैं छिपा हुआ था। वह फौरन आया और हमारी बातचीत में उसने बहुत डरते-डरते मुझे बतलाया कि उससे उस आदमी का पता लगाने के लिए कहा गया है जिसने मई पत्र का यह सम्पादकीय लिखा था। उसे इस बात का सपने में भी गुमान न था कि वह आदमी मैं हूँ क्योंकि उधर के तमाम लोगों को इस बात का यकीन था कि मैं पकड़ा गया और शायद खत्म कर दिया गया।

हिटलर ने २२ जून १९४१ को सोवियत रूस पर हमला किया। उसी शाम हॉन्ज़ा विस्कोचिल और मैंने एक पर्चा निकाल कर बतलाया कि चेकोस्लोवाकिया के लिए उसका क्या मतलब है। ३० जून को आखिरकार मेरी मुलाकात उस आदमी से हुई जिसे मैं इतने दिनों से ढूंढ रहा था। वह मेरे दिये हुए पते पर आया क्योंकि वह जानता था कि वह किससे मिलने जा रहा है। मैं अब तक नहीं जानता था कि वह कौन है। ग्रीष्म की रात थी, हवा एकेशिया के फूलों की खुशबू से तर — सचमुच प्रेमी-प्रेमिका के अभिसार की रात। हममें से कोई बोले, इसके पहले हमने खिड़की पर पर्दा गिरा दिया। फिर मैंने रोशनी जलायी और हम दोनों गले मिले। वह हॉन्ज़ा ज़ीका था।

फरवरी १९४१ में पूरी केन्द्रीय समिति नहीं पकड़ी गयी थी। एक अकेला सदस्य अब भी बाकी था — ज़ीका। यों तो मैं उसे बहुत दिनों से जानता था और बहुत चाहता था। लेकिन हम लोगों ने एक दूसरे को अच्छी तरह जाना अब जब संग काम शुरू किया। वह छोटा-सा, गोलमटोल आदमी था, सदा मुसकराता रहता, बहुत अच्छा मज़ाकिया आदमी लेकिन पार्टी के काम में बड़ा दृढ़व्रती, कठोर और क्षमाहीन। जो काम उसे करना है उसके सिवा वह कुछ न जानता न जानना चाहता। अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए उसने अपने सारे सुख-ऐश्वर्य से मुँह मोड़ लिया था। वह जनता को प्यार करता था

और जनता उसे प्यार करती थी। लेकिन किसी की गलती को आंख की ओट करके उसने कभी किसी को अपना नहीं बनाया।

कुछ ही मिनटों में हम लोगों ने बातें तय कर ली। और कुछ ही दिनों मे मेरी मुलाकात, नयी केन्द्रीय समिति के एक तीसरे आदमी से हुई जिसके सपर्क मे जीका मई के महीने से था, हॉन्ज़ा चेर्नी। वह बहुत ही ज़ोरदार आदमी था, जनता की तरफ उसका रुख बहुत ही अच्छा था। वह स्पेन में लडा था, फिर युद्ध शुरू होने पर फेफडे मे घाव लिये नात्सी जर्मनी पार करके वह देश लौटा था। वह सदा एक सैनिक ही रहा — योग्य, अंडरग्राउड काम का अच्छा तजुर्बेकार और हमेशा पहल करनेवाला।

महीनो के कठिन संघर्ष ने हमको बहुत अच्छा कामरेड बना दिया। अपने स्वभाव और अपनी विशेष शिक्षा-दीक्षा से हम एक दूसरे के पूरक थे। ज़ीका था संगठनकर्ता, यथार्थवादी, छोटी से छोटी बात पर अडनेवाला, इतना दृढ कि चिढ होती, और वह कभी लम्बी-चौड़ी बातों के जाल में न फँसता। वह हर रिपोर्ट की गहरी से गहरी छानबीन करता। जब तक कि उसका पूरा महत्व उसकी समझ में न आ जाता, हर प्रस्ताव को हर संभव दिशा मे जांचता और तब दल के हर निर्णय को सहानुभूतिपूर्वक लेकिन दृढ़ता से पूरा करता।

चेर्नी के जिम्मे तोड़फोड़ और सशस्त्र विद्रोह की तैयारियों का काम था। वह फौजी भाषा में सोचता, उसकी आविष्कार-बुद्धि तेज थी, वह बहुत व्यापक रूप मे, बड़े पैमाने पर योजना बनाता, अनथक परिश्रम करता और नये लोगों और नये साधनो की खोज मे उसे सदा सफलता मिलती।

मैं था पत्रकार, राजनीतिक आदोलनकारी, अपनी सूँघने की शक्ति पर विश्वास करनेवाला। कभी कुछ विचित्र-सी बातें कहता, संतुलन और एकता पर बेहद जोर देता।

हमने एक-एक के जिम्मे ये जो काम बाँटे थे, यह असल मे जिम्मेदारियाँ बाँटी थीं, काम नही। सदा मिलना और सलाह-मशविरा करना कठिन था इसलिए स्वतन्त्र कार्य या निश्चय करने की जरूरत पड़ने पर हम सभी एक दूसरे के विभाग का काम करते और उसका उत्तरदायित्व भी अपने ऊपर लेते। फरवरी के महीने मे पार्टी पर जो हमला हुआ उसने हमारे सारे संपर्क-सूत्र छिन्न-भिन्न कर दिये, और उन्हे कभी पूरी तरह ठीक नही किया जा सका। किसी-किसी क्षेत्र मे संगठन आमूल नष्ट कर दिया गया था; दूसरे तैयार हुए थे लेकिन उनसे संपर्क कायम करना नामुमकिन साबित हुआ। इसके पहले कि हम उनसे कोई संबंध स्थापित कर सकते, बहुत से कारखानों के सेल, कही-कही तमाम जिले और इलाके के संगठन, महीनों अलग-अलग कार्य करते रहे। हम ज्यादा से ज्यादा उम्मीद यह कर सकते थे कि हमारा

लेकिन यहं तो हर चोट के बाद मैं पता लगता था कि पार्टी कैसी अमर है । कोई कार्यकर्ता अगर मारा जाता तो पहले तो चाहे ऐसा लगता कि कोई उसकी जगह कैसे भर सकेगा, लेकिन उसकी जगह लेने के लिए दो या तीन आ जरूर जाते । नया साल आते-आते फिर हमारा एक मजबूत सगठन खडा हो गया । फरवरी १६४१ के संगठन की तरह व्यापक वह नही था, इसमे सदेह नही, लेकिन तो भी दुश्मन की चुनौती कबूल करने की उसमें पूरी ताकत थी, किस्मत का फैसला करनेवाली लडाई की चुनौती । उस काम मे हम सभी लोगो का हाथ था, लेकिन उसका मुख्य श्रेय हॉन्ज़ा ज़ीका को जाता है ।

हमारे प्रकाशन-कार्य के प्रमाण कमरों में, तहखानो मे, साथियो की गुप्त फाइलो में मिलेंगे, इसलिए उसके बारे मे यहाँ बात करना व्यर्थ है ।

हमारे अखबार बहुत बिकते थे और बहुत पढे जाते थे ; केवल पार्टी के सदस्य ही नही देश भर के लोग उन्हे पढते थे । वे या तो प्रेस मे छापे जाते थे या साइक्लोस्टाइल पर । कई 'टेकनिकल केन्द्रो' से जो सब एक दूसरे से गुप्त और बिलकुल अलग थे, वे काफी बड़ी संख्या मे प्रकाशित होते । प्रकाशन का काम करनेवाली कोई टोली यह नहीं जानती थी कि दूसरी टोली मे कौन काम करता है या वह कहाँ काम करती है । यह भी कोई नही जानता था कि उनके आदेश आदि और लेख कहाँ से आते है । लड़ाई की परिस्थिति के अनुसार जितना तेज काम करना आदमी के लिए मुमकिन था, वे उतना तेज काम करते । उदाहरण के लिए हमने कामरेड स्तालिन का २३ फरवरी १६४२ का फौजी हुक्मनामा छापा और २४ की शाम को अपने पाठको के हाथ मे पहुँचा दिया । छापनेवाले साथियो ने बहुत अच्छा काम किया, वैसे ही जैसे डाक्टरो की टेकनिकल टुकडी ने और फुक्स-लॉरेन्ज नाम की संस्था ने, जो अपना एक पर्चा निकालती थी जिसका नाम था 'दुनिया हिटलर के खिलाफ' । दूसरे पर्चों का ज्यादातर मसाला मैं खुद तैयार करता था, जिसमें दूसरे खतरे मे न पड़ें । मेरे न रहने पर मेरी जगह लेनेवाला बहुत पहले ही तैयार कर लिया गया था । मेरे पकड़े जाते ही उसने फौरन काम सँभाल लिया, और अब भी कर रहा है ।

काम के लिए जितना आसान से आसान ढाँचा हम खडा कर सकते थे वह हमने खड़ा किया, जिसमे किसी भी काम मे कम से कम लोग फँसें । हमने खबरें लाने ले जाने के उस पेचीदा सिलसिले को खतम कर दिया, जो फरवरी १६४१ मे हमारी केन्द्रीय समिति को बचा भी न सका, उल्टे विश्वासघात के खतरे को जिसने और बढा दिया । इससे हम सब लोग निजी तौर पर तो ज्यादा खतरे में पड़ गये, लेकिन पार्टी की मशीन अधिक सुरक्षित हो गयी । भविष्य में अगर पार्टी को कोई गहरी चोट लगी भी तो वह उसे अपंग न

कर सकेगी, जैसा कि फरवरी में हुआ।

इसोलिए जब मैं पकड़ा गया तो केन्द्रीय समिति पूर्ववत् कार्य करती रही। मेरी जगह लेनेवाला आदमी मेरी जगह पर पहुँच गया और मेरे निकटतम सहयोगियों को भी अन्तर नही पता चला।

हॉन्ज़ा ज़ीका २७ मई १६४२ की रात को पकड़ा गया। वह भी बिलकुल अकस्मात्। वह हेड्रिक की हत्या के बाद की पहली रात थी, जब दुश्मन की सारी ताकतें तमाम प्राग मे छापे मार रही थी। वे स्ट्रेशोविस के मकान मे, जहाँ ज़ीका छुपकर रहता था, घुस गये। उसके कागज-पत्तर सब झूठे नाम से बने-बनाये अपनी जगह पर बिलकुल दुरुस्त थे और अगर उसने वह हरकत न की होती तो मुमकिन था उन्हें कुछ पता भी न चलता। लेकिन चूँकि वह उस नेक परिवार के लोगों की जान खतरे में नही डालना चाहता था जिन्होंने उसे शरण दी थी, चुनाँचे उसने दूसरी मंजिल की एक खिड़की से कूदकर भागने की कोशिश की। वह गिरा, उसकी रीढ़ की हड्डी में सख्त चोट आयी और उसे जेल के अस्पताल ले जाया गया। अठारह दिन की तलाशी और फोटो की फाइलो के मिलान के बाद वे साबित कर सके कि वह कौन है और तब वे उसे उस मरती हुई हालत मे यातनाएँ देने के लिए पेचेक बिल्डिंग ले गये। वहाँ उससे मेरी आखिरी मुलाकात हुई। जब वे लोग मुझे उसके पास ले गये, हम लोगो से हाथ मिलाया और हवा मे जैसे किरणें बिखेरता हुआ वह मुसकराया, अपनी खुली हुई, बेबाक, मुहब्बत की मुसकराहट। और कहा :

'अपनी फिक्र करना, जूलो!'

उसके मुँह से बस इतनी बात वे सुन सके। उसने एक शब्द और नही कहा। मुँह पर कुछ चोटें खाने के बाद वह बेहोश हो गया और दो घंटे मे मर गया।

मुझे उसकी गिरफ्तारी की खबर २९ मई को लगी थी। बाहर के लोग से हमारे संपर्क के माध्यम अच्छी तरह काम कर रहे थे। उनके जरिये हमने अपने अगले कदम, जहाँ तक सम्भव था, तय कर लिये थे। बाद में हॉन्ज़ा चेर्नी ने भी उनकी ताईद की। वह हमारा आखिरी निश्चय था जो हमने सङ्ग-सङ्ग पार्टी की ओर से लिया था।

हॉन्ज़ा चेर्नी १६४२ के ग्रीष्म मे पकड़ा गया। लेकिन इस बार अकस्मात् नही, जान पोकोर्नी द्वारा भयंकर अनुशासन-भङ्ग के कारण, जान पोकोर्नी जिसका सीधा सम्बन्ध हॉन्ज़ा से था। पोकोर्नी ने टोली के एक जिम्मेवार कार्यकर्ता की तरह आचरण नहीं किया। कई घंटे की यातनाओं के बाद काफी कठोर यातनाएँ, इसमे सन्देह नहीं, मगर उसने क्या गुलगुले ५।

उम्मीद की थी — कई घंटे की यातनाओ के बाद वह घबरा उठा और उसने उनको उस मकान का पता बता दिया जहाँ वह चेर्नी से मिला था। वहाँ से उन्होने हॉन्ज़ा का पता लगाना शुरू किया और कुछ दिन बाद वह गेस्टापो के हाथ आ गया।

जैसे ही वे उसे अन्दर ले आये, वे मुझे घसीटकर ले गये कि मैं उसे पहचानूँ।

'तुम इसे जानते हो ?'

'नही, मै नही जानता।'

न उसने ही माना कि वह मुझे जानता है। इसके बाद उसने किसी भी सवाल का जवाब देने से साफ इन्कार कर दिया। उसके पुराने जख्मो ने लम्बी यातना से उसकी रक्षा की। वह जल्दी ही बेहोश हो गया। वे लोग उसे दूसरी बार यातना के लिए ले जायें, इसके पहिले ही हमने उसे अच्छी तरह परिस्थिति समझा दी और उसने उसी के अनुसार कार्य किया।

वे उसके मुँह से कोई बात नही निकलवा सके। उन्होने उसे बहुत दिन तक जेल मे रक्खा, इस इंतजार मे कि उन्हे कुछ और नयी गवाही मिले तो वे उसका मौन तोडें। मगर वे हॉन्ज़ा चेर्नी को तोड नही सके।

कैद ने उसमे कोई परिवर्तन नही किया। वह सदा साहसी, तत्पर और प्रसन्न रहा — दूसरों को भविष्य की ओर इशारा करता हुआ जब कि स्वयं उसके भविष्य का इशारा सीधे मौत की तरफ था।

अप्रैल के अन्त मे वे उसे अचानक पांक्राट्स से ले गये। पता नही कहाँ। यहाँ पर लोगो के इस तरह से अचानक गायब हो जाने का मतलब बुरा होता है। मुमकिन है कि मेरा खयाल गलत हो, लेकिन मुझे अब उम्मीद नही है कि मैं फिर हॉन्ज़ा चेर्नी को देखूंगा।

हम सदा मौत को मानकर चलते थे। हम जानते थे कि गेस्टापो के हाथ मे पड़ने का मतलब अन्त है। और हमने पकड़े जाने के बाद भी उसी के अनुसार आचरण किया, अपने अन्त.करण में भी और दूसरो के संग अपने संबंधों मे भी।

स्वयं मेरे नाटक का अन्त अब पास है। मैं वह अन्त नही लिख सकता क्योकि मैं अभी नही जानता वह क्या होगा। और अब यह नाटक नही है, जिन्दगी है।

असलियत की जिन्दगी में तमाशा देखनेवाले नही होते — तुम सब उसमें हिस्सा लेते हो। अब नाटक के अन्तिम अंक पर पर्दा उठता है। मैं तुम सब को प्यार करता था, दोस्तो। होशियार !

९ जून १९४३ —जूलियस फूचिक